राष्ट्रीय दैनिक

प्रात:किरण

दिल्ली एवं पटना से प्रकाशित

हर खबर पर पकड़

/Pratahkiran /Pratahkiran /Pratahkiran

12 संकटः मुस्लिम देशों का नेता बनने के चक्कर में ईरान की डगमगा गई विदेश नीति.....

रोहित-कोहली का भविष्य तय करेगी चैपियंस ट्रॉफी..... 11

वर्ष : 12 | अंक : 270 | पटना, सोमवार, 13 जनवरी, 2025 | विक्रम संवत् 2081 | पेज : 12 | मूल्य ₹ : 03.00 | www.pratahkiran.com

युवा शक्ति का सामर्थ्य ही भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा : मोदी

प्रधानमंत्री ने विकसित भारत युवा नेता संवाद 2025 को किया संबोधित

नई दिल्ली/एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को कहा कि देश के नौजवानों के साथ उनका ह्यपरम मित्रह्ल वाला नाता है और साथ ही विश्वास जताया कि युवा शक्ति का सामर्थ्य ही भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा। ह्यविकसित भारत युवा नेता संवाद 2025ह्ल को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने यह भी कहा कि बड़े सपने देखना, एक मजबूत प्रतिबद्धता बनाना और एक निर्धारित समयसीमा के भीतर उन सपनों को प्राप्त करना पूरी तरह से संभव है। उन्होंने कहा, किसी भी देश की प्रगति के लिए, उसे महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। एक लक्ष्य के बिना जीवन अकल्पनीय है! लक्ष्य हमें उद्देश्य और प्रेरणा प्रदान करते हैं। जब हम महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित करते हैं, तो हम उन्हें पूरा करने के लिए अथक प्रयास करते हैं। आज भारत इसी भावना को मूर्त रूप दे रहा है। मोदी ने कहा कि विकसित भारत यानी जो आर्थिक, सामरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से सशक्त होगा, जहां अर्थव्यवस्था भी बुलंद होगी और पारिस्थितिकी भी समृद्ध होगी। उन्होंने कहा, जहां अच्छी कमाई और पढ़ाई के ज्यादा से ज्यादा अवसर होंगे। जहां दुनिया की सबसे बड़ी युवा आबादी कौशल से लैस होगी। जहां युवाओं के पास अपने सपने पूरा करने के लिए खुला आसमान होगा। प्रधानमंत्री ने इस कार्यक्रम में 30 लाख से अधिक प्रतिभागियों में से योग्यता-आधारित, बहु-स्तरीय चयन प्रक्रिया के माध्यम से चुने गए 3,000 युवाओं के साथ संवाद भी किया। स्वामी विवेकानंद का जन्म 12 जनवरी 1863 को कोलकाता में हुआ था। उनके जन्मदिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। प्रधानमंत्री ने कहा कि उनका देश के नौजवानों के साथ ह्यपरम मित्रह्ल वाला नाता है और मित्रता की सबसे मजबूत कड़ी होती है ह्यविश्वास। उन्होंने कहा, ह्यह्यमुझे आप पर बहुत विश्वास है और इसी विश्वास ने मुझे ह्यमाय भारतह्ल के गठन की प्रेरणा दी। इसी विश्वास ने विकसित भारत युवा नेता संवाद का आधार बनाया। मेरा विश्वास कहता है कि युवा शक्ति का सामर्थ्य भारत को जल्द से जल्द विकसित राष्ट्र बनाएगा। प्रधानमंत्री ने कहा, ह्यह्यजो आंकड़ों का जोड़ भाग करते रहते हैं, उनको लगता होगा कि यह सब बहुत मुश्किल है लेकिन मेरी आत्मा कहती है, आप सबके भरोसे से कहती है- लक्ष्य बड़ा जरूर है लेकिन असंभव नहीं है। उन्होंने कहा, ह्यह्यजब करोड़ों युवाओं की भुजाएं विकास रथ के पहिए को आगे बढ़ा रही हैं, तब हम जरूर लक्ष्य पर पहुंचेंगे। प्रधानमंत्री ने कहा, आज अगर स्वामी विवेकानंद सशरीर हमारे बीच होते तो 21वीं सदी के युवा की इस जागृत शक्ति को देखकर और आपके सक्रिय प्रयासों को देखकर वह भारत में एक नया विश्वास भर देते, एक नई ऊर्जा भर देते और नए सपनों के बीज बो देते।

संक्षिप्त खबरें

स्कूलों में तीन दिन और बढ़ाई गई छुट्टियां

पटना। बढ़ते ठंड को देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा स्कूलों की छुट्टियां बढ़ाने का फैसला लिया गया है। स्कूलों में तीन दिनों के लिए छुट्टियां बढ़ाई गई है। रविवार को पटना के जिलाधिकारी ने ने तीन दिनों के लिए आठवीं तक की छुट्टी बढ़ाने का फैसला लिया है। फिलहाल तीन दिनों के लिए ठंड के कारण छुट्टी बढ़ाने का फैसला हो गया है। पटना के जिलाधिकारी डॉ. चंद्रशेखर सिंह कहा कि अवकाश का जो आदेश पहले से था, उसे 13, 14 और 15 जनवरी के लिए लागू किया जा रहा है। यानि आठवीं तक की कक्षाएं 15 जनवरी तक के लिए बंद रहेंगी। नवीं और दसवीं के छात्र-छात्राओं के लिए स्कूलों का परिचालन पहले बताए गए समय के हिसाब से होता रहेगा। निजी और सरकारी विद्यालयों के लिए यह आदेश पटना जिलाधिकारी के अनुसार, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता की धारा 163 के तहत जिले के सभी निजी और सरकारी विद्यालयों (प्री स्कूल एवं आंगनबाड़ी केंद्र सहित) में आठवीं तक की कक्षाएं बंद रहेंगी, जबकि कक्षा नौ और इससे ऊपर पठन-पाठन का काम सुबह नौ बजे के बाद और अपराह्न साढ़े तीन बजे के पहले तक ही किया जा सकेगा। उन्होंने विद्यालय प्रबंधन को आदेश जारी करते हुए कहा कि इस आदेश के अनुरूप शैक्षणिक गतिविधियों को पुनर्निर्धारित करें। वहीं प्री बोर्ड या बोर्ड की परीक्षा के लिए संचालित किए जाने वाली विशेष कक्षाओं या परीक्षाओं का संचालन इससे मुक्त रहेगा।

मकर संक्रांति पर गंगा नदी में नहीं चलेगी नाव

पटना। मकर संक्रांति के मौके पर गंगा नदी में जुटनेवाली भीड़ को देखते हुए जिला प्रशासन ने नावों के परिचालन पर रोक लगा दी है। हालांकि यह आदेश सरकारी कार्यों में लगे नावों पर लागू नहीं होगा। मामले में आदेश का उल्लंघन करनेवालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। नदी घाटों पर आठ एसडीआरएफ टीम करेगी ड्यूटी जिला प्रशासन द्वारा सार्वजनिक स्थलों पर भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा एवं विधि-व्यवस्था के निर्धारित मानकों के अनुसार दण्डाधिकारियों, पुलिस पदाधिकारियों, स्पेशल मोबाईल टीम तथा रिवर पेट्रोलिंग टीम को प्रतिनियुक्त किया गया है। विभिन्न अनुमंडलों में स्थित नदी घाटों को कई सेक्टर में विभाजित कर 2-2 मोटर बोट एवं अन्य आवश्यक संसाधनों सहित गोताखोरों एवं जवानों के साथ एसडीआरएफ टीम को तैनात किया गया है। सभी अंचल अधिकारियों को अपने-अपने क्षेत्रान्तर्गत नदियों एवं तालाबों के घाटों पर लाइफ जैकेट एवं अन्य सभी संसाधनों के साथ नावों, नाविकों एवं गोताखोरों को तैनात रखने का निर्देश दिया गया है। अनुमंडल पदाधिकारियों तथा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारियों को सतत भ्रमणशील रहकर स्थिति पर नजर रखने का निदेश दिया गया है।

प्रगति यात्रा : सीएम ने मधुबनी जिले को दी 1107 करोड़ रुपये की सौगात

बच्चों में सीखने की कला विकसित करें : नीतीश

139 योजनाओं का उद्घाटन, कायार्रंभ एवं शिलान्यास

प्रात: किरण

पटना। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने रविवार को प्रगति यात्रा के क्रम में मधुबनी जिले को 1107 करोड़ रुपये से अधिक की सौगात दी। इस दौरान मुख्यमंत्री ने 139 विकासात्मक योजनाओं का रिमोट के माध्यम से उद्घाटन, कायार्रंभ एवं शिलान्यास किया। प्रगति यात्रा के क्रम में मधुबनी जिला के प्रखंड खुटौना स्थित ग्राम दुर्गीपट्टी पहुंचे मुख्यमंत्री ने सबसे पहले अमर शहीद रामफल मंडल की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने मधुबनी जिला अंतर्गत खुटौना प्रखंड के ग्राम दुर्गीपट्टी के वार्ड संख्या-14 में सक्षम आंगनबाड़ी केंद्र का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में मुख्यमंत्री ने आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चों एवं शिक्षिकाओं से बातचीत कर मिल रही सुविधाओं की जानकारी ली। इस दौरान आंगनबाड़ी केंद्र के बच्चे एवं शिक्षिकाओं ने मुख्यमंत्री का अभिवादन किया। मुख्यमंत्री ने कहा कि बच्चों को ठीक से पढ़ाएं। साथ ही इनमें सीखने की कला विकसित करें। इस प्रकार से बच्चों को पढ़ाएं कि उनकी पढ़ाई में रूचि बढ़े ताकि वे बड़े होकर एक बेहतर नागरिक बन सकें। यही हमारी भावी पीढ़ी है जो राज्य और देश के भविष्य हैं।

ग्राम दुर्गीपट्टी में जीविका दीदियों एवं विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉल का मुख्यमंत्री ने अवलोकन किया। अवलोकन के क्रम में मुख्यमंत्री ने मधुबनी जिले में अभियान बसेरा-2 के अंतर्गत कुल 926 बास भूमि विहीन परिवारों के बीच पर्चा एवं नवनियुक्त अमीनों को नियुक्ति पत्र वितरित किया। मुख्यमंत्री नारी शक्ति योजना का सांकेतिक चेक, मुख्यमंत्री कन्या उत्थान योजना का सांकेतिक चेक, स्वस्थता पत्र, 23 हजार 861 जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 1 लाख 43 हजार 166 जीविका दीदियों को बैंक लिंकेज के द्वारा आर्थिक सहयोग हेतु 260 करोड़ रुपये का सांकेतिक चेक, 5 हजार 670 जीविका स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी 28 हजार 350 जीविका दीदियों को सामुदायिक निवेश निधि के तहत 56 करोड़ 70 लाख रुपये का सांकेतिक चेक, 2875 सतत जीविकोपार्जन योजना की लाभार्थी दीदियों को आर्थिक सहयोग हेतु 11 करोड़ 50 लाख रुपये का सांकेतिक चेक, दिव्यांगजनों को ट्राई साइकिल की चाबी, सतत जीविकोपार्जन योजना अंतर्गत ई-रिक्शा की चाबी मुख्यमंत्री ने लाभुकों को प्रदान किया। स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी हुई : मुख्यमंत्री ने स्टॉल निरीक्षण के क्रम में जीविका दीदियों से बातचीत की। उन्होंने कहा कि आप सभी बहुत अच्छा काम कर रही हैं। मैं आप सभी को बधाई देता हूं। जब हम सांसद थे और केंद्र में मंत्री थे तब विभिन्न जगहों पर जाकर हमने स्वयं सहायता समूहों के कामों को देखा था। बिहार में स्वयं सहायता समूहों की संख्या काफी कम थी। वर्ष 2005 में जब हमलोगों को बिहार में काम करने का मौका मिला, उसके बाद वर्ष 2006 में विश्व बैंक से कर्ज लेकर स्वयं सहायता समूहों की संख्या बढ़ानी शुरू की। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाओं को 'जीविका दीदी' नाम हमने ही दिया। हमलोगों के काम से प्रेरित होकर उस समय की केंद्र सरकार ने इसका नाम 'आजीविका' दिया। हम जहां भी जाते हैं जीविका दीदियों से जरूर मिलते हैं। उनकी बातों को सुनते हैं और यदि उनकी कोई मांग या समस्यारहती है तो मौके पर मौजूद अधिकारी उन समस्याओं का समाधान भी करते हैं। स्वयं सहायता समूहों से जुड़कर महिलाओं की स्थिति काफी अच्छी हुई है। वे तरह-तरह के व्यवसाय से जुड़ी हैं, जिससे उनकी अच्छी आमदनी हो रही है।

राजकीय मध्य विद्यालय दुर्गीपट्टी के प्रांगण में मुख्यमंत्री ने रिमोट के माध्यम से विकासात्मक योजनाओं का उद्घाटन किया। इनमें उत्क्रमित मध्य विद्यालय में छत वर्षा जल संचय का निर्माण कार्य, सरकारी तालाब का सौंदर्गीकरण, सरकारी तालाब के पास मनरेगा पार्क का निर्माण कार्य, ग्राम पंचायत दुर्गीपट्टी में मुख्य सड़क से लेकर जल नल के किनारे तक मिट्टी, खरंजा एवं पीसीसी सड़क का निर्माण कार्य, लोहिया स्वच्छ बिहार अभियान के तहत अपशिष्ट प्रसंस्करण इकाई का निर्माण कार्य तथा उत्क्रमित मध्य विद्यालय की छत पर सौर ऊर्जा हेतु 10 किलोवाट का सोलर प्लेट का अधिस्ठापन कार्य शामिल है। उद्घाटन के पश्चात मुख्यमंत्री ने जल-जीवन-हरियाली अभियान के तहत सौंदर्गीकृत कराए गए अमृत सरोवर, दुर्गीपट्टी का निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में अधिकारियों को निर्देश देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि इस सरोवर के चारो तरफ सीढ़ीनुमा घाट का निर्माण कराएं। वर्ष 2019 में जल-जीवन-हरियाली अभियान की शुरूआत कर हमलोगों ने सभी सार्वजनिक कुओं और पोखरों आदि का जीर्णोद्धार एवं सौंदर्गीकरण का काम प्रारंभ कराया था। इस सरोवर के चारो तरफ पाथ-वे का निर्माण कराया गया है। सरोवर के आसपास सघन वृक्षारोपण भी किया गया है। इसके चारो तरफ जब सीढ़ीनुमा घाट का निर्माण हो जाएगा तो यहां का दृश्य और भी सुंदर दिखेगा।

बाढ़ न्यूनीकरण की प्रस्तावित योजना का अवलोकन किया : मुख्यमंत्री सुक्की गांव स्थित निरीक्षण स्थल पर पहुंचकर पुरानी कमला धार, जीवछ नदी, जीवछ कमला, पुरानी कमला नदी आदि को पुनर्जीवित करने एवं इससे सिंचाई बढ़ाने तथा बाढ़ न्यूनीकरण की प्रस्तावित योजना का अवलोकन किया। इस दौरान अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को बताया कि इस प्रस्तावित योजना से कमला बलान नदी के अत्यधिक पानी को सुखाड़ वाले इलाके में पहुँचाना है और बाढ़ अवधि में कमला बलान तटबंध के दबाव को कम करना है। साथ ही बाढ़ अवधि के समय नदी में आये अत्यधिक पानी को डायवर्ट कर बाढ़ के प्रतिकूल प्रभाव से जनजीवन को प्रभावित होने से बचाना भी है। इस योजना का उद्देश्य है कि सूखाग्रस्त इलाके में पानी पहुँचाकर खेती योग्य भूमि को अत्यधिक उपजाऊ बनाना है। इस योजना के पूर्ण होने से लगभग 10 हजार हेक्टेयर में किसानों को सिंचाई की सुविधा उपलब्ध होगी। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में जल की उपलब्धता के कारण जलीय उत्पाद मखाना आदि के पैदावार में बढ़ोत्तरी होगी। इससे किसानों की आमदनी बढ़ेगी और मधुबनी एवं दरभंगा जिले के ग्राउंड वाटर टेबल के रिचार्ज में भी लाभ होगा। इस योजना की प्राक्कलित राशि 358.20 करोड़ रुपये है। इससे मधुबनी एवं दरभंगा जिले के 92 गांव लाभान्वित होंगे।

सुगरवे नदी पर नदी तट विकास कार्यों का उद्घाटन

मुख्यमंत्री ने झंझारपुर प्रखंड के अररिया संग्राम ग्राम के समीप सुगरवे बियर रिवरफ्रंट का फीता काटकर उद्घाटन किया। इस दौरान मुख्यमंत्री ने सुगरवे नदी पर 1396.11 लाख रुपये की नदी तट विकास एवं सुरक्षात्मक कार्यों का शिलापट्ट अनावरण कर उद्घाटन किया। मुख्यमंत्री ने सुगरवे बियर रिवर फ्रंट का निरीक्षण भी किया। इस दौरान उन्होंने कहा कि यह बहुत अच्छा बना है। यहां का दृश्य काफी अच्छा लग रहा है। लोगों को यहां घूमने और शाम के वक्त बैठने में अच्छी अनुभूति होगी। साथ ही इसके किनारे व्रतियों को छठ महापर्व करने में भी सहूलियत होगी। मुख्यमंत्री ने सुगरवे बियर रिवर फ्रंट स्थल से ही मधुबनी जिले की विभिन्न योजनाओं का उद्घाटन एवं शिलान्यास किया। इसके पश्चात मुख्यमंत्री एनएच 57 के पश्चिमी कोसी नहर के अंतिम छोर बिदेश्वर स्थान पर स्थित नहर के विस्तारीकरण हेतु प्रस्तावित योजना का स्थल निरीक्षण किया। इस दौरान रेखाचित्र के माध्यम से अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को जानकारी देते हुए बताया कि उगनाद शाखा नहर का 33.63 कि०मी० लंबाई में एवं बिदेश्वर स्थान उप शाखा नहर का21.34 कि०मी० लंबाई में विस्तारीकरण की योजना है। इससे मधुबनी एवं दरभंगा जिले के 80 गांवों को फायदा होगा और 26 हजार 879 हेक्टेयर क्षेत्र सिंचाई के लिए लाभान्वित होगा। इस योजना की प्राक्कलित राशि 569.18 करोड़ रुपये है। स्थल निरीक्षण के दौरान मुख्यमंत्री ने कहा कि इससे दरभंगा एवं मधुबनी जिले के किसानों को सिंचाई में काफी सहूलियत होगी। साथ ही ग्रामीण क्षेत्र में जल की उपलब्धता बढ़ने से जलीय उत्पाद मखाना, सिंघाड़ा और मछली आदि के पैदावार में भी बढ़ोतरी होगी। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि नहर का निर्माण कार्य बेहतर ढंग से कराएं।

बिहार सहकारी बैंक जांच: ईडी ने चार व्यक्तियों को किया गिरफ्तार

पटना। प्रवर्तन निदेशालय ने राष्ट्रीय जनता दल विधायक द्वारा प्रवर्तित बिहार के एक सहकारी बैंक में धन के कथित गबन से जुड़े धनशोधन मामले की जांच के तहत एक पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी सहित चार व्यक्तियों को गिरफ्तार किया है। यह जानकारी आधिकारिक सूत्रों ने रविवार को दी। संघीय एजेंसी ने वैशाली शहरी विकास सहकारी बैंक में धन की कथित हेराफेरी की जांच के तहत 10 जनवरी को बिहार में उजियारपुर से राजद विधायक आलोक कुमार मेहता और उनसे कथित तौर पर जुड़े कुछ अन्य व्यक्तियों के परिसरों पर छापेमारी की थी। गिरफ्तार किए गए व्यक्तियों में बैंक के पूर्व सीईओ विपिन तिवारी, उनके ससुर राम बाबू शांडिल्य, नितिन मेहरा और संदीप सिंह शामिल हैं। सूत्रों ने बताया कि आरोपियों को यहां एक विशेष अदालत में पेश किया गया और न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। उन्होंने कहा कि राज्य के पूर्व राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री मेहता बैंक के प्रवर्तकों में से एक हैं और इसके अलावा कुछ अन्य संबंधित इकाइयां भी बैंक से जुड़ी हैं। धनशोधन की जांच बैंक और इसके पदाधिकारियों के खिलाफ लगभग 85 करोड़ रुपये के कथित गबन को लेकर राज्य पुलिस की ओर से दर्ज कुछ प्राथमिकियों से उपजी है। ईडी के एक अधिकारी के अनुसार, कथित धोखाधड़ी लगभग 400 ऋण खातों के माध्यम से की गई थी और धन का वितरण ह्यह्यफर्जीह्ल गोदाम रसीदों के आधार पर किया गया था। सूत्रों ने कहा कि छापेमारी अभियान के दायरे में बैंक के कर्मचारी और अन्य निजी व्यक्ति भी शामिल हैं, जो अपराध की आय के कथित लाभार्थी हैं और मेहता एवं उनके सहयोगियों के साथ मिलीभगत में काम करते थे। उन्होंने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंक का सत्यापन किया था और धन की कथित हेराफेरी का पता लगाया था। ईडी की कार्रवाई को लेकर राजद ने भाजपा के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार की आलोचना की है। इससे पहले, राजद प्रवक्ता (बिहार इकाई) मृत्युंजय तिवारी ने कहा, ह्यह्यभाजपा राजद और अन्य विपक्षी दलों के नेताओं के खिलाफ ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग का इस्तेमाल करती हैह्ल इससे पता चलता है कि दिल्ली में बैठे शासक राजद और उसके नेताओं से डरते हैं और इसीलिए वे हमारे नेताओं के खिलाफ केंद्रीय जांच एजेंसियों का इस्तेमाल कर रहे हैं।

बीजापुर मे मुठभेड़ में तीन नक्सली ढेर

प्रात: किरण

बीजापुर/एजेंसी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर जिले में मद्देड़ थाना क्षेत्र अंतर्गत बंदेपारा-कोरंजेड नेशनल पार्क एरिया में रविवार सुबह सुरक्षाबलों और नक्सलियों के बीच हुई मुठभेड़ में तीन वर्दीधारी नक्सलियों को जवानों ने ढेर कर दिया है। सर्चिंग में अब तक तीन वर्दीधारी नक्सलियों के शव बरामद हुए हैं। मारे गये नक्सलियों के शव के साथ मुठभेड़ स्थल से ऑटोमेटिक हथियार सहित अन्य हथियार एवं विस्फोटक पदार्थ व नक्सल सामाग्री बरामद हुआ है ' बस्तर आईजी सुंदरराज पी. ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए बताया कि मौके से तीन वर्दीधारी नक्सलियों का शव बरामद हुआ है, मारे गये नक्सलियों की पहचान की जा रही है। विस्तृत जानकारी अभियान पूरा होने के बाद पृथक से जारी की जाएगी। पुलिस के अनुसार जिले के नेशनल पार्क के जंगल में नक्सिलयों की उपस्थिति की आसूचना पर सुरक्षा बल की टीम नक्सल विरोधी सर्च अभियान में 11 जनवरी को अभियान पर रवाना हुई थी। सर्चिंग अभियान के दौरान नक्सलियों ने सुरक्षाबलों के जवानों को अपनी ओर बढ़ता देखकर फायरिंग शुरू कर दी। पुलिस की जवाबी कार्रवाई में तीन नक्सलियों को ढेर कर उनके शव बरामद कर लिए गये हैं, शव के साथ ऑटोमेटिक हथियार सहित अन्य हथियार एवं विस्फोटक पदार्थ व नक्सल सामाग्री भी बरामद किए गये हैं। मारे गये नक्सलियों की पहचान की जा रही है। बताया जा रहा है कि नेशनल पार्क एरिया कमेटी के नक्सलियों के साथ रविवार सुबह मुठभेड़ में कई नक्सलियों के मारे जाने की खबर है।

पांच हजार युवा नक्सलवाद छोड़कर मुख्यधारा में हुए शामिल : गडकरी

मुंबई/एजेंसी। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने रविवार को कहा कि महाराष्ट्र के गढ़चिरौली में नक्सलवाद की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। उन्होंने कहा कि लगभग पांच हजार युवा नक्सलवाद के रास्ते को छोड़कर मुख्यधारा में शामिल हो गए हैं और उनमें से कई को रोजगार भी मिला है। अहिल्यानगर जिले के शिरडी में भाजपा के राज्य स्तरीय अधिवेशन में उन्होंने कहा कि अगले पांच वर्ष में गढ़चिरौली महाराष्ट्र में सबसे अधिक राजस्व अर्जित करने वाला जिला बन जायेगा। गडकरी ने भाजपा कार्यकताओं से पार्टी की चुनावी सफलता को सार्थक सामाजिक बदलाव में बदलने की अपील की। उन्होंने कहा कि पिछले वर्ष राज्य विधानसभा चुनावों में मिली जीत से ह्यसुराज्यह्ल की स्थापना होगी।

नक्सल प्रभावित गढ़चिरौली में हुई प्रगति पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि एक समय ऐसा था, जब जिले के कुछ क्षेत्रों का दौरा करना जनप्रतिनिधियों के लिए भी कठिन था। भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता ने कहा, ह्यह्यआज लगभग पांच हजार युवा नक्सलवाद छोड़कर मुख्यधारा में लौट आए हैं। कई लोगों को चालक, फिटर आदि जैसी नौकरियां मिल गई हैं। उन्होंने कहा कि जिले में इंजीनियरिंग और पॉलिटेक्निक कॉलेज स्थापित किए गए हैं और निर्यात के लिए परिधान निर्माण का काम शुरू हो गया है। गडकरी ने कहा कि कभी पिछड़ा रहा यह क्षेत्र अब 10,000 आदिवासी युवकों के लिए रोजगार पैदा कर रहा है। उन्होंने कहा, ह्यह्यअगले पांच वर्षों में गढ़चिरौली सबसे अधिक राजस्व अर्जित करने वाला जिला बन जाएगा। उन्होंने बेरोजगारी, कुपोषण और शिक्षा की कमी के मुद्दों के समाधान के महत्व पर भी जोर दिया। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में परिवर्तन तथा मजदूरों और गरीबों के उत्थान की आवश्यकता पर प्रकाश डाला।

लोकतंत्र ने राजनीति को लोकतांत्रिक बनाया : धनखड़

आह्वान

उप राष्ट्रपति ने युवाओं से किया खुद पर विश्वास करने का आह्वान

प्रात: किरण

गुरुग्राम/नई दिल्ली /एजेंसी। उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने युवाओं से खुद पर विश्वास करने का आह्वान करते हुए कहा है कि वे देश के आर्थिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक और व्यावसायिक परिदृश्य का लोकतंत्रीकरण करने जा रहे हैं।

श्री धनखड़ ने रविवार को हरियाणा के गुरुग्राम में मास्टर्स यूनियन के चौथे दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि हमारे देश में एक बहुत ही साधारण बात है कि हम बहुत जल्दी किसी को आदर्श बना देते हैं और उसका प्रतीक बना देते हैं। उन्होंने कहा, हम कभी नहीं पूछते कि वह एक महान वकील क्यों हैं, वह एक महान नेता क्यों हैं, वह एक महान डॉक्टर क्यों हैं, वह एक महान पत्रकार क्यों हैं। हम बस यह मान लेते हैं कि यह है...आपको सवाल पूछना चाहिए, क्यों? एक समय था जब कौन व्यापार करता था? व्यापारिक परिवार थे, व्यापारिक राजवंश थे, उनके गढ़ थे, केवल वे ही इसे करते थे, ठीक वैसे ही जैसे सामंत शासन करते थे। लोकतंत्र ने राजनीति को लोकतांत्रिक बनाया। अब, आप देश के आर्थिक, औद्योगिक, वाणिज्यिक और व्यावसायिक परिदृश्य का लोकतंत्रीकरण करने जा रहे हैं।

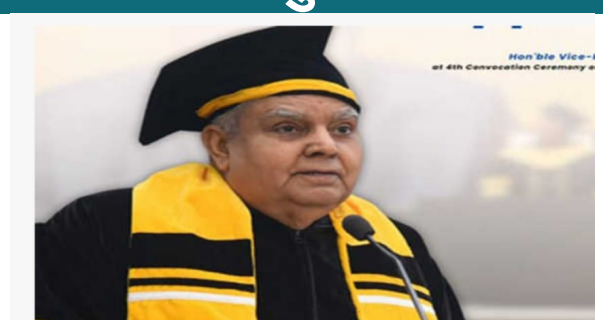

उन्होंने युवाओं से कहा कि वे खुद पर विश्वास रखें। कोई भी व्यक्ति तब तक सम्मान का हकदार नहीं है जब तक उनमें गुण नहीं हों। युवाओं की चापलूस या पाखंडी बनने की इच्छा कभी नहीं होनी चाहिए।

श्री धनखड़ ने युवाओं से कहा, ह्लआपको वंश की आवश्यकता नहीं है, आपको परिवार के नाम की आवश्यकता नहीं है, आपको पारिवारिक पूंजी की आवश्यकता नहीं है, आपको एक विचार की आवश्यकता है।ह्ल उन्होंने कहा कि मानव संसाधन की अपरिहार्यता एक मिथक है। यह विचार कि ह्यआपके बिना चीजें काम नहीं कर सकतींह्ल सत्य नहीं है। ईश्वर ने आयु की सीमा पहले ही निर्धारित कर दी है। इसलिए, उन्होंने यह भी तय कर दिया है कि कोई अपरिहार्य नहीं हो सकता।

देश की नौकरशाही की क्षमता पर श्री धनखड़ ने कहा कि देश के पास बेहतरीन मानव संसाधन, नौकरशाही है, जो सही ढांचे में सही नेतृत्व में कोई भी बदलाव ला सकती है। युवाओं की लोकतंत्र को प्रभावी बनाने में भूमिका और संसद के प्रतिनिधियों और जन प्रतिनिधियों के कर्तव्यों को दोहराते हुए उप राष्ट्रपति ने कहा कि युवा अब सोशल मीडिया की ताकत से यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि हमारे सांसद और जन प्रतिनिधि अपने शपथ का पालन करें। वे अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करें और अपनी कर्तव्यों का सही तरीके से पालन करें

कोलंबिया में विमान दुर्घटना में 10 लोगों की मौत

बोगोटा । दक्षिणी अमेरिकी देश कोलंबिया में एक छोटे विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने से 10 लोगों की मौत हो गई है। विमानन अधिकारियों ने इसकी पुष्टि की है। पैसिफिक ट्रैवल द्वारा संचालित यह विमान जुराडो से मेडेलिन के रास्ते में बुधवार को लापता हो गया था। विमान का मलबा एंटिओक्विया के उत्तर-पश्चिमी कोलंबियाई विभाग के उर्राव के एक ग्रामीण इलाके में मिला। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, विमान में चालक दल के दो सदस्य और आठ यात्री सवार थे। एंटिओक्विया के जोखिम प्रबंधन विभाग के निदेशक कार्लोस रियोस पुएर्टा ने कहा कि दुर्भाग्य से विमान में सवार कोई भी जीवित नहीं बचा है। हमारे पास साइट पर 37 कर्मी काम कर रहे हैं। हम दूसरे चरण में तेजी ला रहे हैं, जिसमें शवों को बरामद करना और न्यायिक पुलिस के साथ समन्वय करना शामिल है। मौसम की प्रतिकूल स्थिति की वजह से रिकवरी प्रक्रिया आसान नहीं हो रही।

संक्षिप्त खबरें

बीस लीटर देशी शराब के साथ एक गिरफ्तार

फतुहा। रविवार को पचरुखिया पुलिस ने सोतीचक पुलिया के पास से बीस लीटर देसी शराब के साथ एक धंधेबाज को गिरफ्तार किया है। गिरफ्तार धंधेवाज सोतीचक के ही रहने वाला गुरुचरण कुमार उर्फ गुलचंद कुमार है। बताया जाता है कि वह पुलिया के नीचे प्लास्टिक के बोरे में शराब को रखकर छिपाए हुए था। गुप्त सूचना के आधार पर पुलिस ने यह कार्रवाई कर शराब के साथ उसे गिरफ्तार कर लिया। एसएचओ मिथिलेश कुमार ने बताया कि धंधेबाज को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

जरूरतमंदों के बीच कम्बल का वितरण

फतुहा। रविवार को एनआरआई सैदनपुर निवासी ई गोपाल शंकर प्रसाद के सौजन्य से जरुरतमंदों के बीच कम्बल का वितरण किया गया। रविवार को कम्बल का वितरण नरमा, बुद्धदेव चक व दौलतपुर गांव के साथ साथ उसफा, मकसूदपुर व सोनारु गांव में भी किया गया। समाजसेवी छोटु सिंह ने बताया कि ई गोपाल शंकर सिंह के सौजन्य से करीब 11 सौ कम्बल का वितरण किया जा चुका है। उन्होने बताया कि मौसम को देखते हुए जरुरतमंदों के बीच कम्बल वितरण का कार्यक्रम आगे भी किया जाएगा। इस मौके पर शेखर तिवारी, छोटू सिंह, वीर बहादुर सिंह, सुरेंद्र सिंह, प्रमोद कुमार व संजीव सिंह भी मौजूद थे।

स्वास्थ्य जांच शिविर का हुआ आयोजन

फतुहा। रविवार को बरुणा गांव के मां सुभद्रा एकेडमी परिसर में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर सेवा भारती के सौजन्य से स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में पीएमसीएच के चिकित्सकों के द्वारा 40 से अधिक लोगों की स्वास्थ्य की जांच की गयी तथा मुफ्त दवा का वितरण भी किया गया। साथ ही चिकित्सकों के टीम द्वारा इस ठंड के मौसम में मरीजों को बचने की हिदायत भी दी गयी। मौके पर पीएमसीएच के डा मिथिलेश कुमार, डा सौरव कुमार के साथ साथ एकैडमी के संचालक सूरयदेव कुमार, सौरभ कुमार, संजीव कुमार, मृत्युंजय कुमार व रणवीर सिंह मौजूद थे।

बिहार बंद का कोई असर नगर में नही दिखा

दानापुर। नगर के अंतर्गत पप्पू यादव के द्वारा बीपीएससी की 70वीं पीटी परीक्षा को रद्द करने की मांग को लेकर सांसद द्वारा आहूत किया गया लेकिन बिहार बंद का कोई असर नगर में नही दिखा। थोड़ी देर के लिए पप्पू यादव के समर्थक लोग प्रखंड कार्यालय के पास सड़क पर आगजनी कर थोड़ी देर के लिए विरोध प्रदर्शन किया। जिससे यातायात बाधित हुआ पर कुछ देर में ही समाप्त हो गया। आम दिनों की तरह नेहरूपथ गांधी मैदान समेत अन्य मार्गो पर वाहनों का परिचालन होता रहा। बाजार खुला रहा। सांसद पप्पू यादव के आहूत बंद का कोई असर दानापुर में नही दिखा। सब कुछ सामान्य रहा है

जयंती पर याद किए गए स्वामी विवेकानन्द, त्रिभुवन पुस्तकालय में समारोह

बिक्रम : स्थानीय बाजार स्थित अनुमंडलीय त्रिभुवन पुस्तकालय में रविवार को आशुतोष कुमार की अध्यक्षता में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में स्वामी स्वामी विवेकानंद की जयंती मनायी गयी। कार्यक्रम की शुरूआत में मौजूद लोगों ने स्वामी विवेकानन्द जी के तैल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी वहीं पत्रकार शशांक शेखर मिश्र समेत अन्य वक्ताओं ने स्वामी विवेकानंद के व्यक्तित्व और कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में पुस्तकाध्यक्ष प्रतिमा कुमारी, सेवानिवृत शिक्षक राम विनय शर्मा व पुस्तकालय में अध्ययनरत विधार्थी सुमन कुमारी, काजल कुमारी, मोनिका कुमारी, सुंदरम कुमार आदि उपस्थित थें।

तमिलनाडु काम कराने ले जा रहे नाबालिग बच्चों को प्लेटफार्म से बरामद किया

दानापुर खगौल। रेल थाना क्षेत्र के अंतर्गत दानापुर रेलवे स्टेशन से चार नाबालिक बच्चों को बरामद किया है। जानकारी के अनुसार बचपन बचाओ आन्दोलन के द्वारा आरपीएफ को जानकारी दी गई कि कुछ व्यक्ती नाबालिक बच्चों को मजदूरी कराने के लिए तमिलनाडु ट्रेन से ले जाया जा रहा है। बचपन बचाओ आन्दोलन के स्टाफ व आरपीएफ की टीम दानापुर स्टेशन के प्लेटफार्म पर डरें-सहमे हुए चार नाबालिग बच्चों को बरामद कर लिया गया।इस संबंध में जीआरपी थाना प्रभारी ने बताया कि बाल तस्कर मोतिहारी का रहने वाला पिता पन्ना लाल मुखिया के 26 वर्षीय राज कुमार मुखिया है। चार बच्चों को तमिलनाडु काम कराने के लिए ले जा रहा था। बाल तस्कर को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है

एम्स पटना में आईआरआईए के वार्षिक सम्मेलन का हुआ समापन

दो दिवसीय सम्मेलन में हैंड्स ऑन वर्कशॉप और हाउ आई डू इट जैसे सत्र भी हुआ आयोजित

प्रात :किरण संवाददाता

पटना। इंडियन रेडियोलॉजिकल एंड इमेजिंग एसोसिएशन (आईआर आईए) का वार्षिक सम्मेलन, आईएसवीआईआर राज्य चैप्टर, चंडीगढ़, पंजाब और हिमाचल प्रदेश के सहयोग से, 11 और 12 जनवरी 2025 को एम्स पटना के ऑडिटोरियम में सफलतापूर्वक संपन्न हुआ। यह सम्मेलन रेडियोलॉजी विभाग, एम्स पटना द्वारा आयोजित किया गया, जिसमें इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी विषय पर चर्चा की गई। सम्मेलन की अध्यक्षता एम्स पटना के रेडियोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. राजीव प्रियदर्शी और डॉ. नवीन कालरा ने की, जबकि डॉ. उपासना सिन्हा और डॉ. चिराग आहूजा ने सचिव के रूप में कार्यभार संभाला। इसमें पीजीआईएमईआर चंडीगढ़, एम्स नई दिल्ली और एसजीपीजीआई लखनऊ सहित देश के प्रमुख संस्थानों से 12 से अधिक विशेषज्ञ फैकल्टी ने भाग लिया। इस दो दिवसीय आयोजन में विभिन्न मेडिकल कॉलेजों और संस्थानों से 200 से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी चिकित्सा क्षेत्र में एक क्रांतिकारी तकनीक है, जो इमेज गाइडेड और कम-आक्रामक तरीकों का उपयोग करके जटिल बीमारियों जैसे लिवर ट्यूमर और वैस्कुलर डिजीज का इलाज करती है। यह तकनीक पारंपरिक शल्य चिकित्सा की तुलना में कम जोखिम, तेज रिकवरी और अस्पताल में कम समय की आवश्यकता सुनिश्चित करती है। हालांकि, आम जनता और चिकित्सकों के बीच अभी भी इस तकनीक के प्रति जागरूकता की कमी है। इस सम्मेलन का उद्देश्य इस जागरूकता को बढ़ाना और आधुनिक तकनीकों को अपनाने को प्रोत्साहित करना था। सम्मेलन में ह्यहैंड्स ऑन वर्कशॉपह्ल और ह्याहाउ आई डू इटह्ल जैसे सत्र आयोजित किए गए, जिनमें विशेषज्ञों ने प्रतिभागियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण और नवीनतम तकनीकों का ज्ञान प्रदान किया। यह आयोजन इंटरवेंशनल रेडियोलॉजी के क्षेत्र में जागरूकता बढ़ाने और बेहतर स्वास्थ्य देखभाल की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ।

आगामी चुनाव में व्यापारियों को राजनीतिक भागीदारी मिले अशोक

प्रात :किरण संवाददाता

पटना/ पटना सिटी । कांफ्रेंडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स पटना महानगर द्वारा पटना सिटी अरोड़ा हाउस केम्पस में नये साल के अवसर पर लिट्टी चोखा संगोष्ठी सह पारिवारिक मिलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष अशोक कुमार वर्मा ने बताया कि छोटे व मझौले व्यापारियो को बढ़ावा देने के लिए बैंको द्वारा मुद्रा लोन दिलाने के साथ होली पर महिला उधमीयो द्वारा व्यापार मेला आयोजन करने का निर्णय लिया गया। साथ ही मुख्यमंत्री के सपने स्वस्थ बिहार - स्वच्छ विहार के कैट द्वारा समय समय पर स्वास्थ्य शिविर का आयोजन करने का निर्णय लिया गया। व्यापारी द्वारा निर्णय लिया गया की चुनाव में राजनितिक हिस्सेदारी देने की मांग की।

इस अवसर पर बिहार कैट अध्यक्ष अशोक कु वर्मा, कैट महिला विंग की प्रथम महिला मंजू वर्मा, प्रदेश महासचिव दुर्गा प्रसाद गुप्ता, प्रदेश उपाध्यक्ष शीतल नायक, प्रदेश उपाध्यक्ष अनत अरोड़ा, प्रदेश सचिव दिलीप कुमार, महिला विंग की प्रदेश अध्यक्ष रूचि अरोड़ा, रश्मि अरोड़ा, पटना महिला विंग अध्यक्ष प्रियका कुमार, पटना महानगर अध्यक्ष राकेश कुमार डालमिया, पटना महानगर सचिव राज कुमार राजा, पटना महानगर कोषाध्यक्ष रामशंकर विश्वकर्मा, कैट राष्ट्रीय सचिव डॉ रमेश गाँधी, सहित कई लोग मौजूद थे।

युवा दिवस पर आयोजित हुआ निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर

प्रात :किरण संवाददाता

पटना, स्वामी विवेकानंद सेवा योजना और आयुष्मान भारत फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में पटना के न्यू बुद्धा इंस्टिट्यूट में निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन रविवार (12.1.25) को किया गया। निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर के संयोजक एन एम ओ व सेवा भारती बिहार प्रान्त रहे। शिविर में लगभग 100 लोगो ने स्वास्थ्य जांच कराया। शिविर में आयुष्मान भारत फाउंडेशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रदेश के चर्म रोग बिशेषज्ञ डॉ आर के गुप्ता उपस्थित थे। डॉ गुप्ता के साथ शिविर में डॉ अपूर्वा अग्रवाल जनरल सर्जन, डॉ संदीप कुमार जनरल फिजिशियन एवं कोर्डियोलाजिस्ट ने भी भाग लिया। उक्त अवसर पर चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ गुप्ता ने कहा कि हमारे संगठन के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद जी के जयंती के उपलक्ष्य पर , यह कैंप आयोजित हुआ। हम सब को ठंड के इस मौसम मे ठंड से बचाव करना चाहिए और किसी भी तरह की समस्या होने पर अपने नजदीक के चिकित्सक से सम्पर्क करना चाहिए। विशेषकर बच्चो और वृद्ध लोगो का ध्यान रखना चाहिए। उक्त अवसर पर पटना मेडिकल कालेज के शिव आदित्य, प्रिन्स आनंद, गौरव कुमार, हर्ष कुमार, आर्यन कुमार, काजल कुमारी एवं साक्षी कुमारी शामिल थे। डॉ गुप्ता ने सभी देशवासियो को युवा दिवस की हार्दिक शुभकामनायें देते हुए विवेकानंद जी के बताये मार्ग पर चलने काआह्वान किया।

युवाओं के प्रेरणापुंज एवं सनातन धर्म के प्रणेता है स्वामी विवेकानंद : अर्जुन गुप्ता

प्रात :किरण संवाददाता

पटना : युवाओं के प्रेरणापुंज एवं सनातन धर्म के प्रणेता स्वामी विवेकानंद जी की 162 वी जयंती पटना स्थित वीर कुंवर सिंह पार्क में मनाई गई जहाँ मोर्चा के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओ द्वारा पार्क मे आये आगंतुक को वृक्ष भेट की गई वही मोर्चा के नेताओं द्वारा पार्क मे वृक्षारोपण भी किया गया कार्यक्रम मे मुख्य रूप से मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुन गुप्ता राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रहलाद वर्मा राष्ट्रीय महासचिव प्रीति पाठक के साथ भाजपा के पूर्व सह संगठन महामंत्री शिवनरायण महतो एवं बिहार भाजपा के कार्यलय मंत्री प्रवीण पटेल मुख्य रूप से उपस्थित हुए ।कार्यक्रम को संबोधित करते हुऐ मोर्चा के राष्ट्रीय अध्यक्ष अर्जुन गुप्ता ने कहा की स्वामी विवेकानंद एक आध्यात्मिक गुरू होने के साथ ही एक कुशल वक्ता और देशभक्त भी थे. उन्होंने भारतीय वेद-पुराणों को पूरे विश्व में पहचान दिलाई. उनका पूरा जीवन ही युवाओं के लिए एक शिक्षा है। श्री गुप्ता ने कहा की विवेकानंद ने ध्यान के महत्व को समझाया उन्होंने बताया की ध्यान वह प्रक्रिया है जिससे मानसिक स्पष्टता प्राप्त होती है और तनाव कम होता है। साथ ही ध्यान करने से आप अपने लक्ष्य के प्रति फोकस भी रह पाते हैं। इसलिए स्वामी विवेकानंद ने ध्यान को जीवन जीने का तरीका माना है। विवेकानंद के अनुसार, ध्यान से एकाग्रता आती है और एकाग्र व्यक्ति को जीवन में सफल होने से कोई नहीं रोक सकता। अगर आज हम भी ध्यान के महत्व को समझ लें तो जीवन में सफल हो सकते हैं कार्यक्रम मे मोर्चा के प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद पाल अजय कुमार उर्फ स्वामी जी प्रदेश महासचिव सुजीत पटेल मिना तिवारी धनंजय कुमार प्रदेश सचिव इंदु जायसवाल पटना महानगर अध्यक्ष मुकेश चंद्रवंशी उपाध्यक्ष दिलीप कुमार मुकुल जी आदि दर्जनों लोग उपस्थित थे।

स्वास्थ्य मंत्री से मिल डिप्लोमा फार्मासिस्ट आर्ग. ने सौंपा ज्ञापन

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

डिप्लोमा फार्मासिस्ट आर्गनाइजेशन छात्र संघ, बिहार की ओर से स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय से मिल कर ज्ञापन सौंपा गया। इसमें राज्य के डिप्लोमा फार्मासिस्टों की परेशानियों एवं बिहार तकनीकी सेवा आयोग के द्वारा विज्ञापन प्रकाशन में हो रहे विलंब से अवगत कराया गया। छात्र संघ अध्यक्ष अरविंद कुमार ने बताया डिप्लोमा फार्मासिस्टों के 2473 पदों पर नियमित नियुक्ति के लिए विज्ञापन प्रकाशन में हो रहे विलंब के संबंध में रविवार को मंगल पांडेय से मिल कर अपनी समस्याओं से अवगत कराया गया। मंत्री ने बताया कि वे तो दो माह पहले ही विज्ञापन प्रकाशन के लिए बिहार तकनीकी सेवा आयोग को अधियाचना भेज चुके हैं। विज्ञापन प्रकाशन में विलंब बिहार तकनीकी सेवा आयोग के स्तर से हो रहा है, इसलिए वे स्वयं और अपर मुख्य सचिव प्रतिदिन बिहार तकनीकी सेवा आयोग से अद्यतन रिपोर्ट ले रहे हैं। स्वास्थ्य मंत्री जी ने आश्वस्त किया है कि इस सप्ताह डिप्लोमा फार्मासिस्टों का विज्ञापन प्रकाशित हो जाएगा और जल्द ही नियुक्ति की प्रक्रिया पूरा कर लिया जाएगा।

कलश शोभायात्रा के बाद प्राण प्रतिष्ठा अनुष्ठान

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

जयहिंद गली गौरीशंकर कॉलोनी स्थित पौराणकि ब्रह्मस्थान परिसर पंचमुखी हनुमान जी महाराज के प्राण प्रतिष्ठा का अनुष्ठान 20 जनवरी को कलश शोभायात्रि से आरंभ होगा। रंजीत कुमार उर्फ गगु व रामजी मेहता ने बताया कि 151 महिलाएं कलश लेकर निकलेंगी। चार दिनों के अनुष्ठान में 21 को नगर भ्रमण, 22 को प्राण प्रतिष्ठा व 23 को सम्मान समारोह सह भंडारा होगा। बैठक में सीताराम महतो, शंकर चौधरी, संजय लाल, शिवनाथ पाठक, संजय सिंह, सीता सिन्हा, मीडिया प्रभारी अनिल रश्मि आदि उपस्थित थे। इस दौरान फोल्डर का भी लोकार्पण किया गया। वक्ताओं ने कहा कि आयोजन में विधानसभा अध्यक्ष नंदकिशोर यादव, सांसद रविशंकर प्रसाद, महापौर सीता साहू भी शामिल होंगे।

स्वामी विवेकानंद के तेल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर कंबल बांटा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

अखिल भारतीय कायस्थ महासभा के द्वारा स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई गई। इस मौके पर घूम-घूम कर लोगों के बीच कंबल का वितरण किया गया। इस जयंती समारोह के मौके पर नगर विकास मंत्री नितिन नवीन, विधायक अरुण कुमार सिन्हा एवं पंकज सिन्हा ने स्वामी विवेकानंद के तेल चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की और अपने विचार व्यक्त किए। इसके बाद अध्यक्ष सुजीत कुमार वर्मा, संरक्षक निर्मल कुमार श्रीवास्तव, प्रमोद कुमार सिन्हा, अमिताभ वर्मा, राजेश सिन्हा, अरुण कर्ण, पटना जिलाध्यक्ष अपलेंद्र सिन्हा अप्पू, कुसुमलता वर्मा, प्रीति बरियार, अभिषेक बंटी, सौरव श्रीवास्तव, मनोज कुमार, मनोज कुमार मनोज, सतेंद्र नारायण, रंजन श्रीवास्तव, प्रो सुधा सिंह, संजीत बबलू, वार्ड पार्षद रजनी सिन्हा, अमित सिंह मोनू ने घूम-घूम कर लोगों के बीच कंबल का वितरण किया।

रोटरी सिटी सम्राट समाज सेवा को रहता सदैव तत्पर : नंदकिशोर यादव

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

समाज सेवा के लिए सदैव तत्पर रहने वाला रोटरी पटना सिटी सम्राट के द्वारा स्वर्गीय नवनीत बल्लभ की स्मृति में मोतियाबिंद के मुफ्त ऑपरेशन शिविर का आयोजन किया गया। पटना और आसपास के जिलों से आए जरूरतमंद मोतियाबिंद के मरीजों का चौक स्थित सनातन धर्म सभा परिसर में जुटान हुआ। इसका विधिवत उद्घाटन बिहार विधानसभा के अध्यक्ष नंदकिशोर यादव ने किया। बतौर मुख्य अतिथि रोटरी के मंडल अध्यक्ष विपिन चाचन मौजूद थे दोनों ने दीप जलाकर शुभारंभ किया। अतिथियों ने अपने संबोधन में कहा कि रोटरी पटना सिटी सम्राट विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों में हमेशा बढ़-चढ़कर सेवा करता रहा है। इसमें मोतियाबिंद का मुफ्त ऑपरेशन भी एक पुनीत सामाजिक कार्य है। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्लब के अध्यक्ष देवराज बल्लभ ने किया। इस दौरान शिविर में करीब ढाई सौ मरीजों की आंखों का जांच नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अभिषेक गोलवारा के द्वारा किया गया। चयनित मरीजों का ऑपरेशन डॉक्टर अभिषेक एवं उनकी टीम के द्वारा चार चरणों में किया जाएगा। अतिथियों का स्वागत अध्यक्ष विजय कुमार यादव, मंच संचालन संजय कुमार सिन्हा एवं धन्यवाद ज्ञापन चयनित अध्यक्ष अभिषेक पैट्रिक ने किया। शिविर में सभी मरीजों को अन्नपूर्णा प्रोजेक्ट के तहत भोजन, चाय व बिस्किट उपलब्ध कराया गया। शिविर में मरीजों का शुगर, बीपी आदि की जांच भी की गई। सचिन देवेश नवाडिया ने क्लब के द्वारा किए जा रहे कार्यों का ब्योरा रखा। शिविर की सफलता और सेवा में कोषाध्यक्ष राजीव कुमार, एमए हक, संजीव कुमार यादव, दिनेश भदानी, अनिल प्रकाश, राजेश कुमार, ललित अरोड़ा, सुनील केसरी, ललन कुमार, प्रमोद कुमार, सचिन कुमार, सुमित कुमार चंद्रवंशी, अभिषेक पैट्रिक, शरद कपूर, बीएन कपूर, भोला केसरी, राजेंद्र प्रसाद, विनय कुमार लांबा, त्रिभुवन कुमार, अरुण कुमार सिंह, नितिन मुकेश, अभिषेक राज, विनोद कुमार, गोविंद चौधरी, नीरज कुमार, जेपी जायसवाल, ओमप्रकाश, मनोज कुमार, संजय कुमार, नसीम अख्तर, डॉ विनय कुमार सिंह, मनोज कुमार, राजकिशोर, कविता अरोड़ा, शालिनी कुमारी, रुचिता नवाडिया आदि थीं

डॉ विपिन कुमार स्वास्थ्य सेवा के निदेशक प्रमुख बने, चिकित्सकों ने दी बधाई

प्रात :किरण संवाददाता

बिक्रम : जिले के नालंदा मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल में कार्यरत डॉ. विपिन कुमार बिहार सरकार स्वास्थ्य सेवा के निदेशक प्रमुख बनाए गया। बिहार सरकार स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी अधिसूचना के बाद डॉ विपिन ने गुरुवार को पदभार ग्रहण किया । उनके स्वास्थ्य विभाग में कार्य के लम्बे अनुभव को देखते हुए उन्हें स्वास्थ्य सेवाएं बिहार के निदेशक प्रमुख बनाया गया है` इससे एनएमसीएच में कार्यरत चिकित्सक एवं कर्मियों में खुशी की लहर दौड़ गई। जिले के सिविल सर्जन समेत एनएमसीएच के चिकित्सकों समेत, डॉ. धनंजय शर्मा, डॉ रश्मि प्रसाद, डॉ जेबा आलम, बिक्रम पीएचसी प्रभारी डॉ राजेश कुमार, गोपाल विद्यार्थी, धनु कुमार एवं ग्रामीण चिकित्सक संघ के चिकित्सकों समेत कई अन्यों ने रविवार को उन्हें उनके बिक्रम स्थित क्लिनिक जाकर फूल माला पहनाकर उन्हें बधाई दी है` विदित हो कि डॉ विपिन की पहली पोस्टिंग 1988 में बिक्रम के पीएचसी में चिकित्सा अधीक्षक के रूप में हुई थी, तब से अबतक लगातार सप्ताह में एक दिन डॉ विपिन बिक्रम वासियों की निस्वार्थ सेवा कर रहे हैं, जिससे स्थानीय लोगों ने खुशी जताते हुए बिक्रम के लिए गर्व का विषय बताया है ।लोगों ने कहा कि बिक्रम में लगातार 30 वर्षों से सेवा दे रहे इकलौते चिकित्सक डॉ विपिन ने बिक्रम का मान सम्मान बढ़ाया है। डॉ कुमार निचले स्तर से शुरू कर निदेशक प्रमुख पद तक की यात्रा तय की यह इससे गर्व का अनुभव हो रहा है ।

इस महाशिवरात्रि शोभायात्रा पर 27 झांकियां की होगी प्रस्तुति

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

महाशिवरात्रि पर 26 फरवरी को भव्य शिव बारात निकाली जाएगी। इसकी तैयारी को लेकर रविवार को हाजीगंज में महाशिवरात्रि महोत्सव शोभायात्रा समिति की बैठक लक्ष्मी नारायण साह की अध्यक्षता में हुई। इसमें समिति के सदस्यों ने इस वर्ष के लिए लक्ष्मी नारायण साह को अध्यक्ष मनोनीत किया। इस बार शिव बारात को भव्यता प्रदान करने के लिए लोगों के बीच जनसंपर्क अभियान की आवश्यकता पर बल दिया गया। 27वां शोभायात्रा पर 27 आकर्षक एवं सुंदर झांकियां निकालने का निर्णय लिया गया।

बैठक में जयकृष्ण प्रसाद चंद्रवंशी, लल्लू शर्मा, राजू चंद्रवंशी, उदय कृष्ण यादव, दिलीप चौधरी, सुरेश सिंह पटेल, विनय केसरी, हरेंद्र यादव, मनोज वर्मा, किशोरी प्रसाद, उदय कुमार, राजेश यादव, टिंकू राउत, शाह कमल कृष्णा, कौशल शर्मा, अजय कुमार, मुकेश अग्रहरि, संतोष जायसवाल, जगनारायण केसरी आदि शिव भक्त उपस्थित थे।

कुशवाहा पंचित बैठका, गुलजारबाग में चूड़ा-दही पर हुआ मिलन समारोह

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

कुशवाहा क्षत्रिय हितैषी पंचित बैठका समिति, गुलजारबाग में समाज के प्रतिष्ठित, गण्यमान्य लोगों के साथ ही अन्य लोगों के साथ भोजन सह मिलन समारोह का आयोजन किया गया। मकर संक्रांति के पूर्व आयोजित कार्यक्रम में समिति के अध्यक्ष संजीत मेहता, उपाध्यक्ष अशोक मेहता व महामंत्री नीरज मेहता ने आगतों का स्वागत किया। इस दौरान लोगों को मकर संक्रांति के पूर्व चूड़ा, दही, भूरा, सब्जी आदि खाने के दौरान बातचीत का अभियान जारी रखने में सहायक मंत्री अखिलेश मेहता, प्रदीप सिंह, दयाशंकर महतो आदि सक्रिय रहे। इस दौरान कार्यक्रम में वार्ड पार्षद किरण मेहता, तारा देवी, मनोज मेहता, पूर्व ड्यूटी मेयर रूपनारायण मेहता, संतोष मेहता, पूर्व पार्षद शिव मेहता, स्मिता रानी, सीता सिन्हा के अलावा शंकर मेहता, नरेश मेहता, विनीत कुशवाहा, राजू मेहता, निशा मेहता, रामजी मेहता, पंकज गुप्ता, हरेंद्र चंद्रवंशी, दिलीप गुप्ता, ब्रह्मदेव शर्मा गोपाल प्रसाद, अनिल रश्मि आदि शामिल थे। इधर कुम्हरार कुशवाहा पंचायत भवन में राजद के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रो सुबोध कुमार मेहता के सौजन्य से दही-चूड़ा भोज का आयोजन किया गया। प्रदेश महासचिव सह पूर्व पार्षद प्रदीप मेहता ने बताया कि इसमें सांसद सुधाकर सिंह, विधायक फतेह बहादुर सिंह, विधान पार्षद अब्दुल बारी सिद्दीकी, पूर्व विधानसभाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी, पूर्व मंत्री अशोक सिंह, युवा राजद के प्रदेश अध्यक्ष राजेश यादव, पूर्व विधायक ओमप्रकाश पासवान, श्रवण कुशवाहा, प्रदेश प्रवक्ता मृत्युंजय तिवारी, मधु मंजरी, शंकर मेहता, नरेश मेहता, मिथिलेश कुमार वर्मा, शैलेश मेहता, राजकिशोर सिंह, राजाराम प्रसाद, महताब आलम, रविंद्र पहलवान मेहता, चंद्रदीप मेहता, उत्तम मेहता, संतोष मेहता, विनोद यादव, विनोद चौधरी, अशोक यादव, पार्षद मनोज मेहता, सरदार रामदेव महतो अधिवक्ता मनोहर लाल मेहता, विमल कुशवाहा आदि भोज में शामिल हुए।

दादी जी के 22वां बसंतोत्सव पर मंगल पाठ व भजनों की अमृत वर्षा

पटना सिटी, प्रात :किरण संवाददाता

श्री नारायणी भक्त मंडल के द्वारा 22वां बसंत महोत्सव श्री राणी सती दादी जी का मनाया गया। चौक स्थित मिरचाई गली में आयोजित कार्यक्रम में श्री नारायणी महिला मंडल और मंगल सखी भी सहयोगी के रूप में रहा। इस संबंध में मंडल के अध्यक्ष डॉ सुशील पोद्दार, सचिव अमित झुनझुनवाला, कोषाध्यक्ष रितेश उर्फ लकी मोदी एवं संयोजक राजेश चौधरी ने बताया कि राणी सती दादी जी का दरबार करीने से सजाया गया था। सुबह मंगला आरती हुई। इसके बाद गणेश पूजन किया गया। महामंगल पाठ दोपहर एक बजे से शुरू हुआ। इसके बाद आओ मां अनुपम आह्वान किया गया। तदुपरांत दादी जी का जन्मोत्सव मनाया गया। इस दौरान महिला मंडल की अध्यक्ष उर्मिला साह, सचिव कविता पोद्दार आदि ने पुष्प वर्षा के साथ मनाया। 13 गजरा का उत्सव मनाया गया। मंगल पाठ खजाना, सवामणि, 56 भोग भी अर्पित किया गया। इस दौरान महिलाओं के द्वारा नृत्य नाटिका भी प्रस्तुत की गई। भजनों की प्रस्तुति सूरत से आई सुरभि बिरजुका, सरोज बंका, पूनम मोर और कोमल देवड़ा ने दी। इन गायक कलाकारों ने अपनी भजनों से दादी भक्तों को झूमने, ताली बजाने और नृत्य करने को मजबूर कर दिया। आयोजन में राजेश देवड़ा, रवि सुल्तानिया, उज्जवल बजाज, विष्णु झुनझुनवाला, प्रदीप केडिया आदि सक्रिय थे।

बिहार के विकास के लिए निरंतर कर रहे काम : सीएम नीतीश

मुख्यमंत्री ने मधुबनी जिले में चल रही विकासात्मक योजनाओं की समीक्षात्मक बैठक की

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

प्रगति यात्रा के दूसरे चरण के दौरान आज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने मधुबनी जिले में चल रही विकासात्मक योजनाओं के संबंध में झंझारपुर प्रखंड के अररिया संग्राम स्थित मिथिला हाट में समीक्षात्मक बैठक की। समीक्षात्मक बैठक में मधुबनी जिला के जिलाधिकारी अरविंद कुमार वर्मा ने मधुबनी जिले के विकास कार्यों का प्रस्तुतीकरण के माध्यम से विस्तृत जानकारी दी। बैठक में मुख्यमंत्री के समक्ष जनप्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्र की समस्याएं भी रखीं।

समीक्षा बैठक को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि बैठक में जनप्रतिनिधियों ने जो भी समस्याएं रखी हैं, उनका जल्द से जल्द निराकरण करें। 24 नवंबर, 2005 से बिहार के लोगों ने हमलोगों को काम करने का मौका दिया। उस समय से हमलोग बिहार के विकास के लिए निरंतर काम कर रहे हैं। सभी क्षेत्रों और सभी वर्गों के लिए लगातार विकास का काम किया जा रहा है। वर्ष 2005 से पहले बिहार की हालत काफी खराब थी। शाम के बाद लोग अपने घरों से बाहर निकलने में डरते थे। अस्पतालों में इलाज का इंतजाम नहीं था, सड़कें जर्जर थीं। शिक्षा की हालत ठीक नहीं थी। प्रायः हिन्दू-मुस्लिम के बीच विवाद की खबरें आती थीं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जब बिहार के लोगों ने हमलोगों को काम करने का मौका दिया, तब से बिहार की स्थिति बदली है। हर क्षेत्र में विकास के काम किए जा रहे हैं। किसी के साथ कोई भेदभाव नहीं किया गया है। हमलोग मिलकर लगातार बिहार को आगे बढ़ा रहे हैं। वर्ष 2006 से हमलोगों ने कब्रिस्तानों की घेराबंदी शुरू कराई। अब तक 8 हजार से अधिक कब्रिस्तानों की घेराबंदी करा दी गई है और 1247 कब्रिस्तानों को चिह्नित किया गया है, जिसमें 746 कब्रिस्तानों का काम लगभग पूरा हो गया है और शेष बचे कब्रिस्तानों की घेराबंदी कराई जा रही है। हमलोगों ने देखा कि मंदिरों से मूर्ति चोरी की घटनाएं हो रही हैं। इसकोदेखते हुए मंदिरों की चहारदीवारी के निर्माण का निर्णय लिया गया ताकि मंदिरों में चोरी की घटनाएं न हों। मुख्यमंत्री ने कहा कि संपूर्ण बिहार में विकास का काम हमलोग करा रहे हैं। बिहार का कोई भी इलाका विकास से अछूता नहीं है। हमलोगों ने शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, पुल-पुलिया के निर्माण का काम बड़े पैमाने पर कराया है, जिसके कारण बिहार के किसी भी कोने से पहले 6 घंटे में लोग पटना पहुंचते थे, अब उसे घटाकर 5 घंटे किया गया है। इसके लिए हर प्रकार से काम किया जा रहा है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्ष 2006 से सरकारी विद्यालयों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए पोशाक योजना की शुरूआत की गई। वर्ष 2009 से लड़कियों के लिए साइकिल योजना चलायी गयी। बड़े पैमाने पर नियोजित शिक्षकों की बहाली, स्कूल भवनों का निर्माण कराकर शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने का प्रयास किया गया है। बड़ी संख्या में सरकारी शिक्षकों की बहाली की जा रही है। नियोजित शिक्षकों को परीक्षा के माध्यम से सरकारी मान्यता प्रदान की जा रही है। पहले काफी कम संख्या में लड़कियां पढ़ने जाती थीं। लड़कियों को जब साइकिल दी गई तो वे स्कूल समय पर जाने लगीं और साथ ही शाम में अपने माता-पिता को भी बाजार ले जाती हैं, यह दृश्य काफी अच्छा लगता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पहले प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में एक माह में सिर्फ 39 मरीज इलाज कराने आते थे। अब 1 माह में औसतन 11 हजार से अधिक मरीज इलाज कराने पहुंच रहे हैं। पहले बिहार में सिर्फ 6 सरकारी मेडिकल कॉलेज थे। अब उनकी संख्या बढ़कर 12 हो गई है। सभी जिलों में मेडिकल कॉलेज खोले जा रहे हैं। पी०एम०सी०एच० को 5400 बेड का वर्ल्ड क्लास अस्पताल बनाया जा रहा है। आई०जी०आई०एम०एस० का भी विस्तारीकरण किया जा रहा है। यहां पर 3000 बेड की सुविधा होगी। हर घर नल का जल, हर घर पक्की गली एवं नाली का निर्माण, हर घर शौचालय, हर घर तक बिजली का कनेक्शन जैसी मूलभूत सुविधाएं लोगों तक पहुंचा दी गई हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि पंचायती राज संस्थाओं एवं नगर निकायों में महिलाओं को 50 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, इसके तहत अब तक 4 चुनाव हो चुके हैं। बड़ी संख्या में महिलाएं चुनकर आई हैं। हमलोगों ने महिलाओं के उत्थान के लिए हर प्रकार से काम किया है। वर्ष 2013 में पुलिस की बहाली में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया गया, जिसका नतीजा है कि बिहार पुलिस बल में महिलाओं की भागीदारी काफी बढ़ी है। वर्ष 2016 से हमलोगों ने सभी सरकारी नौकरियों में महिलाओं को 35 प्रतिशत आरक्षण दिया। पहले बिहार में स्वयं सहायता समूहों की संख्या काफी कम थी। हमलोगों ने वर्ष 2006 में विश्व बैंक से कर्ज लेकर स्वयं सहायता समूहों की संख्या बढ़ाने का काम शुरू किया। बिहार में अब स्वयं सहायता समूहों की संख्या 10 लाख 61 हजार हो गई है, जिनसे 1 करोड़ 31 लाख जीविका दीदियां जुड़ी हैं। जीविका दीदियों में काफी कॉन्फिडेंस आया है, अपनी बातों को वे अच्छे ढंग से रखती हैं। उनके रहन-सहन और जीवन शैली में काफी बदलाव आया है। स्वयं सहायता समूह से जुड़ी महिलाओं का नाम जीविका दीदी हमलोगों ने ही दिया है, जिससे प्रेरित होकर उस समय की केंद्र सरकार ने भी इसे अपनाया और उसका नाम आजीविका दिया। हमलोगों के काम का असर पूरे देश पर पड़ता है। बिहार में अब शहरी क्षेत्रों में भी स्वयं सहायता समूहों का गठन शुरू कराया गया है, जिनमें अब तक 26 हजार जीविका दीदियां जुड़ी हैं।

अब तक 24 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया है : मुख्यमंत्री ने कहा कि हमलोगों ने 10 लाख लोगों को सरकारी नौकरी देने का लक्ष्य निर्धारित किया था, जिसे बढ़ाकर 12 लाख किया गया है। अब तक 9 लाख लोगों को सरकारी नौकरी दे दी गई है। इसके अलावा 10 लाख लोगों को रोजगार देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया था। अब तक 24 लाख लोगों को रोजगार मुहैया कराया गया है। वर्ष 2025 में 12 लाख लोगों को सरकारी नौकरी तथा 34 लाख लोगों को रोजगार मुहैया करा दिया जाएगा। हमलोगों ने सभी वर्गों के उत्थान के लिए काम किया है। मदरसों को सरकारी मान्यता दी गई है। हमलोगों ने बिहार में जाति आधारित गणना कराई जिसमें 94 लाख गरीबपरिवारों को चिह्नित किया गया है, जो हर जाति से जुड़े हैं। ऐसे गरीब परिवारों को प्रति परिवार 2 लाख रुपये की आर्थिक मदद दी जा रही है ताकि वे अपना जीविकोपार्जन कर सकें।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मधुबनी जिले में विकास के कई कार्य किए गए हैं। यहां इंजीनियरिंग कॉलेज, पॉलिटेक्निक संस्थान, महिला आई०टी०आई०, सभी अनुमंडलों में आई०टी०आई०, जी०एन०एम० संस्थान, पारा मेडिकल संस्थान, जननायक कपूरी ठाकुर छात्रावास का निर्माण कराया गया है। मधुबनी में 515 करोड़ रुपये की लागत से मेडिकल कॉलेज बनाया जा रहा है। सौराठ में मिथिला चित्रकला संस्थान संग्रहालय का निर्माण कराया गया है। वर्ष 2012 में सेवा यात्रा के दौरान हमने इसकी घोषणा की थी। इस संस्थान में मधुबनी चित्रकला का प्रशिक्षण दिया जाता है। अररिया संग्राम में मिथिला हाट का वर्ष 2023 में उद्घाटन किया गया। मधुबनी जिला में पथों एवं पुलों का निर्माण कराया गया है। साथ ही बाढ़-बचाव राहत कार्य कराए गए हैं। 76 पंचायत सरकार भवनों का निर्माण कराया गया है। इस जिले में जो भी पंचायत सरकार भवन बचे हुए हैं जिलाधिकारी उसका शीघ्र निर्माण कराएं। पंचायतों को सम्मान देने के लिए ही हमने पंचायत सरकार भवन नाम दिया। यहां 7 पावर ग्रिड का निर्माण कराया गया। 41 पावर उपकेंद्र बनाए गए। 51 कृषि फीडर का निर्माण कराया गया। इच्छुक किसानों को विद्युत कनेक्शन दिया जा रहा है। मधुबनी जिले के लिए इन सब कामों के अलावा और भी जिन कामों के संबंध में सुझाव आएंगे उस पर काम किया जाएगा। बिहार के विकास के लिए काम करते रहेंगेः मुख्यमंत्री ने कहा कि हम दो बार गलती से इधर से उधर चले गए थे। हमारा संबंध वर्ष 1995 से है। श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की सरकार में हम केंद्र में मंत्री थे। वे मुझे बहुत मानते थे। उन्होंने ही मुझे बिहार का मुख्यमंत्री बनाया। हम सब मिलकर बिहार के विकास के लिए काम करते रहेंगे, बिहार को आगे बढ़ाएंगे।

एक देश - एक चुनाव पर भाजपा प्रदेश कार्यालय में परिचर्चा

चुनावों में लगातार खर्च और विकास कार्यों की बाधा को रोकेगा एक देश -एक चुनाव : दिलीप

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

बिहार भाजपा कार्यालय में रविवार को न्यायिक एवं चुनाव आयोग संपर्क विभाग द्वारा एक देश-एक चुनाव विषय पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। इस परिचर्चा में भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और बिहार के राजस्व एवं भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल ने भाग लिया। उन्होंने इसे देश की भलाई के लिए आवश्यक बताते हुए, इस चुनावी निरंतरता को तोड़ने के लिए कांग्रेस के अहंकार को जिम्मेदार ठहराया। डॉ. जायसवाल ने कहा कि 1951 से 1967 तक देश में सभी चुनाव एक साथ होते थे। लेकिन बाद में यह प्रक्रिया बाधित हुई। उन्होंने कहा, ह्यहमें जानना सबसे जरूरी है कि इस निरंतरता में व्यवधान किसने और क्यों डाला, जिससे आज हमें ह्यएक देश-एक चुनावह्ण पर चर्चा करनी पड़ रही है।ह्ण उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि सत्ता में लगातार बने रहने के उनके अहंकार ने लोकतंत्र को कमजोर किया। राष्ट्रपति शासन लगाकर कांग्रेस ने लोकतंत्र की हत्या की।

उन्होंने यह भी कहा कि अलग-अलग चुनाव कराने से देश को बड़ा आर्थिक और प्रशासनिक नुकसान हो रहा है। चुनाव के दौरान आचार संहिता लागू होने से विकास कार्य ठप हो जाते हैं। डॉ. जायसवाल ने जोर देकर कहा कि यदि सरकारें पांच साल तक बिना किसी रुकावट के काम करें, तो देश में असाधारण विकास हो सकता है। जन-जागरूकता की अपील उन्होंने कार्यक्रम में मौजूद अभिवक्ताओं की सराहना की और कहा कि ह्यएक देश-एक चुनाव जैसे मुद्दों को जन-जन तक पहुंचाना जरूरी है।

इस मौके पर बिहार के विकास को नई ऊंचाई मिलेगी :

उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने भी ह्यएक देश-एक चुनाव की वकालत की। उन्होंने कहा, इससे देश के विकास को नई ऊंचाई मिलेगी और राजकोष की बड़ी बचत होगी। अन्य वक्ताओं के विचार मंत्री मंगल पांडेय ने कहा कि बार-बार चुनाव होने से विकास परियोजनाओं में देरी होती है। ह्यएक देश-एक चुनावह्ण से यह समस्या दूर होगी। सुप्रीम कोर्ट के एडिशनल सॉलिसिटर जनरल एसडी संजय ने कहा कि इस नीति के सकारात्मक प्रभाव ज्यादा हैं और इसे लागू करने के लिए सर्वसम्मति बनानी चाहिए। कार्यक्रम के अन्य प्रमुख लोग इस परिचर्चा की अध्यक्षता राकेश ठाकुर ने की, इस मौके पर मंत्री नितिन नवीन, कार्यक्रम संयोजक दीपक प्रकाश, मीडिया सह प्रभारी अमित प्रकाश बबलू, शंभु प्रसाद, और प्रियंका राजलक्ष्मी सहित कई प्रमुख लोग उपस्थित थे।

राहुल गांधी के बिहार आगमन की तैयारी हुई तेज

प्रभारी और अध्यक्ष करेंगे आज अहम बैठक

पटना। लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी के बिहार आगमन की तैयारियां जोर पकड़ने लगी हैं। बिहार कांग्रेस के प्रभारी मोहन प्रकाश और प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह सोमवार को प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय सदाकत आश्रम में अहम बैठक करेंगे जिसमें पूर्व अध्यक्ष, सांसदों, विधायकों, विधान पार्षदों की बैठक निर्धारित है। वहीं जिलाध्यक्षों के साथ वर्चुअल बैठक कर तैयारियों की समीक्षा की जाएगी।

प्रदेश कांग्रेस के मुख्य प्रवक्ता राजेश राठौड़ ने बताया कि बिहार कांग्रेस के प्रभारी मोहन प्रकाश का बिहार आगमन हो चुका है और उसके 0बाद वें प्रदेश मुख्यालय सदाकत आश्रम में प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के साथ सबसे पहले पूर्व प्रदेश अध्यक्षों, सांसदों, विधायकों और विधान पार्षदों के साथ अहम बैठक करेंगे जिसमें राष्ट्रीय नेता राहुल गांधी के बिहार दौरे को लेकर विभिन्न मुद्दों पर बातचीत संभावित है। वहीं दूसरी बैठक सभी जिलाध्यक्षों के साथ वर्चुअल मोड से आयोजित की जाएगी। चुनावी वर्ष में बिहार में पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी का दौरा काफी अहम है और इसको लेकर सभी कार्यकर्ता अपने स्तर से तैयारियों में जुट गए हैं। बिहार कांग्रेस के प्रभारी मोहन प्रकाश और प्रदेश अध्यक्ष डॉ अखिलेश प्रसाद सिंह के समन्वय में यह कार्यक्रम सफल हो इसको लेकर प्रदेश कांग्रेस में आने वाले कुछ दिनों तक लगातार अहम बैठक प्रस्तावित हैं।

सफल रहा बिहार बंद:पप्पू यादव

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

पूर्णिया सांसद पप्पू यादव के नेतृत्व में आज छात्र युवा शक्ति संगठन के लोगों ने रविवार को संपूर्ण बिहार बंद किया। प्रेमचंद सिंह के नेतृत्व में समर्थकों ने बोरिंग रोड, राजेश पप्पू के नेतृत्व में अशोक राज पथ, राजू दानवीर के नेतृत्व में राजेंद्र नगर कंकड़बाग को छात्र युवा संगठन के लोगों ने बंद कराया। प्रदर्शन के दौरान प्रेमचंद सिंह, राजेश पप्पू, मनीष कुमार, अवधेश लालू, आजाद चाँद, फैजान अहमद, नीतीश सिंह, अमरनाथ, अजमल, शान्तनु शेखर सहित दर्जनों लोगों को पुलिस ने कोतवाली थाने में हिरासत में लिया।

पूर्णिया सांसद पप्पू यादव कफन ओढकर हजारों समर्थकों के साथ बिहार बंद कराने पटना की सड़कों पर उतरे। बिहार बंद के दौरान समर्थकों को संबोधित करते हुए पूर्णिया सांसद पप्पू यादव ने कहा कि सरकार जनता को कफन ओढ़ने पर मजबूर कर दी है। नीतीश सरकार से त्रस्त जनता ने सरकार का राम नाम सत्य है, कर दिया है। बिहार बंद में निकले पप्पू यादव ने कहा कि जब बच्चों के करियर का राम नाम सत्य हो रहा है तो बिहार सरकार का भी राम नाम सत्य हो जाना चाहिए। प्रदेश के छात्र नौजवान इस सरकार का सत्यानाश करेंगे।

सांसद पप्पू यादव ने कहा कि पेपर लीक पर बिहार की जनता चुप नहीं बैठेगी। जबतक बिहार से पेपर लीक का खात्मा नहीं होगा तबतक हमारा आंदोलन जारी रहेगा। आज पूरा बिहार बंद है, आने वाले दिनों में संसद को मैं नहीं चलने दूंगा। जबतक देश से शिक्षा माफि याओं और प्रश्न पत्र लीक में शामिल लोगों पर करवाई नहीं होगी तबतक आंदोलन जारी रहेगा।

सांसद पप्पू यादव ने कहा कि बिहार की जनता ने बिहार बंद का समर्थन किया है। बंद को अपना समर्थन देनें के लिए बिहार की जनता का आभार है। प्रेमचंद सिंह ने बिहार बंद कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि सरकार को री एग्जाम लेना होगा। राजेश पप्पू ने बंद को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार सरकार छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ कर रही है। बिहार बंद कराने में राघवेंद्र कुशवाहा, प्रेमचंद सिंह, राजेश रंजन पप्पू, अभिजीत सिंह, मंजय लाल राय, राजू दानवीर,सहित हजारों कार्यकर्ता शामिल थे।

2025 में 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य हासिल करना है : उमेश

बोलें बिहार के मानचित्र में महनार को श्रेष्ठ स्थान दिलाना हमारा संकल्प

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

आगामी बिहार विधानसभा चुनाव तैयारियों के मद्देनजर रविवार को महनार विधानसभा अंतर्गत अंधरावड़ के वालेश्वर सिंह सुदामा देवी महाविद्यालय में बूथ स्तरीय कार्यकर्ता पंचायत एवं प्रखंड कार्यकारिणी की संगठनात्मक बैठक सम्पन्न हुई। इस दौरान निचली इकाई तक संगठन की मजबूती के लिए विस्तृत रूपरेखा तय की गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बिहार जदयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश सिंह कुशवाहा ने कहा कि कड़के की ठंड के बावजूद आज इस कार्यक्रम की शानदार उपस्थिति से यह तय हो गया है कि महनार में न्याय के साथ विकास का झंडा पूरी बुलंदी से लहराएगा। श्री कुशवाहा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने महनार के बेटे को प्रदेश अध्यक्ष के रूप में पूरे बिहार के संगठन की जिम्मेदारी सौंपी है और महनारवासियों के असीम स्नेह एवं आशीर्वाद से मिली ऊर्जा ही मुझे दिन-रात काम करने के लिए प्रेरित करती है। साथ ही उन्होंने कहा कि मेरा जीवन महनारवासियों की सेवा के लिए समर्पित है। यहां के जनप्रतिनिधि के रूप में मैंने पूरी ईमानदारी से काम किया है और सात जन्म में भी महनार की जनता का कर्ज उतारा नहीं जा सकता है।

श्री कुशवाहा ने कहा कि प्रगति यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कई विकासात्मक योजनाओं के लिए महनार को 125 करोड़ रुपये की सौगात दी है, जिससे क्षेत्र का कायाकल्प होगा। इस इलाके में सड़क, शिक्षा, बिजली, स्वास्थ्य और रोजगार के क्षेत्र में ऐतिहासिक कार्य हुए हैं। हमारा संकल्प बिहार के मानचित्र में महनार को श्रेष्ठ स्थान दिलाना है। श्री कुशवाहा ने कहा कि झूठ फैलाकर भटकाने वाली ताकतों से हमें सचेत रहना है। लोकसभा और विधानसभा उपचुनाव परिणाम ने पुनः यह साबित कर दिया है कि बिहार की राजनीति में नीतीश कुमार का न कोई विकल्प था, न है और ना ही होगा। हमारे नेता समाजवादी आदर्शों पर चलते हुए हमेशा जनता की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक उन्नति के लिए काम करते हैं। उन्होंने कहा कि एनडीए घटक दलों के साथ समन्वय स्थापित 2025 में 225 सीटों पर जीत का लक्ष्य हासिल करना है।

विधानपार्षद सह कोषाध्यक्ष ललन कुमार सर्राफ ने कहा कि हमारे नेता ने 19 वर्षों तक बिहार की सेवा की है। उन्होंने पूरे 14 करोड़ बिहारवासियों को हमेशा अपना परिवार माना है और सबकी तरक्की व उन्नति के लिए दिनरात काम कर रहे हैं। श्री सर्राफ ने कहा कि महिलाओं के आह्वान पर ही श्री नीतीश कुमार ने शराबबंदी कानून लागू किया जिसका हमारे समाज पर व्यापक सकारात्मक असर हुआ है। देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार के लिए अपना खजाना खोल दिया है।

उक्त मौके पर शिक्षा प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष सुनील कुमार, प्रमंडलीय प्रभारी राणा रणधीर सिंह चैहान, वैशाली जिला अध्यक्ष सुभाषचंद्र सिंह, प्रदेश महासचिव रामनाथ रमण, राकेश रंजन सिंह, मनोज पटेल, महनार प्रखंड अध्यक्ष अरुण राय, जंदाहा प्रखंड अध्यक्ष अनूप कुशवाहा सहित पार्टी के वरीय नेतागण, स्थानीय पदाधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में कार्यकर्तागण मौजूद रहे।

सैंकडों करोडों रुपए की सौगात से मधुबनी जिले को लगेंगे विकास के पंख: अभिषेक

पटना, प्रात : किरण संवाददाता

जद (यू0) प्रदेश प्रवक्ता श्री अभिषेक झा ने कहा कि विकासपुरुष माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार की प्राथमिकताओं में विकसित बिहार सर्वोच्च स्थान पर शामिल है। उन्होंने कहा कि अपनी प्रगति यात्रा के दौरान मधुबनी जिले में विकास कामों के लिए सैंकड़ों करोड़ों की सौगात से जिले में विकास को नए पंख लगेंगे जिससे लोगों का जीवन आसान हो सकेगा। पार्टी प्रदेश प्रवक्ता ने कहा कि ये माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार का बिहार के विकास को लेकर संकल्प ही है कि शासन संभालने के बाद अबतक उन्होंने राज्य भर की 15 यात्राएं की है और जिलों को विकास की नई सौगातें दी है। वर्तमान समय में मुख्यमंत्री की ह्यप्रगति यात्राह्ण की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वो एक बार फिर से जिलों की यात्रा पर हैं जहां वो विकास योजनाओं की समीक्षा कर रहे हैं साथ ही जिलों में सैकड़ों करोड़ों रुपए की नई योजनाओं का शिलान्यास एवं उद्घाटन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मधुबनी जिले को मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने करीब एक हजार करोड़ रुपए की 140 योजनाओं की सौगात दी है जिससे पूर्व से लंबित विकास कामों को नई गति मिल सकेगी साथ ही नई विकास योजनाओं को पंख लग सकेंगे। जिले में हुए विकास कामों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि इससे पहले भी मधुबनी जिले में विकास के दर्जनों काम हुए हैं। झंझारपुर में मेडिकल कॉलेज का निर्माण अंतिम चरण में है और जल्दी ही यहां मेडिकल की पढ़ाई का काम शुरू किया जा सकेगा साथ ही पंडौल में इंजीनियरिंग कॉलेज का निर्माण भी पूरा होने वाला है। उन्होंने कहा कि जिले के ताजपुर में महिला आईटीआई कॉलेज का निर्माण कराया गया है। साथ ही जिले के अररिया संग्राम पंचायत में मिथिला हाट का निर्माण कराया गया है जिसकी पहचान राष्ट्रीय स्तर के पर्यटन केंद्र के तौर पर है। महिला सशक्तिकरण की पक्षधर माननीय मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार की सरकार ने अररिया संग्राम में ही जीविका भवन का निर्माण कराया है। वहीं जिले के सौराठ में मिथिला आर्ट कल्चर का प्रशिक्षण दिया जाता है जहां लोगों को मिथिला आर्ट की बारीकियां सीखने को मिल रही हैं।

उन्होंने कहा कि बिहार को विकसित बनाने के मकसद से मुख्यमंत्री नीतीश कुमार दिन रात मेहनत कर रहे हैं जिससे बिहारवासियों का कल्याण हो सके।

वार्ड नं 28 में स्वछता भोज आयोजित

पटना नगर निगम वार्ड नं-28 के जमाल रोड-स्टेशन रोड कार्नर पर स्थित स्वछता प्वाइंट पर रविवार को स्वछता भोज आयोजित किया गया। जिसमें वार्ड नं.-28 के पार्षद विनय कुमार पप्पु, नुतन राजधानी अंचल के कार्यपालक पदाधिकारी प्रभात रंजन, कार्यपालक अभियंता सुशील झा, सहायक अभियंता नवीन कुमार,मुख्य सफाई निरीक्षक अमित कुमार, प्रभारी सफाई निरीक्षक अर्जुन गौरव,वार्ड नं.-28 के स्थानीय गणमान्य नागरिक गण, सभी कर्मचारियों ने स्वछता भोज में भाग लिया और वार्ड और शहर को स्वच्छ रखने के संकल्प को दोहराया।

बिहार भाजपा किसान मोर्चा का दही - चूड़ा भोज 14 को : मनोज

पटना । भाजपा प्रदेश कार्यालय परिसर में किसान मोर्चा के तत्वाधान में मकर संक्रांति के शुभ मौके पर 14 जनवरी को सुबह 10 बजे से कार्यकर्ता मिलन सह दही - चूड़ा भोज का आयोजन किया गया है। भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष मनोज कुमार सिंह ने बताया कि भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सह बिहार के राजस्व और भूमि सुधार मंत्री डॉ. दिलीप जायसवाल के नेतृत्व में आगामी 14 जनवरी को भाजपा प्रदेश कार्यालय के प्रांगण में मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर भाजपा किसान मोर्चा के द्वारा किसानों और कार्यकताओं के सम्मान में दही -चूड़ा भोज का आयोजन किया गया है। इस भोज में शामिल होने के लिए सभी जिलों के कार्यकताओं को आमंत्रण भेजा गया है। इस भोज के आयोजन में उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी, विजय सिन्हा सहित भाजपा के सभी मंत्री, सांसद, विधायक एवं सभी विधानपरिषद के सदस्यों को निमंत्रण भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा कि भाजपा के सभी प्रदेश पदाधिकारी एवं सभी मोर्चा , सभी प्रकोष्ठों के सभी संयोजक सहित सभी पदाधिकारी सहित सभी वरिष्ठ नेता एवं सभी कार्यकताओं को भोज में शामिल होने की लिए निमंत्रित किया

पुण्यतिथि पर शरद यादव को राजद कार्यालय में दी गई श्रद्धांजलि

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के राज्य कार्यालय में मंडल मसीहा पूर्व केंद्रीय मंत्री स्वर्गीय शरद यादव की द्वितीय पुण्यतिथि प्रदेश उपाध्यक्ष अशोक कुमार सिंह की अध्यक्षता में संपन्न हुई। उपस्थित नेताओं ने उनके तैलचित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके विचारों और कार्यों को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया। इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि शरद जी के विचारों और अधुरे कार्यों को पूरा करने के प्रति राजद कृत संकल्पित हैं। तथा सामाजिक न्याय और शोषितों, वंचितों, गरीबों तथा अल्पसंख्यकों को हक और अधिकार दिलाने के लिए हर स्तर पर संघर्ष और आंदोलन को तेज किया जाएगा, जिससे अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को न्याय मिल सके। इस अवसर पर राष्ट्रीय उपाध्यक्ष उदय नारायण चौधरी धरी, राष्ट्रीय प्रधान महासचिव अब्दुल बारी सिद्दीकी, पूर्व सांसद विजय कृष्ण, पूर्व मंत्री प्रो चन्द्रशेखर, राष्ट्रीय महासचिव बिनु यादव, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ तनवीर हसन, प्रदेश प्रवक्ता एजाज अहमद, मृत्युंजय तिवारी, प्रमोद सिन्हा , बंटू सिंह , मधेपुरा लोकसभा के पूर्व प्रत्याशी प्रोफेसर चंद्रदीप यादव, पूर्व विधायक भाई दिनेश सहित बड़ी संख्या में नेता और कार्यकताओं ने माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी।

सीबीआई और ईडी तो हमारे आवास में ही अपना कार्यालय खोल लें : तेजस्वी यादव

नेता प्रतिपक्ष ने आरजेडी नेताओं पर एजेंसियों की कार्रवाई को बताया राजनीतिक प्रतिशोध

पटना। आय से ज्यादा संपत्ति, मनी लॉन्ड्रिंग, और लैंड फॉर जॉब स्कैम के मामलों में राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) नेताओं की मुश्किलें कम होती नजर नहीं आ रही हैं। लालू प्रसाद यादव और तेजस्वी यादव के करीबी 9 नेताओं पर ईडी, सीबीआई और आईटी विभाग की नजरें हैं। अब तक इन पर कई छापेमारी की कार्रवाई हो चुकी है। इन छापेमारियों पर तेजस्वी यादव ने कहा की सीबीआई और ईडी को हमारे आवास में ही अपना कार्यालय खोल लेना चाहिए। उन्होंने इसे राजनीतिक प्रतिशोध करार दिया और कहा कि यह सब बिहार में होने वाले विधानसभा चुनावों को प्रभावित करने की साजिश है। जिन नेताओं पर एजेंसियों द्वारा कार्रवाई चल रही है, वे लालू-तेजस्वी के सबसे करीबी माने जाते हैं। इनमें भीम सिंह पर आय से अधिक संपत्ति मामले में जांच चल रही है। अब्दुल बारी सिद्दीकी लैंड फॉर जॉब स्कैम में नाम आ रहा है। रामचंद्र पूर्वे पर मनी लॉन्ड्रिंग की जांच चल रही है। शिवानंद तिवारी जमीन सौदे में कथित गड़बड़ी, रघुवंश प्रसाद सिंह के करीबी नेता संपत्ति विवाद वहीं अनंत सिंह मनी लॉन्ड्रिंग और अवैध संपत्ति मामले में जांच चल रही है। सुभाष यादव कथित भ्रष्टाचार के मामले, राज बब्बर के पुराने सहयोगी लैंड स्कैम, जगदानंद सिंह पर आय से अधिक संपत्ति की जांच चल रही है। छापेमारी और पूछताछ की इस कार्रवाई ने आरजेडी को बैकफुट पर ला दिया है। विधानसभा चुनाव से पहले इन मामलों का प्रभाव पार्टी की चुनावी संभावनाओं पर पड़ सकता है। तेजस्वी का आरोप है कि केंद्र सरकार राजनीतिक विरोधियों को कमजोर करने के लिए केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। उन्होंने कहा कि यह जनता के मुद्दों से ध्यान हटाने की साजिश है। विश्लेषकों का मानना है कि छापेमारी और कानूनी जांच का असर जनता पर निर्भर करेगा। लालू-तेजस्वी के समर्थकों को इससे फर्क नहीं पड़ सकता, लेकिन नए मतदाताओं और विपक्षी दलों को इसका फायदा हो सकता है। अब देखना यह है कि इन छापेमारियों का असर आगामी चुनावों में आरजेडी की सियासी रणनीति और परिणामों पर कितना पड़ता है।

सभी पर बीस ही रहेंगे सीएम नीतीश : मधुरेंदु

पटना। जन सामान्य के लिए प्रासंगिक रहेंगे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार। ये बातें जदयू नेता डॉ. मधुरेंदु पांडेय ने विज्ञप्ति जारी कर कही ।कहा कि बिहार की प्रगति के लिए मुख्यमंत्री अनवरत प्रयत्नशील रहे हैं, अतः उन्हें प्रगति देखने का हक जनता ने दिया है परंतु जिन लोगों के शासनादेश के समय जनता की हकमारी की गई हैं वे लोग कैसे जनता से रूबरू हो सकते हैं ।डॉ. मधुरेंदु पांडेय ने उन बयान वीरों को मुख्यमंत्री की तरह विकसित प्रणाली को लेकर काम करने की चुनौती दी है।

मौका था उतर बिहार की हृदयस्थली मधुबनी के खुटौना प्रखंड में की गई प्रगति यात्रा की और हाड़ कंपाने वाली ठंड के बीच लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को जनता ने अभूतपूर्व सफलता के लिए प्रासंगिक बता,स्वागत किया।

जल जीवन हरियाली की प्रगति का माहौल देख जनता और साथ गये नेता काफी खुश दिखे। आंगनबाड़ी केंद्र से लेकर गांव की सड़क का मुख्यमंत्री ने बारीकी से अवलोकन किया तथा कुछ पल बिताए। यह कहना सही होगा कि जनता की इच्छा के अनुरुप प्रगति यात्रा जारी है ।विपक्षी अपने बयानों से लाख जनता को दिग्भ्रमित करे, पर मुख्यमंत्री की कार्य संस्कृति के सामने सब तुरूप के पत्ते साबित हैं ।तभी तो बीस हैं नीतीश।

वन हेल्थ और ऑल एमपालाईमेंट की बात क्यों नहीं कर रहें : एजाज

पटना। बिहार प्रदेश राष्ट्रीय जनता दल के प्रवक्ता एजाज अहमद ने कहा कि वन नेशन वन इलेक्शन पर राजनीति करने वाली भारतीय जनता पार्टी और केंद्र सरकार वन नेशन वन एजुकेशन ,वन नेशन वन हेल्थ और वन नेशन औल एंप्लॉयमेंट की बात क्यों नहीं करती है। इस तरह की राजनीतिक कवायद लोकतंत्र और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को कमजोर करने के दृष्टिगत ही की जा रही है ।जब वन नेशन और वन इलेक्शन की बात हो रही है ,तो उसमें पंचायत चुनाव का जिक्र क्यों नहीं किया जा रहा है। जब पंचायत चुनाव अलग से होंगें तो वन नेशन वन इलेक्शन की सार्थकता कहां रह जाएगी यह सिर्फ बीजेपी का अपना राजनीतिक एजेंडा है एजाज ने आगे कहा कि केंद्र सरकार यह भी स्पष्ट करें कि जब 2034से वन नेशन वन इलेक्शन कानून को लागू करने की बात की जा रही है तो जहां विधानसभा का कार्यकाल पूरा होने से पहले क्या किया जाएगा उसे स्पष्ट करें। क्या उस विधानसभा को भंग कर दिया जाएगा। 2034 में इसे लागू करने की बात की जा रही है, तो 2039 और 32 मे होने वाले राज्यों के चुनाव को क्या रोक दिया जाएगा इस मामले में केंद्र सरकार कहीं से स्पष्ट बातें नहीं कर रही है। एजाज ने आगे कहा कि दिल्ली और बिहार के चुनावी मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए ही इस तरह के माहौल बनाए जा रहे हैं। इन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी चाहे जितना भी माहौल बना ले देश की जनता भाजपा के इस तरह के आलोकतांत्रिक और संविधान को कमजोर करने वाली कार्रवाई को पसंद नहीं करते हैं, क्योंकि इस तरह की कवायद लोकतंत्र में जनता और जनता के मुद्दे को कमजोर करेगा। लोकतंत्र में जनता को मिले अधिकारों को भी कहीं ना कहीं भाजपा अपने अनुसार चलाना चाहती है।

संक्षिप्त खबरें

तिहरे हत्याकांड के कुख्यात अपराधी को पुलिस ने किया गिरफ्तार

बेनीपुर(दरभंगा)।अनुमंडल आरक्षी कार्यालय बेनीपुर में शनिवार की देर शाम एसडीपीओ आशुतोष कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जानकारी देते हुए कहा कि बहेड़ी थाना क्षेत्र के तिहरे हत्याकांड के कुख्यात एवं इनामी अपराधी हथौड़ी निवासी चंदन सिंह की गिरफ्तारी करने में पुलिस को भारी सफलता मिली है। उन्होंने बताया कि चंदन आधा दर्जन से अधिक मामले में फरार था तथा इसके आपराधिक इतिहास का फेहरिस्ट लंबा है। इसके कारण एसटीएफ व जिला पुलिस टीम द्वारा संयुक्त रूप से नाटकीय ढंग से गिरफ्तार किया गया है। घटना के बाद से ही पुलिस इस पर हर तरह से नजर रखी हुई थी। उन्होंने बताया कि बहेड़ी थाना क्षेत्र के निमैठी गांव के निकट मुख्य सड़क पर दिनदहाड़े अनिल सिंह, मनीष सिंह एवं मुन्ना सिंह कि टाटा सफारी गाड़ी को घेर कर गोली मार कर हत्या कर दिया गया था। उन्होंने बताया कि इस मामले में सभी अभियुक्त की गिरफ्तारी हो चुकी है। चंदन पर पुलिस विभाग ने एक लाख रुपए का इनाम भी रखा था।

बेनीपुर विधायक ने किया छठ घाट का उद्घाटन

बेनीपुर(दरभंगा) विधायक प्रो विनय कुमार चौधरी ने कहा कि बिहार विकास के मामले में रफ्तार पकड़ चुकी है आने वाले समय में देश के गिने चुने राज्यों की श्रेणी में बिहार का नाम गिना जाएगा। रविवार को नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड संख्या 13 के नवकी पोखर में मुख्यमंत्री क्षेत्र विकास योजना अंतर्गत विधायक एच्छिक कोष से नवनिर्मित छठ घाट का लोकार्पण कर रहे थे ।इस दौरान उन्होंने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि बिहार में न्याय के साथ विकास की यात्रा जो दै दशक पूर्व प्रारंभ की गई वह आज द्रुति गति सेअपनी रफ्तार पकड़ चुकी है जो आने वाले समय में एक मिसाल कायम करेगी। देश में अग्रणी राज्यों में गिना जाएगा । उन्होंने कहा कि बिहार के लोकप्रिय मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का स्पष्ट घोषणा है कि बिहार में न्याय के साथ विकास की जो अवधारणा तय की गई वह निरंतर जारी है और आगे भी जारी रहेगी। इस अवसर पर जदयू के प्रखंड अध्यक्ष कृति मोहन झा, भाजपा के मंडल अध्यक्ष,कुंदन सिंह,बैजनाथ साहनी,भरत साहनी,जया भार द्वाज,पप्पू सिंह,गोविंद झा,प्रभात कुमार झा, प्रभात झा, गोविंद झा,मृत्युंजय झा सहित सैकड़ो लोग उपस्थित थे।

सेवानिवृत्त शिक्षक के घर में चोरी, पुलिस जांच में जुटी

समस्तीपुर, कपूर्रीग्राम थाना क्षेत्र के आधारपुर गांव में एक सेवानिवृत्त शिक्षक इफ्तेखार अहमद के बंद मकान में शनिवार रात चोरों ने घर का ताला तोड़कर नकदी और आभूषण पर हाथ साफ कर दिया। स्थानीय लोगों ने रविवार की मकान का ताला टूटा हुआ देख गृहस्वामी को घटना के संबंध में सूचित किया। मुजफ्फरपुर में रह रहे इफ्तेखार अहमद ने बताया कि लंबे समय से उनका घर बंद था। चोरी की सूचना मिलते ही वे घटनास्थल पहुंचे, जहां उन्होंने पाया कि मुख्य दरवाजे का ताला टूटा हुआ है और अंदर से करीब सात हजार रुपये नकद, सोने के कुछ आभूषण और घर का कुछ सामान गायब है। सूचना पाकर थानाध्यक्ष संजय सिंह पुलिस टीम के साथ मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। प्रारंभिक जांच में पुलिस ने आसपास के लोगों से पूछताछ की और क्षेत्र में लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। थानाध्यक्ष ने बताया कि घटना को गंभीरता से लिया गया है और आवेदन प्राप्त होने के बाद विधिवत प्राथमिकी दर्ज कर कार्रवाई तेज की जाएगी। ग्रामीणों में बढ़ती चोरी की घटनाओं को लेकर चिंता व्याप्त है, और वे पुलिस से सुरक्षा व्यवस्था मजबूत करने की मांग कर रहे हैं।

प्रगति यात्रा के क्रम में मधुबनी जिला पहुंचे मुख्यमंत्री नीतीश कुमार

प्रात : किरणसंवाददाता

मधुबनी प्रगति यात्रा के क्रम में मधुबनी जिला अंतर्गत खुटौना प्रखंड के दुर्गीपट्टी पंचायत में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के द्वारा कई लाभुको को दिया गया लाभ। मुख्यमंत्री के द्वारा कुल 18 दिव्यांग लाभुको के बीच बैट्री चालित ट्राईसाईकिल का वितरण किया गया।

सहायक निदेशक आशीष अमन के द्वारा बताया गया कि ट्राईसाईकिल के अलावा माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा एक विवाहित जोड़े को मुख्यमंत्री अंतजार्तीय विवाह प्रोत्साहन अनुदान योजना तथा एक अन्य विवाहित जोड़े को मुख्यमंत्री निःशक्तजन विवाह प्रोत्साहन अनुदान योजना अंतर्गत एक-एक लाख की सावधि जमा राशि भी दी गई। साथ ही 6 बच्चो को प्रायोजन योजना के तहत प्रमाण पत्र का भी वितरण किया गया। ठंड को देखते हुए कुल 30 लाभुको के बीच कंबल का भी वितरण किया। दुर्गीपट्टी में समाज कल्याण विभाग के स्टाल पर बालिका गृह, मधुबनी की बालिकाओं के द्वारा बनाए गए मधुबनी चित्रकलाओ की प्रदर्शनी भी आयोजित की गई जिसको देखकर माननीय मुख्यमंत्री काफी प्रसन्न थे तथा उनकी कला की प्रशंसा भी की। भेट के तौर पर माननीय मुख्यमंत्री को बालिक गृह की बच्चियो द्वारा बनी हुई उनकी स्केच एवं मधुबनी चित्रकला बनी हुई शॉल भी दी गई माननीय मुख्यमंत्री के द्वारा स्टाल पर लगे योजना संबंधी फ्लेक्स एवं पुस्तिका को ध्यानपूर्वक देखा गया तथा उसकी सराहना भी की गई। सभी लाभुक लाभ प्राप्त कर अति उत्साहित एवं संतुष्ट दिखे।

केवटी विधायक ने मुख्यमंत्री से प्रगति यात्रा के दौरान विभिन्न मांगो को लेकर ज्ञापन सौपा

प्रात : किरणसंवाददाता

दरभंगा केवटी विधायक डॉ मुरारी मोहन झा ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के प्रगति यात्रा के दौरान दरभंगा में एक दर्जन मांगो को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए केवटी विधानसभा क्षेत्र के आम नागरिकों के हित में पूरा करने की मांग की। वर्षों से बंद पड़े रैयाम चीनी मिल को पुनः चालू करने या उस स्थान पर अन्य उद्योग लगाने की मांग की जिससे वहां के स्थानीय लोगों के लिए रोजगार का सृजन होगा एवं राज्य सरकार को राजस्व की प्राप्ति होगी । साथ ही केवटी प्रखंड के पंचायत कोठिया और सिंहवाड़ा प्रखंड के पंचायत टेक्टार को जोड़ने वाली सड़क में बागमती नदी पर उच्चस्तरीय पूल का निर्माण,जुड़िया पूल एवं अरेई पासवान चौक के पास जर्जर पूल के स्थान पर उच्चस्तरीय पूल निर्माण करने की मांग की क्योंकि अत्यधिक वर्षा होने पर स्थानीय लोगों एवं आम नागरिकों को आवागमन में काफी खतरा मोल लेकर चचरी पूल एवं अन्य पूल को पार करना पड़ता हैं। साथ दरभंगा में प्रस्तावित मेट्रो प्रोजेक्ट में केवटी प्रखंड जो दरभंगा एयरपोर्ट से मात्र 10 किमी एवं सिंहवाड़ा प्रखंड जो ऐम्स से महज 5 किमी की दूरी पर हैं को जोड़ने की मांग की क्योंकि सुदूर ग्रामीण में रह रहे लोगों को शहर या अस्पताल आने में सुविधा प्रदान होगा साथ ही सरकार को राजस्व राजस्व की प्राप्ति भी होगी।साथ ही सिमरी चौक के पास लगातार हो रहे सड़क दुर्घटना को देखते हुए ओवरब्रिज का निर्माण ,बाजार समिति से मोहम्मदपुर तक जाने वाली सड़क का चौड़ीकरण,दरभंगा से जयनगर तक जाने वाली स्वीकृत पथ का कार्य अतिशीघ्र प्रारंभ करने साथ ही केवटी विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत एक महाविद्यालय एवं पालीटेक्निक या आईटीआई कॉलेज की स्थापना करने की मांग की।

ऑल इंडिया गुलाब रावत फूटबाल टूनार्मेंट के महिला फुटबॉल मुकाबले में गढ़ीमाई एफसी वीरगंज नेपाल 1-0 से विजयी, एलेवन बिहार पराजित

प्रात : किरणसंवाददाता

गिद्धौर। कुमार सुरेन्द्र सिंह स्टेडियम गिद्धौर में चल रहे ऑल इंडिया गुलाब रावत फुटबॉल टूनार्मेंट का महिला फुटबॉल मुकाबला गढ़ीमाई एफसी वीरगंज नेपाल बनाम एलेवन बिहार के बीच खेला गया। इस रोमांचक फुटबॉल मुकाबले में दोनों टीमों के खिलाड़ियों ने खेल के प्रारंभ से ही खेल मैदान में अपनी अदभुत खेल प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए इस ऑल इंडिया फुटबॉल टूनार्मेंट के महिला शो फुटबॉल मैच मुकाबले में कड़ा संघर्ष करते खेल मैदान में दिखी।वहीं खेल के दौरान मध्यांतर से पूर्व 20 वें मिनट में गढ़ीमाई एफसी वीरगंज नेपाल की टीम के जर्सी नंबर 10 में खेल रहे खिलाड़ी वर्षा ओली ने एक गोल दाग 1-0 से अपनी टीम नेपाल को बढ़त दिला दी। खेल के दौरान बिहार एलेवन की टीम अपनी विपक्षी टीम नेपाल पर गोल करने में असमर्थ रही।वहीं खेल समाप्ति तक बिहार एलेवन की टीम खेल को अपने पाले में खींचने के लिए काफी कड़ा संघर्ष किया लेकिन नतीजा सिफर रहा। अंततः इस महिला फुटबॉल शो मैच मुकाबले को गढ़ीमाई एफसी वीरगंज नेपाल की टीम ने 1-0 से इस महिला फुटबॉल मुकाबले को जीत लिया।बताते चलें कि इस ऑल इंडिया गुलाब रावत फुटबॉल टूनार्मेंट का फाइनल मुकबला 13 जनवरी को यूनाइटेड एफसी वीरगंज नेपाल बनाम नोथर्न रेलवे नई दिल्ली के बीच खेला जाएगा। खेल समाप्ति उपरांत मेन ऑफ द मैच का खिताब नेपाल टीम की महिला खिलाड़ी गोलकीपर वंदना कुशवाहा को पूर्व विधान पार्षद संजय प्रसाद एवं जदयू युवा नेता गुंजन कुमार के हांथों दिया गया। वहीं आयोजन समिति द्वारा विजेता टीम गढ़ीमाई वीरगंज नेपाल की टीम को विजेता ट्रॉफी एवं रनर टीम एलेवन बिहार को उप विजेता ट्रॉफी आयोजन समिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार, पूर्व विधान पार्षद संजय प्रसाद, समाजसेवी बेचन सिंह द्वारा संयुक्त रूप से दिया गया।खेल में निर्णायक की भूमिका मोहन कुमार,अरुण हांसदा, दीपक कुमार एवं संतोष कुमार पांडे ने निभायी। वहीं खेल में उदघोषक की भूमिका शुधांशू कुमार ने निभायी। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार,प्रदेश युवा जदयू नेता राजीव रावत, युवा जदयू नेता गुंजन कुमार,डॉ. शशि शेखर प्रसाद, अशोक केशरी,मनोज सिंह,गणेश सिंह,युवक क्लब के सचिव सुजीत सक्सेना,गिद्धौर सैग सेंटर के पूर्व प्रभारी नंद किशोर प्रसाद,जदयू प्रखंड अध्यक्ष विवेकानंद सिंह,जदयू नेता पंकज सिंह,दिनेश मंडल,अशोक केशरी,जासीम खाँन,सोनू राव के अलावे हजारों की संख्या में खेल प्रेमी व खिलाड़ी इस महिला फुटबॉल मुकाबले को देखने के लिये खेल मैदान में मौजूद थे।

बदलो बिहार जनसमागम को सफल बनाने की अपील

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।आरवाईए मुजफ्फरपुर के उपाध्यक्ष एजाज अहमद ने प्रेस ब्यान जारी करते हुए कहा है कि करीब दो दशक से मौजूद भाजपा-जदयू शासन के बेनकाब हो जाने के बाद बिहार आज बदलाव के मुहाने पर है।संक्रमण के इस दौर में एक तरफ जहां साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण और झूठ के सहारे भाजपा सत्ता पर पूरा कब्जा पा लेने की बेचैनी में है तो सामाजिक न्याय की परिकल्पना, विचारधारा और जनांदोलनों की ऐतिहासिक भूमिका का निषेध करने वाला एक नया दल भी जोर आजमाइश में लगा हुआ है।एजाज अहमद ने कहा है कि इसी दौर में बिहार की अवाम अपने मुद्दों के साथ जूझ रही है..लड़ रही है। अनेक जन मुद्दे, जनांदोलन की तरह बड़े होते जा रहे हैं. पिछले दिनो ह्यहक दो-वादा निभाओ अभियानह्न और ह्यबदलो बिहार न्याय यात्राह्न के दौरान बिहार में बदलाव की जनझआकांक्षा बहुत साफ उभर कर सामने आई हे।

बिहार में इसी बदलाव के संघर्ष को आगे बढ़ाने के मकसद से 9 मार्च को पटना के गांधी मैदान में ह्लबदलो बिहार महाजुटानह्ल का आयोजन होने जा रहा है. यह महाजुटान लड़ने वाली जनता के विभिन्न तबकोंझजनसमूहों व उनके आंदोलनोंझसंघर्षों का होगा, जो एक स्वर में बिहार के बदलाव की लड़ाई का ऐलान करेंगे।

इस दिशा में बिहार के सभी प्रमंडलों में बदलो बिहार जनसमागम किया जा रहा है। तिरहुत प्रमंडल के मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढी. व शिवहर जिले का जनसमागम 19जनवरी को मुजफ्फरपुर में आयोजित है।

जिस में मुख्य वक्ता : का. मीना तिवारी, पॉलिट ब्यूरो सदस्य, भाकपा-माले,ऐपवा महासचिव उपस्थित रहेंगीं।

एजाज अहमद ने जनसमागम कार्यक्रम को सफल बनाने की अपील की है। उन्होंने कहा कि यह जनसमागम बिहार के विकास और सामाजिक न्याय के नए आयाम तय करने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

विभूतिपुर विधायक का डीएनए टेस्ट करवाना पड़ेगा : भाजपा जिलाध्यक्ष शशिधर झा

प्रात : किरणसंवाददाता

विभूतिपुर/समस्तीपुर विपक्ष के नेता के पास कोई मुद्दा नहीं है ।वे लोग अब सिर्फ गाली देने पर उतारू है।उधर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री आदित्यनाथ को भी अखिलेश यादव गाली दे रहे हैं। लेकिन बीजेपी काम के बल पर आगे बढ़ते आ रहे हैं।मेरा लक्ष्य सिर्फ विभूतिपुर ही नहीं समस्तीपुर के 10 विधानसभा के साथ साथ बिहार के सभी सीटों पर है। हमें वन बूथ टेन यूथ को सकार करना है। वहीं विभूतिपुर विधायक द्वारा बोले गए गौ मांस पर तंज कसते हुए कहा कि एक सनातनी ऐसा नहीं बोल सकता है। विभूतिपुर विधायक का डीएनए टेस्ट करवाने की जरूरत है। उक्त बातें विभूतिपुर विधानसभा अंतर्गत कल्याणपुर उत्तर पंचायत स्थित मां भगवती कोल्ड स्टोरेज परिसर में आयोजित भाजपा के नवनिर्वाचित जिला अध्यक्ष व मंडल अध्यक्ष के सम्मान समारोह मे बीजेपी के दक्षिणी जिला अध्यक्ष शशिधर झा ने कहा। वहीं उत्तरी क्षेत्र के जिला अध्यक्ष नीलम सहनी ने स्वामी विवेकानंद के जयंती पर उन्हें याद करते हुए संगठन मजबूत कर सभी विधानसभा सीट से बीजेपी को जिताने की बात कही।कार्यक्रम की अध्यक्षता बीजेपी विधानसभा संयोजक अरविंद कुशवाहा एवं संचालन बाबू प्रसाद शर्मा ने किया। समारोह की शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर किया गया।वहीं नव निर्वाचित उत्तरी के जिला अध्यक्ष नीलम सहनी एवं दक्षिणी के जिला अध्यक्ष शशिधर झा तथा पांचों नवनिर्वाचित मंडल अध्यक्ष दीपक कुमार साह, चन्द्र मणि प्रसाद सिंह, मनोज कुशवाहा, राहुल कुमार, संजय कुमार चौधरी सहित आगत सभी अतिथियों को चादर, पाग,माला आदि भेंट कर सम्मानित किया गया।समारोह को ,विधान पार्षद तरुण कुमार चौधरी, पूर्व जिलाध्यक्ष उपेन्द्र कुशवाहा,राम सुमिरन सिंह, कृष्ण देव प्रसाद सिंह,गुंजन कुमार मिश्र, पूर्व प्रमुख रूपांजलि कुमारी आदि ने संबोधित किया। पूर्व जिला उपाध्यक्ष सतीश झा के धन्यवाद ज्ञापन के साथ ही समारोह संपन्न हुई। मौके पर सैकड़ों की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद थे।

वार्षिकोत्सव बाल सह युवा जागृति समारोह कार्यक्रम को लेकर निकाला गया भव्य प्रभात फेरी

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] प्रखंड अंतर्गत बैजला के निःशुल्क बाल संस्कार शाला के वार्षिकोत्सव बाल सह युवा जागृति समारोह कार्यक्रम को लेकर भव्य आमंत्रण शोभा यात्रा प्रभात फेरी बैजला के हाई स्कूल मैदान से निकाली गई जिसमें करीब पांच सौ बच्चें व नौजवान शामिल हुए। इस शोभा यात्रा का संचालन मनीष कुमार व विशाल कुमार ने सम्मिलित रूप से किया। आदर्श युवा प्रकोष्ठ प्रभारी आशीष कुमार ने कहा कि 19 जनवरी दिन रविवार को सुबह 9:30 बजे से बैजला के हाई स्कूल मैदान में होने वाले कार्यक्रम के लिए घूम-घूम लोगों को आमंत्रित किया जा रहा है। शिक्षा के प्रति अभिरुचि जगाने को लेकर बच्चों के साथ अभिभावकों से आग्रह किया गया। अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा इकाई दिया दिल्ली और संभवम् क्लचर एडेकमी के चीफ कॉर्डिनेटर, यूथ मोटिवेटर, मैनेजर एट हिटैची इनर्जी मनीष कुमार सिंह और पटना के प्रसिद्ध शिक्षक गुरु रहमान युवा मन को संबोधित एवं मार्गदर्शन करेंगे। इनके साथ ही कई गणमान्य लोग उपस्थित होंगे। इस कार्यक्रम में कई सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत होगा जो युवाओं के अंदर छिपी संभावनाओं को जगाने का प्रयास करेगा। बिहार की गौरव-गाथा को दिखाने के लिए बिहार झांकी बहुत ही मनोरंजक और आकर्षक है। वातावरण की छाप हर मनुष्य पर पड़ती है। वातावरण को परिष्कृत करने के लिए जन-जन में उत्कृष्टता की भावना को जगाने का माहौल तैयार किया जा रहा है। स्वस्थ शरीर,स्वच्छ मन और सभ्य समाज इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है। यह कार्यक्रम निश्चित रूप से युवा मन को उज्ज्वल भविष्य प्रदान करेंगी। इस शोभा यात्रा में मुख्य रूप से प्रदीप यादव, नीतीश कुमार प्रिंस, अभिषेक कुमार, नीतीश कुमार सूर्य, रंजीत यादव, राकेश, आशीष, रूपेश, बालमुकुं, अरुण, सचिन, बिट्टू , संदीप, वरुण विश्वकर्मा, साजन सहित कई लोग मौजूद थे।

जिलाधिकारी ने किया नवोदय विद्यालय का निरीक्षण, दिए आवश्यक निर्देश

प्रात : किरण संवाददाता

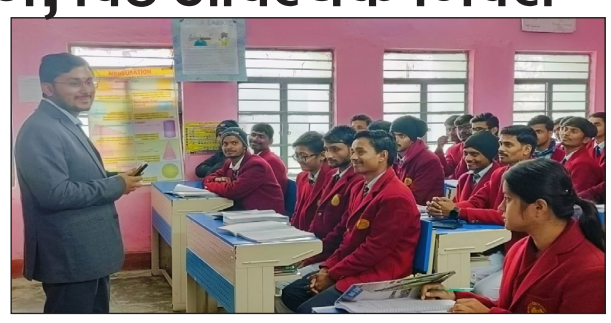

मुजफ्फरपुर।विद्यालय में शैक्षणिक सुधार , कुशल प्रबंधन तथा सुचारू संचालन सुनिश्चित करने हेतु जिला पदाधिकारी सुब्रत कुमार सेन ने बच्चों के हित में कुढ़नी के खरौनाडीह स्थित जवाहर नवोदय विद्यालय का शनिवार को निरीक्षण किया तथा सरकारी मानदंड के अनुरूप बच्चों के हित में सभी आवश्यक व्यवस्था शीघ्र सुनिश्चित करने का निर्देश दिया। इस दौरान जिलाधिकारी ने वर्ग कक्ष, छात्रों की उपस्थिति, शिक्षक कक्ष, पुस्तकालय, छात्रावास की स्थिति, भोजन की गुणवत्ता एवं मेस रूम, शौचालय की स्थिति, साफ-सफाई, पेयजल की व्यवस्था आदि का निरीक्षण किया तथा छात्रों से भी आवश्यक फीडबैक प्राप्त किया। मौके पर उपस्थित प्राचार्य एवं अधिकारियों को सक्रिय एवं तत्पर होकर सभी आवश्यक व्यवस्था शीघ्र सुनिश्चित करने तथा शैक्षणिक सुधार लाने को कहा। उन्होंने ने बच्चों के वर्ग कक्ष में जाकर उनसे संवाद स्थापित किया।इस दौरान जिलाधिकारी ने बच्चों की पढ़ाई - लिखाई, खेल गतिविधियां, स्कूल में दी जा रही सुविधाएं सहित कई अन्य विंदुओं पर फीडबैक प्राप्त किया तथा उन्हें कई प्रेरक विचारों, जीवन में अनुशासन एवं समय का महत्व आदि से अवगत कराया। जिलाधिकारी ने सिविल सर्जन को विद्यालय में एएनएम एवं चिकित्सक का टीम गठित कर प्रत्येक शनिवार को पूर्वाह्न 11 बजे से बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण करने तथा समुचित रूप से नियमित इलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

उन्होंने विद्यालय में संचालित पुस्तकालय का भी निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने विद्यालय में डिजिटल लाइब्रेरी का निर्माण करने हेतु प्रस्ताव भेजने का निर्देश दिया। साथ ही पुस्तकालय में बच्चों की उपस्थिति सुनिश्चित करने को कहा।इस दौरान जिलाधिकारी ने स्कूल परिसर एवं शौचालय की नियमित साफ- सफाई की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कुढ़नी के प्रखंड विकास पदाधिकारी एवं कार्यक्रम पदाधिकारी मनरेगा को परिसर में मिट्टी भराई एवं समतलीकरण करने तथा परिसर में आवश्यकतानुसार सोलर लाइट का अधिष्ठापन करने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने प्राचार्य को बच्चों की उपस्थिति बढ़ाने को कहा। साथ ही अनुमंडल पदाधिकारी पश्चिमी एवं जिला शिक्षा पदाधिकारी को समय-समय पर विद्यालय का भ्रमण कर निरीक्षण करने का निर्देश दिया। उन्होंने छात्रावास का भी निरीक्षण कर भोजन की गुणवत्ता में सुधार लाने तथा मेनू के अनुरूप भोजन उपलब्ध कराने को कहा। उन्होंने बच्चों के लिए शुद्ध पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराने हेतु अतिरिक्त चापाकल लगाने का निर्देश कार्यपालक अभियंता पीएचईडी को दिया। जिलाधिकारी के साथ सिविल सर्जन डॉ अजय कुमार,अनुमंडल पदाधिकारी पश्चिमी सुश्री श्रेयाश्री , जिला शिक्षा पदाधिकारी अजय कुमार सिंह, विद्यालय प्राचार्य उपस्थित थे।

स्वामी विवेकानंद का सम्पूर्ण जीवन प्रेरणादायी : कुलपति

प्रात : किरणसंवाददाता

दरभंगा। संस्कृत विश्वविद्यालय के युवा चेतना मंच एवं म अ रमेश्वरलता संस्कृत महाविधालय के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर रविवार को युवा प्रेरणा पक्ष का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कुलपति प्रो लक्ष्मी निवास पांडेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद की सम्पूर्ण जीवनी युवाओं के लिए हमेशा प्रेरणादायी रही है। विवेकानंद के वेदान्त और विज्ञान विषय पर वृहत चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि संस्कृत के साथ साथ अंग्रेजी पर युवाओं को विशेष ध्यान देने की जरूरत है। ताकि वे भी विश्व पटल पर अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कर सके। वहीं विशिष्ट अतिथि एलएनएमयू के पूर्व कुलसचिव प्रो अजित कुमार सिंह ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द अध्यात्म पुरुष थे। खासकर युवाओं में अध्यात्म चेतना को जागृत करने के लिए वे आज भी अनुकरणीय है।कार्यक्रम की अध्यक्षता आयोजक कालेज के प्रधानाचार्य डॉ दिनेश कुमार झा ने की एवं विषय प्रवर्तन हिंदी के प्रध्यापक डॉ निहार रंजन सिंह ने किया। समारोह को सफल बनाने में डॉ. ममता पाण्डेय, डॉ रामसेवक क्षा, डॉ प्रियंका तिवारी, डॉ मुकेश प्रसाद निराला, पंकज मोहन झा महत्वपूर्ण भूमिका रही। कार्यक्रम का संचालन डॉ सुधीर कुमार ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ सुनील कुमार ने किया। वही बागमती पीजी छात्रावास ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय में युवा दिवस के शुभ अवसर पर स्वामी विवेकानंद जी का जयंती मनायी गई। जिसमें बतौर मुख्य अतिथि किसान मोर्चा जिलाध्यक्ष संजय कुमार सिंह उर्फ पप्पू सिंह भाग लिए, एवं स्वामी विवेकानंद जी के तस्वीर पर माल्यार्पण करते हुए प्रणाम किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता करनी सेना प्रदेश अध्यक्ष सागर सिंह जी ने किया, इस कार्यक्रम का संचालन जीवनेश कुमार ने किया । कार्यक्रम में संजय कुमार सिंह जी ने कहा कि भारत के युवाओं को प्रखर एवं सनातनी होने की जरूरत है स्वामी विवेकानंद जी ने सनातन संस्कृति को बढ़ाने में देश ही नहीं विश्व स्तर पर प्रेरणा दिया। वही युगपुरुष स्वामी विवेकानंद जयंती समारोह का आज कायस्थ क्लव, दरभंगा के तत्वावधान में आयोजित किया गया। नाका नं-3 अवस्थित स्वामी विवेकानंद के मूर्ति पर माल्यार्पण सह पुष्पांजली समर्पित किया गया। माल्यार्पण करने वालों में नगर निगम पार्षद सोनी पूर्वे, अमरेश्वरी चरण सिन्हा, ई बसंत कुमार श्रीवास्तव,आशुतोष कुमार वर्मा, डॉ नवीन कुमार, अमिताभ कुमार सिन्हा, सुरेन्द्र नाथ श्रीवास्तव, जलज कुमार गोपी,नीरज कुमार चंदन, अशोक कुमार, विमलेश कुमार,प्रवीण कुमार , बंटी , रंजीत कुमार, पंकज कुमार आदि सम्मलित हुए । इस अवसर पर युगपुरुष स्वामी विवेकानंद विषय पर विचार गोष्ठी भी आयोजित किया गया। जिसमें वक्ताओं ने उनके वसूलों पर विस्तार पूर्वक चर्चा किया।

आम बजट में उत्तर बिहार के औद्योगिक एवं कृषि क्षेत्र को तरजीह देने का सुझाव

प्रात : किरण संवाददाता

मुजफ्फरपुर।आम बजट पूर्व नागरिक एवं संगठन संस्थानों से वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मांगे गए सुझाव के आलोक में नगर निगम मार्केट्स ट्रेडर्स एसोसिएशन मुजफ्फरपुर के मुख्य संरक्षक एवं आरआइएफएएच चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज मुजफ्फरपुर के अध्यक्ष मोहम्मद इश्तेयाक ने वित्त मंत्रालय को ईमेल ' भेज कर जीएसटी, व्यापार नीति ,औद्योगिक विकास एवं बिहार जैसे औद्योगिक एवं कृषि आधारित व्यापार क्षेत्र में पिछड़े राज्य के अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने एवं विशेषकर उत्तर बिहार में कारोबारी हलचल को गति प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिया है । मोहम्मद इश्तेयाक ने कहा है कि भारत सरकार टैक्स, संग्रह का दायरा बढ़ाना चाहती है तो अन्य जो छुटे हुए उत्पाद या क्षेत्र है उसको जीएसटी के दायरे में लाए ,पहले से जो उत्पादों पर का स्लैब है उसे न बढ़ाए । जैसे टेक्सटाइल सेक्टर में 1000. से ऊपर के प्रोडक्ट पर 18% प्रस्तावित गलत है उसी तरह अन्य उत्पादों या सर्विस सेक्टर पर बढ़े हुए प्रस्तावित को लागू नहीं किया जाना चाहिए। उत्पादों का लगत एवं कंपोजिट खर्च और महंगा होगा , खुदरा दर और महंगा होगा जिससे उपभोक्ता का बजट संतुलन बिगड़ेगा तो बाजार में क्रय शक्ति में गिरावट होगी जो अर्थ व्यवस्था के लिए घातक है। उन्होंने कहा कि मुजफ्फरपुर सहित उत्तर एवं पूर्वी बिहार के जिलों में लगभग सभी व्यापारिक क्षेत्रों में हाल के वर्षों में गिरावट देखने को मिला है जिसका का कारण भीषण यातायात समस्या जिससे फुट फाल में भारी किरावट , शहरीकरण सुविधाओं का धीमा रफ्तार और उत्तर एवं पूर्वी बिहार के व्यवसायियों एवं खरीदार का अपने लोकल शहरों में खरीदारी को प्राथमिकता देना है । मोहम्मद इश्तेयाक ने कहा कि औद्योगिक विकास के नाम पर सरकार की जीरो पॉलिसी भी बाधक रही है ,जो अब वियाडा जैसे औद्योगिक क्षेत्र का विकास कर एवं कृषि उत्पादों में संभावना तलाश कर रोजगारोन्मुख नीतियों का सृजन कर एवं दूसरे राज्यों के निवेशकों को प्रोत्साहित करके किया जा सकता है । उन्होंने कहा कि सरकार की व्यावसायिक एवं औद्योगिक नीति बिजनेश फ्रेंडली हो जो अफसरशाही और भ्रष्टाचार से मुक्त होना चाहिए। कुटीर एवं छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहन लोन एवं प्रशिक्षण दे कर ,उनके उत्पादों को राष्ट्रीय स्तर पर बाजार मुहैया कराकर उनको स्थापित किया जा सकता।उन्होंने कहा कि उद्योग विभाग द्वारा औद्योगिक सेमिनार ,कार्यशाला एवं उत्पादों की प्रदर्शनों का समय समय पर आयोजन का जिला में ह्लकारोबारी हलचलह्ल को गति दिया जा सकता है । सरल एवं विकासोन्मुखी औद्योगिक और व्यापार नीति से ही जिला एवं बिहार राज्य के अर्थव्यवस्था को मजबूती दिया जा सकता है । मोहम्मद इश्तेयाक ने आशा जताते हुए कहा कि अब संतोषप्रद पहल की शुरूआत हो चुका है ,सरकार की इच्छाशक्ति अब इस दिशा में दिखने लगा है जो एक सकारात्मक संदेश है ।

पंचायत समिति की एक अहम बैठक, ली गईं कई निर्णय

प्रात : किरण संवाददाता

बिरौल(दरभंगा)।सुपौल के डुमरी गांव में पंचायत समिति की एक अहम बैठक प्रखंड पसस अध्यक्ष बिहारी प्रसाद की ठाकुर की अध्यक्षता में हुई। इसमें वर्तमान प्रखंड प्रमुख मुखी देवी के किर्या कलाप से को लेकर नाराजगी जाहिर की। बैठक में छह मुद्दों पर चर्चा की गयी।प्रखंड पंचायत समिति अध्यक्ष श्री ठाकुर ने कहा कि वितीय वर्ष 2024-25 मद पन्द्रहवीं वित्त आयोग में कुछ पंचायत ऐसे भी है,जहा एक भी योजना का इंट्री नही किया गया,जो जो प्रमुख द्वारा सौतेला व्यवहार किया है।इसके अलावे 15 वी आयोग योजना में बहुत ऐसे भी है,जहा 7 हजार रुपये का इंट्री है,अपने चहेते में 45 लाख का इंट्री किया गया है। श्री ठाकुर ने बैठक में कहा कि सरकार का स्पस्ट गाइड लाइन है कि पंचायत समिति की बैठक तीन महीना में होना चाहिये, लेकिन अभी तक एक साल में मात्र एक ही बैठक हुई है। उन्होंने कहा कि प्रमुख कभी अपने कार्यालय में नहीं आती है। अपने लोगो को भेज कर कार्यालय चलाती है। जो प्रमुख के दफ्तर में बैठे रहते है। श्री ठाकुर ने कहा कि हम समिति सदस्यों ने निर्णय लिया है कि जब तक प्रमुख का अनुसंसा खत्म करके ही दम लेगे।मौके पर लदहो कृष्णा कुमार राम, नेउरी अशोक कुमार झा, दिनेश यादव, साहो मजहर हुसैन खान, पट निया अरविंद कुमार पौद्दार, पड़री मो सफीक समेत अन्य समिति सदस्य मौजूद थे।

जिले वासियों को जल्द मिलेगा गीता बाबू रोड़ में बनने वाले श्रीकृष्ण सेतु सम्पर्क पथ : डीएम

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । मुंगेर से बेगूसराय एवं खगड़िया जाने हेतु गीता बाबू रोड में बन रहे संपर्क पथ को जल्द ही जिलेवासियों को तोहफे के रूप में मिलने वाला है। यह पथ गीता बाबू रोड में श्री कृष्ण सेतु संपर्क पथ के रूप में बनाया जा रहा है। शनिवार को जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह द्वारा इस पथ के निर्माण कार्य का स्थलीय निरीक्षण किया गया। उन्होंने संवेदक को शीघ्र कार्य पूर्ण करने का निर्देश दिया। आगामी 20 जनवरी 2025 तक यह पथ आम लोगों के सुविधार्थ उपलब्ध करा दिया जाएगा, जिससे श्री कृष्ण सेतु पर आने जाने वाले यात्रियों को अब सुगमता पूर्वक यात्रा का लाभ मिलेगा। जिलाधिकारी ने कहा कि मुंगेर से श्री कृष्ण सेतु होते हुए बेगूसराय एवं खगड़िया जाने हेतु एकमात्र लिंक पथ गीता बाबू रोड की ओर से प्रारंभ किया गया था, जो काफी जर्जर था और इस हो कर आने जाने वाले सभी यात्रियों तथा वाहनों को काफी परेशानी का भी सामना करना पड़ता था। आम यात्रियों की परेशानियों को देखते हुए इस पथ के निर्माण कराए जाने हेतु नगर आयुक्त को निर्देशित किया गया था। आदेशानुसार कार्य प्रारंभ किया गया, जिसका आज स्थलीय निरीक्षण किया गया है। पूरी गुणवत्ता के साथ चल रहे निर्माण कार्य अंतिम चरण में है। संवेदक को शीघ्र कार्य पूर्ण करने का निर्देश दिया गया है। 20 जनवरी को यह पथ आमजन के सुविधार्थ उपलब्ध करा दिया जाएगा। इस पथ के निर्माण से आम यात्रियों को श्री कृष्ण सेतु पर चढ़ने उतरने में काफी सुविधा होगी। इस अवसर पर प्रभारी नगर आयुक्त कुमार अभिषेक सहित अन्य उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरें

बाइक में स्कार्पियो ने मारी टक्कर, पिता पुत्र हुआ घायल

जमुई [झाझा] एनएच 333 झाझा सोनो मुख्य मार्ग पर स्थित भीठरा पेट्रोल पंप के समीप शनिवार की रात्रि बेलगाम तेज रफ्तार स्कार्पियो के द्वारा बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया जिससे बाइक पर बैठे पिता पुत्र घायल हो गया। घायल की पहचान सोनो थानाक्षेत्र खुर्द महापुर गांव निवासी अजय कुमार और उसका पुत्र सौरभ कुमार के रूप में हुई। घटना स्थल पर घायल अवस्था मे गिरे पड़े पिता पुत्र को देखकर लोगों ने मदद की और झाझा में रहने वाले उसके रिश्तेदार को सूचना दिया जिसके बाद लोग घटना स्थल पर पहुंचा और घायलों को उठाकर इलाज के लिए रेफरल अस्पताल लाया जहां डॉक्टर सदाब अहमद के द्वारा घायलों का इलाज किया और बेहतर इलाज के लिए सदर अस्पताल जमुई रेफर कर दिया। घायल अजय ने बताया कि झाझा में अपने घर से पुराने घर खुर्द महापुर बाइक से जा रहा था। ठंड के कारण धीमी गति से बाइक चलाते जब पेट्रोल पंप के पास पहुंचा तो सामने से आ रही तेज रफ्तार स्कार्पियो मेरे दिशा में आकर बाइक में जोरदार टक्कर मार दिया और मौके स्थल से फरार हो गया।

डीएम ने राजा रानी तलाब के सौंदर्यीकरण कार्य का स्थलीय जांच करने पहुचें

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर । जिला मुख्यालय स्थित राजा रानी तालाब के सौंदर्यीकरण कार्य का शनिवार को जिलाधिकारी अवनीश कुमार सिंह द्वारा स्थलीय निरीक्षण किया गया। विगत दिनों जिलाधिकारी द्वारा इसे आमजन के सुविधार्थ खोलने हेतु इसके सौंदर्यीकरण एवं साफ सफाई के निर्देश दिए गए थे। आज इसी क्रम में उनके द्वारा स्थलीय निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर प्रभारी नगर आयुक्त कुमार अभिषेक उपस्थित थे। जिलाधिकारी ने कहा कि गत माह ही इस तालाब को आम जन के सुविधार्थ उपलब्ध कराने हेतु इसके साफ सफाई और अन्य सौंदर्यीकरण कार्य को करने का निर्देश दिया गया था। आज इसी क्रम में पुनः इसका स्थलीय निरीक्षण कर यहां आम जन के लिए वॉशरूम आदि निर्माण का भी निर्देश दिया गया है। साथ ही रंग रोगन और जल जीवन हरियाली के तेज पर पेंटिंग करने का भी निर्देश दिया गया है। शीघ्र ही इसे आमजन के लिए खोल दिया जाएगा। जिलाधिकारी ने कहा कि इससे स्थानीय लोगों को न सिर्फ सुबह सुबह टहलने का आनंद प्राप्त होगा, बल्कि लोग यहां वोटिंग आदि का भी लुत्फ उठा सकेंगे। सफाई एवं अन्य सौंदर्यीकरण कार्य अंतिम चरण में है। शीघ्र ही यह तालाब स्थानीय लोगों को एक नए रूप में आकर्षित करेगा। लोग यहां के प्राकृतिक दृश्य तथा वोटिंग आदि का लुत्फ उठा सकेंगे। यह शहरवासियों के लिए एक रमणीक स्थल के साथ ही मनोरंजन का अच्छा साधन होगा। यहां लगे फाउंटेन से योगाश्रम का नजारा भी लोगों को काफी आकर्षित करेगा जो एक सेल्फी प्वाईंट के रूप में भी विकसित होगा।

आग के चपेट में दस बीघा धान जल कर खाक

प्रात : किरण संवाददाता

संग्रामपुर (मुंगेर)। संग्रामपुर नगर पंचायत के अंतर्गत झिकुली गाँव मे एक गरीब किसान रणधीर सिंह के धान के टाल मे अचानक आग लग गया आग की लपटे इतना तेज था की लगभग दस बीघा धान टाल जल गया आग की जानकारी जब ग्रामीणों को हुआ तो आस पास के ग्रामीणों एवं दमकल के प्रयास से आग पर कड़ी मसकत करने के बाद काबू पाया गया वहीं किसान रणधीर सिंह ने बताया की गाँव मे भोज खा करके अपने दुकान पर सोने जा रहे थे तो अचानक धान के टाल मे आग लगा हुआ दिखाई पड़ा आग को देखते ही हमने सोर करना शुरू कर दिए सोर सुनकरके आस पास के ग्रामीण इकठ्ठा हो गए कोई बाल्टी पानी इत्यादि ले कर के आग को बुझाने मे लग गए वहीं ग्रामीणों के दुरा अग्नि सामक को बुलाया गया अग्नि सामक को भी कड़ी मसकत करने के बाद आग पर काबू पाया गया रणधीर सिंह ने बताया की इस बार फाल्गुन माह मे बेटी का शादी करने का था इसी को लेकर धान लेट से तैयार करने की प्लान था इसमें लगभग तीन सो पचास मन धान का नुकसान हुआ हैं इसको ले करके संग्रामपुर थाना और अंचल अधिकारी को आवेदन दिया गया हैं जिससे उचित मुआवजा मिल सके इस सन्दर्भ मे अंचल अधिकारी ने बताया मामले जांच कर मुआवजा दिया जायेगा फिलहाल आग लगने का पता नहीं चल सका हैं।

महिला के साथ घर में घुसकर कि गई मारपीट

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] घर मे घुसकर एक महिला के साथ हुई मारपीट की घटना को लेकर महिला ने अपने ही रिश्तेदारों के खिलाफ थाना में प्राथमिकी दर्ज कराई है। इस संदर्भ में अलकवारा गांव निवासी संजय यादव की पत्नी रिंकू देवी ने दर्ज आवेदन में बताई की मै अपने घर पर थी कि तभी भैसुर ओंकार यादव, बृजनंदन, देवर राजकुमार गौतनी उर्मिला देवी, सीमा देवी, हेमंती देवी, ज्योति कुमारी, रेणुका कुमारी, सिमरन कुमारी सभी लोग गाली गलौज करते हुए घर मे घुस गया और भैसुर झाडू से मारने लगा और अन्य ने लाठी डंडा से मारपीट किया। पीड़िता ने आगे बताया कि भैसुर बृजनंदन अक्सर शराब के नशे में रात्रि में घर पर दरवाजा खटखटाया करता है और गाली गलौज करते रहता है। पीड़िता ने आगे बताया कि दो कट्ठा जमीन भी उनलोगों ने धोखे से लिखा लिया है।

ऑल इंडिया गुलाब रावत मेमोरियल फुटबॉल टूनार्मेंट के फाइनल मुकाबले का बिहार सरकार के खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता करेंगे उदघाटन

- पूर्व मंत्री दामोदर रावत सह वर्तमान झाझा विधायक उदघाटन समारोह में रहेंगे मौजूद
- आज को होगा टूनार्मेंट का फाइनल मुकाबला

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर. जिले के कुमार सुरेंद्र सिंह स्टेडियम गिद्धौर में 06 जनवरी से लगातार चल रहे ऑल इंडिया गुलाब रावत मेमोरियल फुटबॉल टुनार्मेंट के फाइनल मैच का उदघाटन बिहार सरकार के खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता द्वारा 13 जनवरी को किया जाएगा। इस आशय की जानकारी जदयू प्रदेश युवा नेता राजीव रावत ने दी। उन्होंने जानकारी देते हुए कहा कि आगामी 13 जनवरी को निर्धारित कार्यक्रम के तहत सड़क मार्ग से पटना आवास से 10:30 पूर्वाहन में बख्तियारपुर सरमेरा शेखपुरा सिकंदरा जमुई होते खेल मंत्री श्री मेहता गिद्धौर पहुंचेंगे. वहीं कुमार सुरेंद्र सिंह स्टेडियम खेल मैदान में 1:30 बजे अपराहन स्व. गुलाब रावत ऑल इंडिया फुटबॉल टूनार्मेंट के फाइनल मुकाबले के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में वो भाग लेंगे। वहीं टूनार्मेंट के समापन के उपरांत 2:00 बजे अपराहन जमुई लखीसराय बढ़हिया, सिमरिया, बेगूसराय होते हुए अपने पैतृक आवास किरतौल 600:बजे अपराहन पहुंचकर रात्रि विश्राम करेंगे। वहीं खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता के गिद्धौर आगमन पर स्वागत को लेकर पूर्व मंत्री सह वर्तमान विधायक दामोदर रावत पार्टी कार्यकताओं के साथ गिद्धौर में उनके स्वागत को ले मौजूद रहेंगे। इस टूनार्मेंट को लेकर जदयू प्रदेश युवा नेता राजीव रावत ने जानकारी देते हुए बताया कि बीते कई वर्षों से गिद्धौर का यह इलाका फुटबॉल खेल एवं खेल प्रेमियों के लिए जाना जाता रहा है। यहां के लोगों का फुटबॉल खेल के प्रति गहरा लगाव कई दशकों से रहा है, खेल प्रेमी, एवं युवा खिलाड़ियों के फुटबाल के प्रति जुड़ाव एवं लगाव को देखते हुए मेरे दादा समाजसेवी स्व. गुलाब रावत की स्मृति में यहां यह टूनार्मेंट हर वर्ष आयोजित करवाया जाता है। इधर टूनार्मेंट को लेकर आयोजन समिति के अध्यक्ष शैलेंद्र कुमार ने जानकारी देते हुए बताया कि टूनार्मेंट का फाइनल मुकाबला नोथर्न रेलवे दिल्ली बनाम यूनाइटेड एफ सी वीरगंज नेपाल के बीच सोमवार 13 जनवरी को आयोजित होगा। इस मौके पर आयोजन समिति के अध्यक्ष शैलेन्द्र कुमार, सचिव सुजीत सक्सेना, देवेन्द्र रावत, गुरूदत्त प्रसाद, अशोक केशरी, संतोष रावत, जासीम खान, सोनू कुमार, नियाज खान कई आयोजन समिति के कई सदस्य गण टूनार्मेंट के फाइनल मुकाबले के आयोजन को ले विधि व्यवस्था में जुटे हुए हैं।

केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन का हुआ वार्षिक अधिवेशन

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा] गिरिडीह जिला स्थिग प्रसिद्ध स्थल खंडोली में केमिस्ट एंड ड्रगिस्ट एसोसिएशन झाझा की ओर से रविवार को पिकनिक सह वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हुआ। वही एसोसिएशन के सदस्यों ने प्रसिद्ध स्थल का लुत्फ भी उठाया। अधिवेशन की अध्यक्षता एसोसिएशन के अध्यक्ष सुरेश यादव ने किया। मौके पर उपस्थित एसोसिएशन के अन्य सदस्यों को सम्बोधित करते हुए अध्यक्ष ने कहा दवा दुकानदार समाज मे एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अध्यक्ष ने दवा दुकानदारों से अनुरोध किया कि सरकार की ओर से जो भी गाइड लाइन है उसका पालन सभी दवा दुकानदार, बिक्रेताओं को शत प्रतिशत करना है। अधिवेशन में मासिक बैठक और अन्य कई बिंदुओ पर भी चर्चा किया। दवा दुकानदार हर वक्त समाज की सेवा में लगे रहते है यानी अगर बाजार की सभी दुकान बंद है तो एकमात्र आवश्यक सेवा देने में दवा की दुकान ही खुली रहती है। ऐसे में दवा दुकानदारों के लिए बनी यह एसोसिएशन अपने आप मे एक अलग ही पहचान स्थापित करता है। आज भी कई समस्याओं से दवा दुकानदारों को गुजरना पड़ता है जिसमे एसोसिएशन उनके साथ खड़ा होकर उनकी समस्याओं का समाधान करता है। इसलिए जो दवा दुकानदार एसोसिएशन से नही जुड़े हुए है वे दवा दुकानदार, बिक्रेता एसोसिएशन से जुड़कर अपनी सदस्यता ग्रहण करे जिससे एसोसिएशन को और भी मजबूती मिलेगा। बैठक में सचिव एसोसिएशन के सचिव विजय कुमार, कोषाध्यक्ष निर्मल कुमार, सुभाष बरनवाल, सुबोध कुमार, विकास बरनवाल सहित एसोसिएशन के बड़ी संख्या में सदस्य मौजूद थे ।

जमालपुर कारखाना के उपेक्षा व हर षड्यंत्र का करारा जवाब देगी संघर्ष मोर्चा

कारखाना सहित रेल से जुड़े अन्य इकाई के विकास को लेकर मोर्चा के नेता रहे धरना पर

प्रात : किरण संवाददाता

मुंगेर। जमालपुर कारखाना के विकास डीजल शेड, रेलवे विश्वविद्यालय, भष्ट्र अधिकारी व आरपीएफ, मॉडल स्टेशन के पूर्व दिशा की और निकास, वाईलेग पर स्टेशन, सफियाबाद हॉल्ट अस्पताल की आधुनिकीकरण सहित रेल से जुड़े विभिन्न सवालों को लेकर वर्षों से संघर्षरत जमालपुर रेल निर्माण कारखाना संघर्ष मोर्चा अपने चरणबद्ध आंदोलन के तहत शनिवार को मोर्चा के संयोजक सह सपा जिला अध्यक्ष पप्पू यादव के नेतृत्व में स्थानीय जुबली वेल चौक पर एकदिवसीय धरना दिया। जिसकी अध्यक्षता सीपीआई के पूर्व जिला सचिव मजदूर नेता का दिलीप कुमार ने किया एवं संचालन लोहिया वाहिनी के प्रदेश महासचिव रविकांत झा कर रहे थे। धरना को संबोधित करते सीपीआई नेता कामरेड दिलीप कुमार मोर्चा के संयोजक पप्पू यादव राजद के प्रदेश महासचिव पंकज यादव ने कहा कि क्षेत्रीयता बाद और ओछी राजनीति के कारण जमालपुर रेल कारखाना एक अर्से से अपने विकास की वाट जोह रहा है लेकिन केंद्र सरकार की पूंजीवादी नीतियों तानाशाही प्रवृत्ति और स्थानीय जनप्रतिनिधियों की अकर्मण्यता के कारण भारतीय रेल का गौरव जमालपुर कारखाना साजिशन उपेक्षा के शिकार हो रहे हैं, जिसमें जीएम से लेकर स्थानीय अधिकारीयों की भूमिका है और संघर्ष मोर्चा इसे कतई बर्दाशत नहीं करेगी वहीं भाकपा माले के वरिष्ठ नेता अशोक सिंह वीआईपी के प्रदेश उपाध्यक्ष जफर अहमद जन सुराज के वरिष्ठ नेता दिनेश कुमार सिंह बसपा के जिला प्रभारी कृष्णानंद राउत एवं रविकांत झा ने कहा कि यह कारखाना पूर्णता भ्रष्टाचार के चपेट में अधिकारीयों संवेदकों और आरपीएफ के सिंडिकेट के कारण कारखाना खोखला हो रहा है और यहाँ का युनियन निजी लाभ के लिए अधिकारीयों की चाटुकारिता कर रहे हैं लेकिन मोर्चा खामोश नहीं बैठेगी । वही एनसीपी शरद के प्रदेश महासचिव इन्द्रदेव दास सीपीआई के सचिव सजीवन सिंह जेपी सेनानी के दीपक सिन्हा जाप के निवर्तमान जिला अध्यक्ष पप्पी कुमार उर्फ पप्पू यादव सहित अन्य नेताओं ने केंद्र राज्य सरकार के साथ स्थानीय जनप्रतिनिधियों पर जमकर हमला बोलते हुए कहा यह कारखाना पूर्णता भ्रष्टाचार के चपेट में है जन आकांक्षा एवं यात्री सुविधा का घोर अभाव है उस पर केंद्र सरकार की यह अमृत भारत योजना रेलवे में लूट का एक नया फामूर्ला आ गया है धरना के उपरांत मोर्चा के शिष्टमंडल द्वारा 16 सूत्री मांगों का ज्ञापन जिला पदाधिकारी एवं मुख्य कारखाना प्रबंधक को सौपा गया जो प्रधानमंत्री व रेलवे मंत्री के नाम था। जिसमें कारखाना को निर्माण का दर्जा देते हुए कारखाना एवं डीजल सेट को पूर्व मध्य रेलवे में शामिल, जमालपुर कारखाना में कोच का कार्यभार केंद्र रेलवे विश्वविद्यालय की स्थापना, डीजल शेड को इलेक्ट्रिक शेड में तब्दील, आरपीएफ इंस्पेक्टर (का) को बर्खास्त करने जमालपुर मुंगेर भागलपुर रेल खंडों के वाई लेग पर स्टेशन निर्माण सफियाबाद हॉल्ट मुख्य रेलवे अस्पताल की आधुनिकीकरण सहित अन्य मांगे शामिल थी। धरना में विभिन्न दलों के प्रमुख नेता में मनोज कुमार मधुकर मिथलेश यादव डा कृष्णानन्द पासवान गणेश पोद्दार मनोज क्रांति दीपक साहू मो आजम अमर शक्ति डॉ सुधीर गुप्ता छडपन मंडल सुधीर यादव अशोक शर्मा दिनेश साहू सुरेंद्र प्रसाद शाह कुलेश्वर मंडल अमन राम सीता राम पोद्दार देवन यादव राजेश मंडल सुरेश प्रसाद यादव चंदन शाह मनीष मिश्रा दिनेश प्रसाद विजय रजक राजीव पटवा उपेंद्र मंडल उत्तम कुमार सहित अन्य लोग शामिल थे।

रतनपुर पंचायत सरकार भवन निर्माण में प्रयोग हो रहा है घटिया सामग्री को ले ग्रामीणें ने किया प्रदर्शन

ग्रामीणों के द्वारा जमकर किया गया विरोध

प्रात : किरण संवाददाता

गिद्धौर। रविवार को प्रखंड के रतनपुर पंचायत में लगभग 2.50 लाख की लागत से बन रहे पंचायत सरकार भवन में ठेकेदार द्वारा भवन निर्माण में गुणवत्ता विहीन सामग्री का प्रयोग कर भवन निर्माण किया जा रहा है। वही ग्रामीणों के द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया। विरोध प्रदर्शन कर रहे ग्रामीण दिनेश यादव, उमाशंकर यादव,धर्मेंद्र यादव, जगन्नाथ राम,भोला यादव,बबलू यादव,शंभू यादव,भैरव यादव,गुड्डु यादव ने बताया कि जब ठेकेदार से इस घटिया सामग्री कार्य की बात कही जाती है बोलता है जहां जाना है जाओ नहीं तो एक केस करेंगे तो ठंडा पड़ जाएगा ठेकेदार के द्वारा इस तरह का धमकी दिया जाता है। कार्यस्थल पर ठेकेदार द्वारा भवन निर्माण में घटिया मिट्टी रहित बालू, ईट,छड एवं गिट्टी का प्रयोग किया जा रहा है। ठेकेदार गुणवत्ता का ख्याल नहीं रखकर लूट खसोट करने में लगे हुए हैं। बता दे कि गांव के समुचित विकास के लिए बनवाएं जा रहे हैं पंचायत भवन भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ रहे हैं। पंचायत भवन निर्माण में घटिया सामग्री का प्रयोग धड़ल्ले से किए जाने के बावजूद कहीं नींव में घटिया सामग्री की सरिया एवं सीमेंट दिया जा रहा है। जिससे नींव ही कमजोर होगा तो पंचायत भवन कितना मजबूत होगा? ग्रामीणों ने पंचायत भवन मानक के अनुसार नहीं बनाए जाने और घटिया निर्माण सामग्री प्रयोग किये जाने का आरोप लगाते हुए जिला प्रशासन से जांच की मांग की है।विदित हो कि बिहार राज्य में सरकार ग्राम पंचायतों के विकास के लिए तेजी से कदम उठा रही है। सभी ग्राम पंचायतों में ग्रामीणों और किसानों को उनका अपना पंचायत भवन मिलने जा रहा है। सरकार का प्रयास है कि किसानों की समस्याओं का जल्द निस्तारण हो। उनको बुनियादी सुविधाएं मिलें। सड़क निर्माण, जल प्रबंधन, सिंचाई में आने वाली दिक्कतें दूर हों। ग्राम पंचायतों की व्यवस्था को मजबूत करने के लिए पंचायत भवनों के निर्माण पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन अफसर शासन की मंशा पर पलीता लगा रहे हैं।रतनपुर ग्राम पंचायत में बन रहे पंचायत सरकार भवन में शुरू से ही घटिया सामग्री का इस्तेमाल किया जा रहा है। तीन नंबर ईट, श्याम कंपनी के सरिया आदि का प्रयोग किया जा रहा है। लाखों की लागत से बनने वाले पंचायत सरकार भवन में एक बैठक हॉल, दो कार्यालय कक्ष, कर्मी आवास, बरामदा और शौचालय का निर्माण कराया जाना है। वही इस संबंध में पूछे जाने पर एसडीओ ज्योति अलका ने बताया कि हम कार्यस्थल पर जाकर जांच भी किए हैं अगर ग्रामीण विरोध कर रहे हैं तो फिर आकर देखते हैं ठेकेदार के द्वारा कोई भी घटिया किस्म का ईट और सीमेंट का प्रयोग नहीं कर सकता है।

किशोर किशोरियों को व्यवहार एवं संचार कौशल का दिया गया प्रशिक्षण

प्रशिक्षण कार्यक्रम 10 जनवरी से 12 जनवरी तक कि गई आयोजित

प्रात : किरण संवाददाता

जमुई [झाझा खैरा] रविवार को स्वयंसेवी संस्था ममता हेल्थ इंस्टीट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड जमुई के द्वारा जिले के झाझा एवं खैरा प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों एवं ग्रामीण स्तर पर किशोर किशोरियों को व्यवहारिक कुशलता हेतु उनके शैक्षणिक सामाजिक एवं आध्यात्मिक विकास हेतु व्यवहार एवं संचार कौशल का प्रशिक्षण दिया गया। झाझा प्रखंड के प्लस टू उच्च विद्यालय बोड़बा तथा प्लस टू उच्च विद्यालय बैजला में तथा खैरा प्रखंड के प्लस टू उच्च विद्यालय बिशनपुर, मध्य विद्यालय फतेहपुर, नीमनवादा पंचायत के आंगनबाड़ी प्रांगण में निमनवादा गांव के किशोर किशोरियों तथा खैरा प्रखंड के अमरवा गांव के किशोर किशोरियों को एकदिवसीय प्रशिक्षण दिया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम ममता संस्था के द्वारा 10 जनवरी से 12 जनवरी 2025 तक आयोजित की गई । इस कार्यक्रम का उद्देश्य किशोर किशोरियों में भावनात्मक विकास, सामाजिक विकास ,व्यवहार कौशल ,रचनात्मक विकास ,संचार प्रणाली , इंटरनेट का सही प्रयोग एवं उनको शैक्षिकनिक, सामाजिक एवं राजनीतिक स्तर पर सशक्त बनाना था। प्रशिक्षक के रूप में संस्था की ओर से सुश्री नेहा कलवंडे उपस्थित थे। जो व्यवहार कौशल एवं संचार कौशल के विशेषज्ञ हैं । मौके पर विद्यालयों में विद्यालय के सभी प्रधानाध्यापक ,अध्यापक, एवं अध्यापिका उपस्थित थें। ग्रामीण स्तर पर का कार्यक्रम में निमनवादा पंचायत की मुखिया मनीता देवी , जीविका सीएम एवं आशा कार्यकर्ता भी उपस्थित थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत प्रखंड के कुल 447 किशोर किशोरियों को प्रशिक्षित किया गया। कार्यक्रम में संस्था के सभी साथी अमन कुमार , वरुण कुमार सिंह, पूजा कुमारी , अंजू कुमारी , छोटी कुमारी एवं सुमित कुमार उपस्थित थें। प्रशिक्षक सुश्री नेहा जी के द्वारा खेल-खेल के माध्यम से व्यवहार कौशल एवं संचार कौशल की विशेष प्रशिक्षण दी गई । इन्हें बताया गया कि जीवन में आगे बढ़ने के लिए पढ़ाई के साथ-साथ आपको व्यावहारिक रूप से भी सशक्त होने की आवश्यकता है। मौके पर उपस्थित खैरा प्रखंड की नीमनवादा पंचायत की मुखिया श्रीमती मनीता देवी ने कहा कि आज का कार्यक्रम बहुत ही अच्छा था। खास करके लड़कियों के लिए यह प्रेरणादाई था। आज के प्रशिक्षण में जो इंटरनेट का सही उपयोग करने और साइबर क्राइम से बचने के बारे में जानकारी दी गई यह लड़कियों के लिए काफी लाभदायक है। क्योंकि आज के समाज में विकृत मानसिकता के लोगों की भी कमी नहीं है और वह लड़कियों से सोशल मीडिया के माध्यम से भी दुर्व्यवहार करते हैं तो संस्था से हमारी आग्रह है कि इस तरह के कार्यक्रम हमारे पंचायत के सभी गांव में आयोजित कर लड़कियों को विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाए ।

17 वीं लोकसभा और राज्यसभा की 1929 योजनाएं अपूर्ण

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खडगपुर मुंगेर बिहार में 17वीं लोकसभा और राज्यसभा के सदस्यों द्वारा अनुसंसित 482 योजनाएं रद्द होने की कगार पर पहुंच गई है लोकसभा और राज्यसभा के तत्कालीन सदस्यों द्वारा अनुशंसित इन योजनाओं को अब संभावित क्या सूची से बाहर कर रद्द कर दिया जाएगा इसके बाद अब नए सिरे से उतनी राशि की दूसरी योजना लेने की बाध्यता होगी योजना एवं विकास विभाग के प्रधान सचिव ने क्षेत्रीय पदाधिकारी को इस आशय का आदेश दिए हैं उन्होंने अपनी रिपोर्ट में बताया है कि 45 दिनों से अधिक समय तक लंबित योजना की संख्या 771 हो गई है जबकि 1 वर्ष से अधिक समय से लंबित योजनाओं की संख्या 525 है इसके अलावा पटना में अपूर्ण योजना लोकसभा की 582 राज्यसभा की 254 तिरहुत लोकसभा की 28 और राज्यसभा की 6 मगध 489 लोकसभा साथ योजना राज्यसभा की मुंगेर लोकसभा की 164 और राज्यसभा की 74 योजना भागलपुर लोकसभा की 10 और राज्यसभा की 36 योजनाएं सारण लोकसभा की 89 राज्यसभा नहीं कोसी लोकसभा के 21 राज्यसभा की नहीं पूर्णिया 18 लोकसभा दरभंगा 116 और राज्यसभा की 35 योजना अनुसंसित की गई है इसके अलावा स्वीकृत के तीन महीने बाद ही जिन योजनाओं पर काम स्वीकृत शुरू नहीं हो पाया है राज्य में ऐसी योजनाओं की संख्या 1385 है जिस पर अभी तक 1 भी ब्याज नहीं किया जा सका है इतनी लंबी अवधि के बावजूद काम शुरू न होने के कारण अब इस योजनाओं को ही रद्द करने का निर्णय लिया जाएगा और इसकी जगह पर नई योजनाओं की स्वीकृति नए सिरे से लेनी होगी प्रधान सचिव ने एक मौका देते हुए कहा है कि यदि किसी योजना को दो माह के भीतर पूरा किया जा सकता हो तो उसे पूरा कर लें और बाकी योजनाओं को रद्द करने की कार्रवाई शुरू करें।

स्वास्थ्य शिविर लगाकर रोगीयों की गई जांच

प्रात : किरण संवाददाता

गंगटा (मुंगेर)। रविवार को सेवा भारत के द्वारा हवेली खड़गपुर प्रखंड के दो पंचायत में निशुल्क स्वास्थ्य जांच सेवा शिविर का आयोजन किया गया।रमानकाबाद पश्चिम पंचायत हथिया चौक के समीप स्वास्थ्य सेवा शिविर लगाया गया। जहां डॉक्टरों के टीम ने200 रोगियों का जांच किया। इसमें 142 रोगियों में विभिन्न रोग से प्रभावित पाया गया। रोगियों को निशुल्क दवा दिया गया हैं।इस शिविर में डॉ रवि शंकर सर्जन खगड़िया जूनियर डॉक्टर हेमंत अर्पिता शबनम दंत रोग विशेषज्ञ डॉक्टर अभिषेक सौरभ डक्टर प्रशांत कुमार ने रोगियों का जांच किया। इस मौके पर जिला परिषद प्रतिनिधि टुनटुन ठाकुर सरपंच हरिमोहन तुरी अमरजीत कुणाल किशोर खंड शारीरिक शिक्षण कार्य प्रमुख निरंजन कुमार मंडल हेमंत सिंह उर्फ. चिंटू सिंह सहित अन्य कई स्वयंसेवक उपस्थित थे।

बिहार शिक्षा विभाग का खेल से ग्रामीण आकोर्षित : सदानंद झा बिरही

प्रात : किरण संवाददाता

हवेली खड़गपुर (मुंगेर)। खंड बिहारी गांव स्थित बेसिक स्कूल परिसर में बने चार करोड़ की लागत से प्लस टू विद्यालय में पठन-पाठन उद्घाटन के बाद ही नहीं हो रहा है। भवन बनने के बाद प्लस टू विद्यालय पंचायत की कौड़िया साडो गांव में बना दिया गया हैं। सरकार ने 2012 ईस्वी में हर पंचायत के जहां-जहां बुनियादी विद्यालय है उसे स्थान पर प्लस टू विद्यालय बनाने की मंजूरी दी थी इसके बाद विभाग ने चार करोड़ की लागत से खंड़विहारी स्थित बुनियादी विद्यालय परिसर में प्लस टू हाई स्कूल का भवन निर्माण कर दिया था इतना ही नहीं भवन निर्माण के बाद तत्कालीन स्थानीय विधायक एवं मंत्री शैलेश कुमार ने उद्घाटन भी कर दिया । बताया जाता है कि सरकार ने बुनियादी विद्यालय स्कूल में प्लस टू विद्यालय बनाने की नींव इसलिए रखी थी कि हर बेसिक स्कूलों को पर्याप्त अपना जमीन थी को पर अब कोरिया के साथ दो मध्य विद्यालय को प्लस टू का दर्जा दिया गया है अब इस पंचायत के बच्चों की पढ़ाई कैसे होगी इस पर ग्रामीणों ने भी अब नाराजगी जताते हुए आंदोलन करने की रणनीति बनाई है बेसिक स्कूल और खंड़विहारी बेसिक स्कूलों को प्लस टू बनाने के लिए भवन निर्माण कराया गया था लेकिन तत्कालीन मंत्री एवं जमालपुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक शैलेश कुमार के जातिवादिता के कारण इस बेसिक स्कूल में प्लस टू की पढ़ाई नहीं हो पा रही है और इस विद्यालय को उठाकर साधन के मध्य विद्यालय में स्थापित कर दिया गया है जहां न भवन है और ना ही पर्याप्त मध्य विद्यालय को भवन बनाने के लिए अपनी जमीन ही है ग्रामीणों का आरोप है कि इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक और शैलेश कुमार तथा तत्कालीन मुखिया मुन्नी देवी के दबाव में आकर इसे मध्य विद्यालय में स्थापित किया गया। इसलिए कि मंत्री जी के जाति के लोग वहां इन पर हाबी हो और वोट की राजनीति करने वाले पूर्व मंत्री ने वोट प्राप्त करने के लिए लोग से इस प्लस टू विद्यालय खंड बिहारी में नहीं चला कर उसे साधु में स्थापित कर दिया। विद्यालय के प्रभारी प्रधानाध्यापक मनीष कुमार ने कहा कि खंड बिहारी बेसिक स्कूलों को प्लस टू बनाने के लिए चार करोड़ की लागत से भवन निर्माण तो कराया गया पर पंचायत में एक ही प्लस टू विद्यालय की स्थापना होनी है और कौड़िया गांव स्थित साधु मध्य विद्यालय को प्लस टू बना दिया गया पर ना तो वहां पर्याप्त जमीन है और ना ही भवन है प्रखंड शिक्षा पदाधिकारी ने बताया कि पंचायत में एक ही प्लस टू विद्यालय का संचालन होना है कौड़िया पंचायत के साथ दो गांव में मध्य विद्यालय स्थित स्कूल को प्लस टू बना दिया गया है वह पूर्व में हुआ है इस कारण मुझे इस बारे में अधिक जानकारी नहीं है खंड़विहारी बेसिक स्कूल स्थित भवन में क्यों नहीं हो रही है इसकी जानकारी प्रखंड शिक्षा प्रसार पदाधिकारी को नहीं है ग्रामीणों ने बताया कि 50 के दशक में इस विद्यालय की स्थापना की गई इस विद्यालय को प्लस टू बनाने के लिए पर्याप्त जमीन थी और इसका भवन भी निर्माण कराया गया था या सिर्फ खंडबिहारी ही नहीं बल्कि धरहरा के बगल में भी बनाया गया था आज भी प्लस टू की पढ़ाई नहीं होती है जो काफी दुखद है या यूं कहें कि यह भवन निर्माण सिर्फ कमीशन खोरी के लिए बनाया गया था या भवन सिर्फ गांव की शोभा बढ़ाने का काम कर रही है और खाली रहने के कारण नशेड़ियों का अड्डा बना हुआ है इस संबंध में मलिक के कमरे दशरथ सिंह ने कहा कि सरकार को जागृत करने के लिए इस विद्यालय में प्लस टू की पढ़ाई निमित्त करने के लिए और शिक्षक की नियुक्ति पदस्थापन करने के लिए सरकार को बाधित करने के लिए आंदोलन किया जाएगा वहीं श्री सिंह ने आगे कहा कि सरकार शिक्षा पर लाखों करोड़ों रुपए खर्च कर प्रतिदिन कुछ ना कुछ नई तरकीब से काम कर रही है यह अच्छी बात है कि शिक्षा को एक नई दिशा मिले लेकिन इसके साथ सरकार को और विभाग को यह भी देखना चाहिए कि कहां कितनी राशि खर्च कर भवन निर्माण खड़ा किया गया है लेकिन वहां पढ़ाई और शिक्षकों का पदस्थापन नहीं किया जा सकता है श्री सिंह ने सरकार को आगाह किया है कि अगर सरकार इसमें इस विद्यालय को प्लस टू का दर्जा देकर शिक्षक का पदस्थापन और पढ़ाई शुरू नहीं की गई तो आगामी विधानसभा चुनाव में सत्ता पक्ष के लोगों को इस इलाके का वोट ग्रामीण नहीं देंगे और आसपास के ग्रामीणों को भी इसके संबंध में प्रेषित किया जाएगा।

कुम्भ पर्वों की परम्परा और प्राचीनता

हरिद्वार, नासिक, प्रयाग और उज्जैन में प्रति बारहवें वर्ष आयोजित होने वाले कुम्भ पर्वों की परंपरा और प्राचीनता का अनुमान इसी तथ्य से स्पष्ट हो जाता है कि ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद के कई मंत्रों में कुम्भ पर्व का उल्लेख है। अथर्ववेद में तो यहां तक कहा गया है कि कुम्भ पर्व में पवित्र नदियों में स्नान करने से एक हजार अश्वमेघ यज्ञों तथा एक लाख बार पृथ्वी प्रदक्षिणा का पुण्य मिलता है। हमारी पुराणें कुम्भ पर्वों की महिमा से भरी पड़ी है। इतिहासकारों एवं विदेशी पर्यटकों ने भी कुम्भ मेलों का विवरण दिया है। कुम्भ का सर्वाधिक स्पष्ट एवं विस्तृत उल्लेख चीनी यात्री व्हेनसांग के यात्रा वर्णन में मिलता है। उसने सन् 644 में प्रयाग में हुए एक कुम्भ का वर्णन करते हुए लिखा है कि तत्कालीन सम्राट हर्षवर्धन ने प्रयाग के कुम्भ मेले में अपनी सारी सम्पत्ति का दान कर दिया था। नौवीं शताब्दी में आदि शंकराचार्य ने कुम्भ पर्वों को व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया। उन्होंने हिन्दू धर्म की एकता और व्यापकता के लिए देश की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित किए। इन मठों की स्थापना का एक उद्देश्य यह भी था कि इनके प्रधान (शंकराचार्य) भारत के साधु समाज को समुचित दिशा-निर्देश दे सकें। उपासना-पद्धति के आधार पर आदि शंकराचार्य ने साधुओं को दस वर्गों में विभाजित किया। यह विभाजन ह्यदशनामीह्ल के नाम से जाना जाता है। आदि शंकराचार्य ने साधुओं को जिन दस नामों में विभाजित किया है, वे हैं- सरस्वती, पुरी, बाना, तीर्थ, गिरि, पर्वत, भारती, अरण्य, आश्रम एवं सागर। उन्होंने भारत की धार्मिक एकता एवं अध्यात्म के प्रचार के लिए यह व्यवस्था दी कि इन सभी साधुओं तथा चारों मठों के शंकाराचार्यों को प्रत्येक कुम्भ पर्व में अनिवार्य रूप से सम्मिलित होना चाहिए तथा देश के विभिन्न भागों से आये अन्य साधु-संतों तथा श्रद्धालुजनों से सम्पर्क करना चाहिए। यहां तक कि हिमालय की कंदराओं में एकांतवास करके साधना करने वाले तपस्वियों तक के लिए कुम्भ स्नान करना आवश्यक कर दिया गया। उसके बाद से ही यह परंपरा विकसित हुई कि कोई भी साधु देश के किसी भी कोने में निवास करता हो, वह कुम्भ स्नान के लिए अवश्य जाता है। इस तरह ये कुंभ एवं भारत की एकता के प्रतीक पर्व बन गये हैं। समुद्र मंथन से जुड़ा कुंभ पर्व की महत्ता का वर्णन अनेक पुराणों में किया गया है। इस पर्व की परंपरा से संबंधित भी अनेक कथाएं पुराणों में हैं। इनमें से सर्वमान्य कथा यह है कि ब्रह्माजी की आज्ञा से देवताओं और दानवों ने समुद्र मंथन किया। मंथन के उपरांत जो रत्न मिले, उनमें अमृत भी था। देवता और दानव दोनों ही उसे प्राप्त करना चाहते थे, इसलिए उनमें युद्ध छिड़ गया। सूर्य, चन्द्रमा और बृहस्पति को अमृत के कुंभ की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था। यह कुंभ उन्होंने जिन स्थानों पर रखा, वहां अमृत की कुछ बूंदें छलक गईं। ये स्थान थे- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक। चूंकि इन स्थानों पर अमृत कुंभ रखा गया था तथा वहां अमृत छलका था, इसलिए इन स्थानों पर कुंभ पर्व आयोजित किये जाने लगे। इंद्र के पुत्र जयंत से छलका अमृत एक अन्य कथा के अनुसार इन्द्र का पुत्र जयंत यह अमृत कुंभ लेकर उड़ा तो चार स्थानों पर अमृत छलक गया था। जिन स्थानों पर यह अमृत छलका, वहां कुंभ पर्व मनाया जाता है। इन कथाओं के अनुसार अमृतकुंभ को लेकर देवताओं और दानवों में 12 दिन तक युद्ध हुआ था। देवी-देवताओं का एक दिन पृथ्वीलोक के एक वर्ष के बराबर होता है, इसलिए हर बारहवें वर्ष कुंभ स्नान की परंपरा प्रारंभ हुई। अर्थात प्रत्येक स्थान पर बारहवें वर्ष कुंभ होता है। वैसे हर तीसरे वर्ष देश में कहीं न कहीं कुंभ आयोजित होता है। ग्रहों की गति पर निर्भर कुंभ पर्व तथा उसके स्नानों का आयोजन ग्रहों की गति पर निर्भर करता है। जैसे जब गुरू ग्रह कुंभ राशि में तथा सूर्य मेष राशि में होता है तो हरिद्वार में कुंभ होता है। इसके तीन वर्ष पश्चात अर्थात जब गुरु वृषभ राशि में तथा सूर्य मकर राशि में होता है तो प्रयाग (इलाहाबाद) में कुंभ होता है। जब बृहस्पति (गुरू) सिंह राशि में आते हैं तो नासिक और उज्जैन में कुंभ आयोजित होते हैं। किन्तु नासिक का कुंभ तब होता है, जब सूर्य सिंह राशि में ही होता है, जबकि उज्जैन का कुंभ (सिंहस्थ) तब होता है, जब सूर्य मेष राशि में आते है। यहां यह उल्लेखनीय है कि बृहस्पति (गुरू) ग्रह एक राशि में एक वर्ष तथा सूर्य की एक राशि में एक महीने रहते है। गुरू को बारह राशियों में भ्रमण करने में सामान्यतः बारह वर्ष लगते हैं। बारह वर्ष बाद वह अपनी पूर्व राशि में आता है, और इसी से कुंभ पर्व उक्त चार स्थानों पर प्रति बारहवें वर्ष आयोजित होते हैं। अर्द्ध कुम्भ भी होते हैं दो स्थानों पर अर्द्ध कुम्भ भी आयोजित होते हैं। ये स्थान हैं हरिद्वार और प्रयाग। अर्द्ध कुम्भ, कुम्भ पर्व के छः वर्ष बाद आयोजित होते हैं।

आज भी प्रासंगिक है स्वामी विवेकानंद का चिंतन

स्वामी विवेकानन्द संभवतः भारत के एकमात्र ऐसे संत हैं, जो अध्यात्म, दर्शन और देशभक्ति जैसे गंभीर गुणों के साथ-साथ युवा शक्ति के भी प्रतीक हैं। उनकी छवि भले ही एक धर्मपुरूष और कर्मयोगी की है किन्तु उनका वास्तविक उद्देश्य अपने देश के युवाओं को रचनात्मक कर्म का मार्ग दिखाकर विश्व में भारत के नाम का डंका बजाना था। उन्हें केवल चार दशक का जीवन मिला और इसी अल्प अवधि में उन्होंने न केवल अपने समय की युवा पीढ़ी में अपनी वाणी, कर्म एवं विचारों से नई ऊर्जा का संचार किया बल्कि बाद की पीढ़ियों के लिए भी वे आदर्श बने हुए हैं। वे युवाओं के प्रिय इसलिए हैं कि बचपन से लेकर जीवन के अंतिम क्षण तक उनमें प्रश्न और जिज्ञासा का भाव जीवित रहा। स्वामी विवेकानन्द ने धर्म, अध्यात्म, समाज, दर्शन, चिंतन, सभी स्तरों पर वही मार्ग अपनाया जिसे उन्होंने अपनी तर्क बुद्धि और विवेक की कसौटी पर परखने के बाद सही समझा। यही कारण है कि युवाओं के लिए उनका चिंतन आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके जीवनकाल में था। देखने में यह बात विचित्र लग सकती है कि आज से सवा सौ वर्ष से अधिक समय पहले उन्होंने भारतीय समाज की उन समस्याओं और प्रश्नों को पहचान लिया था, जो आज भी हमारे युवा वर्ग के लिए चुनौती बनी हुई हैं। उनके जीवन के लगभग सभी पहलू आज भी प्रासंगिक और सार्थक प्रतीत होते हैं। बहुत-सी बातों में तो वे अपने समय से बहुत आगे थे और एक युगद्दष्टा की तरह उन्होंने आने वाली चुनौतियों की ओर स्पष्ट संकेत कर दिया था। उन्होंने जो सोचा, कहा और किया उससे कई पीढ़ियां दिशा प्राप्त करती रही हैं। आज की पीढ़ी की समस्याओं व चुनौतियों पर नजर डालते हैं तो विवेकानन्द का जीवन और दर्शन और भी अधिक उपयोगी प्रतीत होता है। आज मानवता भौतिकवाद की अंधी दौड़ और स्वार्थपरता के चौराहे पर खड़ी है और शांति व उदात्तु जीवन जीने के लिए किसी मार्गदर्शक की तलाश में है। विश्व समाज एक तरह से विचारहीनता तथा आदर्शशून्यता के भंवरों में डूब रहा है। आतंकवाद समूची दुनिया में नया दैत्य बनकर लोगों के सुख-चैन को लील रहा है। हमारा देश भी इस अभिशाप का शिकार है और अनेक नवयुवक इस विनाशकारी रास्ते पर चल रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में विवेकानन्द के विचारों की आवश्यकता और अधिक महसूस होने लगी है। आज की पीढ़ी के लिए समाज सुधारक और देशभक्त संत स्वामी विवेकानन्द के जीवन के कौन से पक्ष अधिक सार्थक व प्रासंगिक हैं, इसका विवेचन करना समीचीन होगा। वास्तव में, स्वामी जी पहले देशभक्त थे और बाद में संन्यासी या धर्म गुरू। धर्म का सही रूप भारत के लोगों के सामने रखने और विदेशों में भारत की नकारात्मक छवि को उज्ज्वल करने की उत्कंठा ने ही उनसे वो सब कराया जिसे याद करके हम उन्हें देश के शीर्षस्थ महापुरूषों की पंक्ति में बिठाते हैं। किन्तु उनकी देशभक्ति और अपने धर्म के प्रति श्रद्धा एवं आस्था ने उनके तर्कशील और उदार दृष्टिकोण पर कभी ग्रहण नहीं लगाया। वे प्रवृत्ति और चिंतन से सहिष्णु, दूसरों के विचारों का सम्मान करने वाले और सभी संस्कृतियों व धर्मों में समानता के दर्शन करने वाले व्यक्ति थे। उन्होंने ब्रिटेन और अमरीका में जाकर भारत में धर्म प्रचार में लगी ईसाई मिशनरियों की कार्य प्रणाली की तीखी निन्दा की और इसके लिए वहां के अनेक लोगों के विरोध को झेला, किन्तु उनके मन में ईसाइयों या ईसा मसीह के प्रति कभी घृणा का भाव नहीं उपजा। इसके विपरीत उन्होंने कश्मीर की यात्रा के दौरान अमरीका का राष्ट्रीय दिवस अपने अमरीकी शिष्य-शिष्याओं के साथ मनाया। इसी तरह अमरीका में उन्होंने एक बार अपना पाठ्यक्रम ईसा मसीह के जीवन पर भावपूर्ण प्रवचन से प्रारंभ किया। अमरीका में अनेक गिरजाघरों और ईसाई प्रतिष्ठानों में उनके व्याख्यान व प्रवचन हुए। वे गौतम बुद्ध को अपना आदर्श मानते थे और अपने गुरू भाइयों को समझाते कि जिस प्रकार महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को संसार भर में भेज कर धर्म प्रचार किया था उसी तरह हमें भी आत्मशुद्धि और आत्मानुभूति में मोक्ष की कामना न करते हुए देश के उपेक्षित, अशिक्षित और सुप्त समाज को जगाने के लिए आश्रम की चारदीवारी से बाहर निकलना चाहिए।

घटती बेटियां: कोख में ही छीन रहें साँसें, फिर संकट में हरियाणा की सुकन्या समृद्धि

2014 और 2019 के बीच हुई बढ़त प्री-कॉन्सेप्शन एंड प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स एक्ट, 1994 (पीएनडीटी एक्ट) के सख्त प्रवर्तन के साथ-साथ गहन जागरूकता अभियान के कारण हुई। इसका उद्देश्य हरियाणा में बड़े पैमाने पर जन्मपूर्व लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाना था, साथ ही साथ सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना था, जिसमें परिवार लड़कों को पसंद करते थे और लड़की को बोझ के रूप में देखते थे। हरियाणा में बच्ची के जन्म पर 21, 000 रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान करने और सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लड़कियों के लिए बैंक खाते खोलने के बावजूद, बालिकाओं को बोझ के रूप में क्यों देखा जाता है।

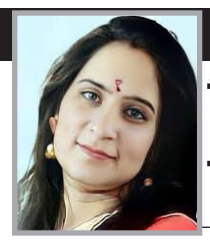

प्रियंका सौरभ
लेखिका

कन्या भ्रूण हत्या के लिए बदनाम हरियाणा का लिंगानुपात (एसआरबी यानी जन्म के समय लिंगानुपात) राज्य सरकार द्वारा हाल ही में जारी आंकड़ों के अनुसार आठ साल के सबसे निचले स्तर पर पहुँच गया है। 2024 के पहले 10 महीनों यानी अक्टूबर तक लिंगानुपात 905 दर्ज किया गया। यह पिछले साल से 11 अंक कम है। वर्ष 2016 में इससे कम लिंगानुपात दर्ज किया गया था। वर्ष 2019 में 923 के उच्चतम स्तर पर पहुँचने के बाद वर्ष 2024 में हरियाणा में जन्म के समय लिंगानुपात घटकर 910 रह गया, जो आठ वर्षों में सबसे कम है। इन आंकड़ों ने हरियाणा के कार्यकताओं और नागरिक समाज के सदस्यों को चिंतित कर दिया है, हालांकि अधिकारियों ने नवीनतम आंकड़ों को ह्लमामूली उतार-चढ़ावह्ल करार दिया है। वर्ष 2021 में प्रकाशित राष्ट्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार सर्वेक्षण-5 (एनएफएचएस-5) के अनुसार भारत में जन्म के समय कुल लिंगानुपात 929 था।

विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित आदर्श लिंगानुपात 950 से हरियाणा बहुत दूर है। राज्य आज तक इस आंकड़े को हासिल नहीं कर पाया है। लिंगानुपात में गिरावट का मतलब है कि राज्य में लड़कियों को गर्भ में ही मार दिया जा रहा है। आर्थिक प्रगति के बावजूद हरियाणा में बड़ी संख्या में लोग अभी भी बेटों को प्राथमिकता देते हैं। जब तक यह सोच नहीं बदलेगी, लिंगानुपात को लेकर स्थिति में सुधार नहीं होगा। राज्य के लोगों में लड़कों को प्राथमिकता दिए जाने के कारण हरियाणा के पड़ोसी राज्यों में अल्ट्रासाउंड संचालकों और गर्भपात केंद्रों का धंधा खूब फल-फूल रहा है। इन राज्यों में ज्यादा सख्ती नहीं है। हरियाणा से लोग दलालों के जरिए यहाँ पहुँचते हैं और जांच व गर्भपात करवाते हैं। अल्ट्रासाउंड संचालक पैसे के लिए गर्भ में पल रहे भ्रूण की गलत जानकारी भी देते हैं। ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जब लड़कों को लड़की बताकर गर्भपात करवा दिया गया।

अल्ट्रासाउंड करने वाले और गर्भपात करने वाले एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। पिछले एक दशक में इस पैमाने पर उल्लेखनीय सुधार करने वाले राज्य के लिए यह एक झटका है। 2014 में हरियाणा में लिंगानुपात सिर्फ. 871 था। इस पर देशभर में भारी आक्रोश फैल गया और नागरिक समाज संगठनों, राज्य सरकार और केंद्र ने स्थिति को सुधारने के लिए ठोस प्रयास किए। हरियाणा में गिरते लिंगानुपात को देखते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2015 में बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ अभियान शुरू किया था। अभियान के बाद राज्य का लिंगानुपात सुधर कर 2019 में 923 पर पहुँच गया। लेकिन 2020 में इसमें फिर से गिरावट शुरू हो गई, जो अब तक जारी है। हालांकि, तब से लिंगानुपात में एक बार फिर से गिरावट देखी गई है, यह झटका ऐसे समय में आया है जब राज्य की महिलाएँ अंतरराष्ट्रीय मंचों सहित खेलों में और साथ ही शिक्षाविदों में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं। 2014 और 2019 के बीच हुई बढ़त प्री-कॉन्सेप्शन एंड प्री-नेटल डायग्नोस्टिक टेक्निक्स एक्ट, 1994 (पीएनडीटी एक्ट) के सख्त प्रवर्तन के साथ-साथ गहन जागरूकता अभियान के कारण हुई। इसका उद्देश्य हरियाणा में बड़े पैमाने पर जन्मपूर्व लिंग चयन और कन्या भ्रूण हत्या पर अंकुश लगाना था, साथ ही साथ सामाजिक दृष्टिकोण को बदलना था, जिसमें परिवार लड़कों को पसंद करते थे

और लड़की को बोझ के रूप में देखते थे। हरियाणा में बच्ची के जन्म पर 21, 000 रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान करने और सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से लड़कियों के लिए बैंक खाते खोलने के बावजूद, बालिकाओं को बोझ के रूप में क्यों देखा जाता है। कार्यकर्ताओं का कहना है कि नजरिया बदलने के लिए और अधिक काम करने की जरूरत है और हाल के वर्षों में कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के उद्देश्य से बनाए गए कानूनों का क्रियान्वयन ढीला पड़ गया है। लड़कों की पसंद के कारण राज्य में लड़कियों की चाहत कम हो गई है क्योंकि उनके परिवारों को डर है कि वे भागकर शादी करने के कारण भविष्य में बदनामी का कारण बन सकती हैं। उनके अनुसार, लड़कियाँ पैसा और संपत्ति कमाकर अपने परिवार की मदद नहीं कर सकती हैं। इसके विपरीत, परिवारों को उनकी शादी में दहेज देना होगा। ऐसी सोच के कारण हरियाणा में लड़कों को शादी के लिए लड़कियाँ नहीं मिल रही हैं। हरियाणा के अधिकांश गांवों में आमतौर पर ऐसी समस्या है। कई परिवारों में अगर लड़कियों का पालन-पोषण ठीक से नहीं किया जाता है तो वे कुपोषण का शिकार हो जाती हैं और कुछ समय बाद उनकी मौत भी हो जाती है। हरियाणा की आर्थिक तरक्की के बावजूद यहां की बड़ी आबादी की मानसिकता अब भी नहीं बदली है। जब तक लड़कों और लड़कियों में भेदभाव की यह मानसिकता नहीं बदलेगी, हालात बेहतर नहीं होंगे।

महात्मा बुद्ध के विचारों को आचार में लाना भी जरूरी

ऐसे भिक्षु साफतौर से यह कहते हैं कि ह्लउन्हें यह सब बहुत खराब लगता है। इस तरह के शब्दों का प्रयोग किसी बौद्ध भिक्षु को नहीं करना चाहिए। ह्ल इसी तरह पिछले दिनों श्रीलंका में कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु गालागोडाटे ज्ञान सारा को इस्लाम धर्म का अपमान करने और धार्मिक नफरत फैलाने के आरोप में नौ महीने की जेल की सजा सुनाई गई है। 2018 में भी ज्ञान सारा को एक आपराधिक मामले में छह साल की सजा सुनाई गई थी। दरअसल महात्मा बुद्ध के विचारों की बात करना ही पर्याप्त नहीं बल्कि इन्हें अपने ह्यआचारह्ल व व्यवहार में लाना भी उतना ही जरूरी है। और यह भी बुद्ध ने ही कहा है कि बुराई करने वालों को हमेशा अपने पास रखो क्योंकि वही तुम्हारी गलतियां तुम्हें बता सकते हैं।

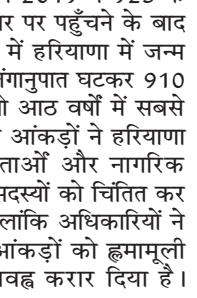

तनवीर जाफरी
लेखक

हमारा देश भारत को देवी-देवताओं, संतों- ऋषियों व फकीरों की धरती कहा जाता है। हमारे देश में अलग अलग युग व काल में अनेकानेक देवी देवताओं, महापुरुषों, समाज सुधारक, युग प्रवर्तक व धर्म प्रवर्तकों ने जन्म लिया है। इन महापुरुषों द्वारा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलते हुये विश्व को मानवता का सन्देश दिया गया है। ऐसे ही एक महान तपस्वी त्यागी तथा सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाते हुये पूरी मानवता को जीने की एक नई दिशा दिखाने वाले बौद्ध धर्म के प्रवर्तक भगवान गौतम बुद्ध का नाम भी सर्व प्रमुख है। बौद्ध धर्म कंबोडिया, म्यांमार, भूटान और श्रीलंका में राजकीय धर्म के रूप में अपना स्थान रखता है जबकि थाईलैंड और लाओस में बौद्ध धर्म को विशेष दर्जा हासिल है। चीन, हांगकांग, मकाऊ, जापान, सिंगापुर, ताइवान, वियतनाम, रूस व कलमीकिया में बौद्ध धर्म बहुसंख्य समाज द्वारा अपनाया जाता है जबकि उत्तर कोरिया, दक्षिण कोरिया, नेपाल और भारत में भी बौद्ध समुदाय की बड़ी आबादी रहती है। ईसा पूर्व 563 में नेपाल के लुम्बिनी में जन्मे महात्मा बुद्ध का पूरे विश्व में अपना प्रभाव छोड़ना और उनके अनुयाइयों का विश्वव्यापी विस्तार इस निष्कर्ष पर पहुँचने के लिये काफी है कि वे जनमानस पर अपनी असाधारण छाप छोड़ने वाले एक ऐसे महापुरुष थे जिन्होंने पूरी इंसानियत को सत्य और अहिंसा का पाठ पढ़ाया। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी अपने महत्वपूर्ण भाषणों में यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र संघ में अपने सम्बोधन में भी महात्मा बुध की शिक्षाओं का जिक्र करते रहे हैं। नवंबर 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में प्रधानमंत्री मोदी ने कहा था कि ह्यहम उस देश के वासी हैं जिसने दुनिया को युद्ध नहीं बुद्ध दिये हैं। वे अनेक बार बुद्ध की सत्य और अहिंसा की नीतियों का उल्लेख महत्वपूर्ण मंचों से करते रहे हैं। लगभग 3 माह पूर्व प्रधानमंत्री ने दिल्ली के विज्ञान भवन में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय अभिधम्म दिवस को संबोधित करते हुए भी यही कहा था कि ह्यदुनिया युद्ध में नहीं बल्कि बुद्ध में समाधान ढूंढ सकती है। दुनिया को शांति के रास्ते पर चलने के लिए बुद्ध की शिक्षाओं से सीखना चाहिए। ऐसे समय में जब दुनिया अस्थिरता से ग्रस्त है, बुद्ध न केवल प्रासंगिक हैं बल्कि एक जरूरत भी हैं। ह्य इसी तरह पिछले दिनों एक बार फिर प्रधानमंत्री ने ओडिशा की राजधानी भुवनेश्वर में आयोजित 18वें प्रवासी भारतीय दिवस-2025 का उद्घाटन करते हुए बुद्ध की शिक्षाओं को याद किया और कहा कि यह देश अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह बता पाने में सक्षम है कि भविष्य युद्ध में नहीं, बल्कि बुद्ध में निहित है। सवाल यह है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा दुनिया को युद्ध के बजाये ह्यबुद्धह्ल के शांति अहिंसा के विचारों पर चलने व उसे आत्मसात करने का बार बार जो ह्यउपदेश ह्य दिया जाता है स्वयं उनकी पार्टी के नेता उनके विभिन्न संगठनों से जुड़े लोग क्या ह्यबुद्धह्ल की बताई गयी सत्य और अहिंसा की नीतियों का अनुसरण करते भी हैं या नहीं? क्या हमारे देश में समय समय पर धर्म, समुदाय व जातियों के नाम पर होने वाली हिंसा और इसे भड़काने वाले नेताओं को बुद्ध की सत्य और अहिंसा की शिक्षा से प्रेरित कहा जा सकता है? यह बुद्ध का ही तो कथन है कि भले ही चाहे कितनी अच्छी बातों को पढ़ लें या उन्हें सुन लें उसका तब तक फायदा नहीं है जबतक हम खुद उस पर अमल नहीं करते । और यह भी बुद्ध ने ही कहा है कि बुराई करने वालों को हमेशा अपने पास रखो क्योंकि वही तुम्हारी गलतियां तुम्हें बता सकते हैं । बुद्ध की इन शिक्षाओं के सन्दर्भ में बुराई करने वालों को तो छोड़िये सरकार की नीतियों की आलोचना करने वाले विपक्ष व मीडिया से सत्ता कैसे पेश आ रही है?क्या यही बुद्ध की नीतियों का अनुसरण है? मनमोहन सिंह जैसे काबिल व्यक्ति की खामोशी पर उन्हें ह्यमौन मोहन ह्य जैसे नाम दे दिये गये और अपनी लफ़्फाजियों को ह्यज्ञान वर्षा ह्य का मरतबा दिया जाता है। जबकि बुद्ध का कथन है कि -ह्लजो लोग ज्यादा बोलते हैं वे सीखने की कोशिश नहीं करते जबकि समझदार व्यक्ति हमेशा निडर और धैर्यशाली होता है जो समय आने पर ही बोलता है। यह भी बुद्ध का कथन है कि दूसरों की आलोचना करने से पहले, खुद की आलोचना करो। परन्तु यहाँ तो गाँधी-नेहरू परिवार व खास समुदाय को कोसने से ही फुर्सत नहीं मिलती। साथ ही स्व महिमामंडन इतना कि स्वयं को अवतारी पुरुष बताने से भी नहीं चूकते? ऐसे राजनेताओं को बुद्ध का यह कथन जरूर याद रखना चाहये कि -ह्लजो ईर्ष्या और जलन की आग में तपते रहते है उन्हें कभी भी शांति और सच्चा सुख प्राप्त नहीं हो सकता है। और यह भी कि-ह्लआप तभी खुश रह सकते है जब बीत गयी बातों को भुला देते है। परन्तु यहाँ तो गड़े मुर्दे उखाड़ कर ही अपनी राजनीति के परचम लहराये जा रहे हैं?इसी तरह म्यांमार के कट्टरपंथी बौद्ध भिक्षु अशीन विराथु को उनके कट्टरपंथी भाषणों व उनके हिंसक तेवरों की वजह से जाना जाता है। स्वयं को महात्मा बुद्ध का अनुयायी ही नहीं बल्कि बौद्ध भिक्षु बताने वाला यह शख़्स केवल आग ही उगलता रहता है। भारत की बहुसंख्यवादी राजनीति की तर्ज पर यह भी अपने भाषणों के द्वारा बौद्ध समुदाय की भावना को यह कहकर भड़काने का काम करता है कि मुस्लिम अल्पसंख्यक एक दिन देश भर में फैल जाएंगे। इसी कथित बौद्ध भिक्षु को लेकर टाइम मैगजीन ने अपने 1 जुलाई, 2013 के अंक में मुख्य पृष्ठ पर उसकी फोटो दि फेस ऑफ बुद्धिस्ट टेरर या बौद्ध आतंक का चेहरा जैसे शीर्षक के साथ प्रकाशित की थी? स्वयं को बौद्ध भिक्षु बताने वाले इसी आतंकी अशीन विराथु ने म्यांमार में संयुक्त राष्ट्र की विशेष प्रतिनिधि यांगी ली को ह्यकुतियाह्ल और ह्यवेश्याह्ल कहकर सम्बोधित किया था। इस व्यक्ति पर अपने भाषणों के माध्यम से म्यांमार में लोगों को सताने की साजिश रचने व उनकी सामूहिक हत्या कराने का आरोप लगाया गया है। इस के उपदेशों में वैमनस्यता की बात होती है और इसका निशाना मुस्लिम खासकर रोहंग्या समुदाय ही होता है। हालांकि बर्मा के अनेक बौद्ध भिक्षु ऐसे भी हैं जो उसके वैमनस्य पूर्ण बयानों से नाखुश हैं।

भारत के उत्थान की प्रेरणा है अयोध्या का श्री राम मंदिर

हितानंद शर्मा

अद्भुत, अकल्पनीय और अविस्मरणीय वह अभिजीत मुहूर्त, जब प्राण-प्रतिष्ठा कर रामलला के नेत्रों से पट्टिका हटाई गई तो पूरे विश्व के सनातन संस्कृति के उपासकों के नेत्रों में श्रद्धा, आस्था, आनंद और प्रतीक्षा के आँसू थे। पौष शुक्ल द्वादशी, 22 जनवरी 2024 केवल अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर की प्राण-प्रतिष्ठा के उत्सव का दिवस नहीं, बल्कि संपूर्ण हिंदू समाज की दृष्टि और विचारों के परिवर्तन की उपलब्धि का दिन है। पीढ़ियों की तपस्या, त्याग, बलिदान और प्रतीक्षा के बाद अयोध्या ने इस शुभ घड़ी का स्वागत किया था। भगवान श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा से आनंदित, उत्सा हित यह वही अयोध्या है जिसके परिचय में अथर्व वेद में उल्लेख आता है कि- अष्ट चक्रा नव द्वारा देवाना पूः अयोध्या तस्या हिरण्यमयः कोश स्वर्गो ज्योतिषावृतः। । अयोध्या, जिसका अर्थ ही है जो अजेय है, अपराजित है। सहस्त्रों वर्षो तक अयोध्या अपने स्वर्णिम इतिहास के लिए जानी जाती रही। वही अयोध्या जहाँ हिन्दू समाज के आराध्य श्रीराम जी का जन्म सकल लोक के मंगल हेतु हुआ। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास जी अयोध्यास का वर्णन कुछ इस प्रकार करते हैं- विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार। निज इच्छा निर्मित प्रभु माया गुन गो पार। । हिन्दू समाज की आस्था के केंद्र, समरसता, नैतिकता व कर्तव्यपालन का बोध कराने वाले श्रीराममंदिर का कालांतर में विध्वंस कर मुगल आक्रांताओं द्वारा गुलामी के प्रतीक के रूप में बाबरी मस्जिद बना दी गई। इसके बाद 1528 से ही आरंभ हुए श्रीराममंदिर आंदोलन का 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक निर्णय पर विराम हुआ। 5 अगस्त 2020 को भूमिपूजन के साथ करोड़ों लोगों की भावनाओं ने विविध प्रकार से उत्सव की अभिव्यक्ति की। यह एक ऐसा आंदोलन रहा जिसमें साधु-संतों ने युद्ध भी किया और वे आध्यात्मिक जागरण के केंद्र भी बने। बैरागी अभिराम दास (योद्धा साधु), राममंदिर आंदोलन के शलाका पुरुष महंत रामचन्द्र परमहंस, महंत अवैद्यनाथ व देवरहा बाबा ने संपूर्ण आंदोलन को एक दिशा प्रदान की। कोठारी बन्धुओं के बलिदान को हिन्दू समाज भला कैसे विस्मृत कर सकता है? विष्णु डालमिया, अशोक सिंहल वे तेजपुंज हैं, जिन्होंने सनातन ऊर्जा को संग्रहित कर इस पवित्र कार्य से जोड़ा। मंदिर आंदोलन के मूल में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका से सभी भलीभांति परिचित ही हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्यकताओं ने पूरे आंदोलन में जनजागरण करते हुए आस्था के उच्चतम प्रतिमानों को विश्वव्यापी स्वरूप दिया। विश्व हिंदू परिषद, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद सहित विचार परिवार के सभी संगठनों ने अपनी पूर्ण सामर्थ्य के साथ तत्कालीन सरसंघचालक बालासाहब देवरस की मंशा के अनुरूप धैर्यपूर्वक योजनाबद्ध आंदोलन किए। भारतीय जनता पार्टी द्वारा लाल कृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में देशव्यानपी रथयात्रा ने पूरे भारत में वातावरण का निर्माण किया तो असंख्य कारसेवकों के बलिदान ने राम राष्ट्र के इस यज्ञ में समिधा का कार्य किया। मंदिर आंदोलन के इतिहास में अनेक बलिदानियों के रक्त व उनके परिजनों के त्याग का बिंदु समाहित है। राममंदिर के प्रति समाज की आस्था इतनी प्रबल रही है कि जब श्रमदान आवश्यक था तब श्रमदान किया। वहीं राष्ट्रमंदिर को भव्यता और दिव्यता देने के लिए निधि समर्पण अभियान में जाति, वर्ग, दल, समूह के सभी बंधनों को ध्वस्त करते हुए जिससे जो बन पड़ा उसने भगवान श्रीराम के चरणों में समर्पण किया। भारतीय पंचांग के अनुसार पौष शुक्ल द्वादशी के दिन जो पिछले वर्ष 22 जनवरी 2024 को पड़ी थी, भगवान के विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा हुई थी। संपूर्ण भारत की आस्था के केंद्र श्रीराम मन्दिर के माध्यम से आध्यात्मिक चेतना को बल मिला और देशवासियों में स्वाभिमान का जागरण हुआ। वहीं जो लोग मन्दिर निर्माण का विरोध कर रहे थे उनके सारे अवरोधों का प्रति उत्तर भी इस एक वर्ष में मिला। प्राण-प्रतिष्ठा से प्रथम वर्षगांठ तक असंख्य दर्शनार्थियों ने न केवल रामलला के दर्शन किए बल्कि अयोध्या सहित आस-पास के क्षेत्र के आर्थिक तंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नागर शैली में निर्मित अलौकिक सुंदरता से परिपूर्ण श्रीराम मंदिर की लंबाई पूर्व से पश्चिम 380 फीट, चौड़ाई 250 फीट व ऊंचाई 161 फीट है। भव्य तीन मंजिला मंदिर में 392 स्तंभ और 44 द्वार हैं। भूतल में प्रभु श्रीराम का मोहक बाल रूप तो प्रथम तल में श्रीराम दरबार का गर्भगृह है। नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना व कीर्तन मंडप है। उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी विराजित हैं। मंदिर के समीप ही पौराणिक काल का सीताकूप रहेगा। 732 मीटर लंबे व 14 मीटर चौड़े चहुंमुखी आयताकार परकोटे के चार कोनों पर भगवान सूर्य, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव का मंदिर बनेगा। मंदिर परिसर में ही महर्षि वाल्मिकी, महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, निषादराज, माता शबरी व देवी अहिल्या के मंदिर प्रस्तावित हैं। यह मात्र एक मंदिर नहीं बल्कि भारत की संस्कृति और अस्मिता का प्रतीक है।

रक्सौल की बेटी निर्धन अनाथ एवं जरूरतमंदों की सहायता के लिए करेगी नानी बाई का मायरा कथा

भगत और भगवान के परीक्षा की सत्य कथा की अमर कहानी नानी बाई का मायरा पीएम मोदी से सम्मानित बेटी मानसी प्रस्तुत करेगी कथा

प्रातः किरण, संवाददाता

रक्सौल। मानव सेवा संस्थान ट्रस्ट उदयपुर राजस्थान एवं समस्त रक्सौलवासी द्वारा आयोजित गौ सेवा निर्धन अनाथ एवं जरूरतमंद के सहायतार्थ रक्सौल के श्री सत्यनारायण पंचायती मारवाड़ी मंदिर में दिनांक 13 से 15 जनवरी 2025 दोपहर 3 से 6 बजे तक भगत और भगवान के परीक्षा की सत्य कथा की अमर कहानी नानी बाई का मायरा मानव सेवा एवं देश सेवा में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से सम्मानित बेटी मानसी शर्मा द्वारा यह कथा कही जाएगी। मानसी 2 वर्ष की उम्र से ही दुर्गा दरबार मोजे चौक रक्सौल में शास्त्रीय भक्ति मय नृत्य करने के बाद श्याम बाबा का भजन गायन करती चली आ रही है, इसे भारत नेपाल के कई विभिन्न विभूतियों से सम्मानित होने का अवसर प्राप्त हो चुका है, जिसमें भारत के प्रधानमंत्री

नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, रेल मंत्री अश्विन वैष्णव, पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावेडकर, महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, भारत के पूर्व राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी, पूर्व विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, पूर्व सेना अध्यक्ष जनरल विक्रम सिंह, महिला एवं विकास मंत्री मेनका गांधी, पूर्व सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री थावरचंद गहलोत, बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, सांसद संजय जायसवाल, नेपाल के राष्ट्रपति रामचंद्र पौडेल, पूर्व राष्ट्रपति डॉक्टर रामबरन यादव, उपराष्ट्रपति परमानंद झा, नेपाल के प्रधानमंत्रीयो मे सूर्य बहादुर थापा, पुष्प कमल दहल प्रचंड, माधव कुमार नेपाल, झलनाथ खनाल, श्री शेर बहादुर देउवा इत्यादि शामिल है। भारत की फिल्म जगत की हस्तियों में विनोद खन्ना, रजा मुराद, गोविंदा, जैकी श्रॉफ, गुलशन ग्रोवर, मनीषा कोइराला, जीनत अमान, रवीना टंडन, अनुपम खेर, निर्देशक प्रकाश झा एवं भारत के प्रसिद्ध संतों गुरुओं में महामंडलेश्वर श्री शरणानंद जी महाराज, श्री चिदानंद सरस्वती, योग गुरु स्वामी रामदेव महाराज, आचार्य शिरोमणि श्री बालकृष्ण जी महाराज, मोरारी बापू जी, रिलायंस कंपनी के गुरु रमेश भाई ओझा, श्री श्री रविशंकर जी, देवकीनंदन जी महाराज, कौशिक जी महाराज, श्रेया भारती जी, देवी ऋतंभरा श्री कृष्ण शास्त्री जी सदानंद जी महाराज एवं नेपाल के संत गुरुओं में पशुपतिनाथ के मंदिर महंत आचार्य श्री राम गुरु जी, भारत के हास्य कलाकारों मे कपिल शर्मा, भारती जी, कृष्ण जी, सुदेश जी व भारत के प्रसिद्ध संगीतज्ञ विश्व विख्यात बांसुरी वादक हरिप्रसाद चौरसिया, पंडित जसराज, भारत टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी, विश्व विख्यात हस्तियों में कनाडा के विश्व विख्यात रॉकस्टार ब्रायन एडम्स डेनिश बैं, एमएलटीआर पाकिस्तान के रॉकस्टार आतिफ असलम सहित कई देश-विदेश की हस्तियों द्वारा मानसी को मानव सेवा एवं देश सेवा के लिए सम्मानित किया जा चुका है। यह रक्सौल वासियों के लिए बहुत गर्व की बात है। मानसी के पिता कलाकार व मानव सेवा संस्थान के ट्रस्ट अध्यक्ष रजनीश कुमार शर्मा ने बताया कि मानसी एवं हमारे ट्रस्ट का एक ही लक्ष्य है निर्धन अनाथ बेबस लोगों की निःशुल्क सेवा जो की कथा के माध्यम से हम सदा करते रहेंगे, मायरा आयोजन कमेटी के अध्यक्ष समाजसेवी महेश कुमार अग्रवाल ने बताया कि हम बेहद गर्व महसूस कर रहे हैं कि रक्सौल की बेटी अपना पहला मायरा रक्सौल की जन्म धरती से शुरूआत कर रही है और इस महोत्सव को सफल बनाने में हम कोई कसर बाकी नहीं छोड़ेंगे।

आश्रय विहिनों को सरकारी योजनाओं का लाभ मिलेगा : सहायक निदेशक

सामाजिक सुरक्षा कोषांग द्वारा स्पेशल कैंप का किया गया उद्घाटन

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा । शनिवार को सुप्रीम कोर्ट कमिटी के आदेशानुसार छपरा नगर निगम के दीन दयाल अंत्योदय योजना द्वारा संचालित आश्रय स्थल में सामाजिक सुरक्षा कोषांग के सहायक निदेशक राहुल कुमार के द्वारा एक सप्ताह के लिए आश्रय विहिनों के लिए सरकार के सभी योजना से जोड़ने हेतु स्पेशल कैंप का उद्घाटन किया गया क जिसमें सभी आश्रय विहिनों को सरकार द्वारा चलाये जा रहे योजना से जोड़ने को लेकर कैंप में लाभुकों को बताया गया और उसका समाधान भी किया गया क कैम्प के माध्यम से जिसका राशन कार्ड नहीं है उसका समाधान कैंप में आए हुए स्टॉफ द्वारा किया गया । कैंप मे आयुष्मान कार्ड, राशन कार्ड, वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन एवं विकलांग पेंशन बनाने हेतु सभी आश्रय विहिनों को विस्तृत रूप से बताया गया क स्पेशल कैंप मे आए हुए लाभुकों को सहायक निदेशक राहुल कुमार ने बताया कि आप सभी के लिए यह कैंप लगाया गया है, इसका लाभ आप अवश्य उठाये और सभी योजना से जुड़े क यह कैम्प सक्षम के आउटरीच वर्कर राजेश कुमार द्वारा एक सप्ताह तक चलाया जायेगा ' जिसमें सभी योजना से जोड़ने के लिए कैंप लगाया गया है क आश्रय स्थल के सिटी मिशन मैनेजर सुधीर कुमार हिमांशु द्वारा बताया गया कि आश्रय स्थल 2019 से संचालन कराया जा रहा है और हमेशा आश्रय स्थल में हेल्थ कैंप, हेल्प डेस्क एवं विभागीय दिशा -निर्देश के आलोक में आश्रय स्थल का संचालन कराया जाता है क यह स्पेशल कैंप एक सप्ताह तक चलेगा जिसमें सभी आश्रय विहिनों के लिए लगाया गया है कजिसमें सभी योजना से जोड़ने हेतु कार्य बेहतर ढंग से कराया जा रहा है ' कैंप के प्रथम दिन 5 लाभुकों को सरकारी योजना से जोड़ने को लेकर उनका डिटेल्स लिया गया क इस अवसर पर आश्रय स्थल के प्रबंधक अर्चना कुमारी, केयर टेकर बीनू देवी, संगीता देवी सहित अन्य लाभुक उपस्थित थे ।

संक्षिप्त खबरें

40 लीटर देसी शराब के साथ वार्ड पार्षद गिरफ्तार

प्रातः किरण, संवाददाता

एकमा । स्थानीय थाना पुलिस ने थाना क्षेत्र के गंज गांव निवासी व नगर पंचायत के वार्ड संख्या 18 के वार्ड पार्षद अमित कुमार चौधरी पिता शिवलाल चौधरी को 40 सीटर देसी शराब के साथ घर से गिरफ्तार को जेल भेज दिया।

ब्राउन शुगर के साथ सीमा क्षेत्र से दो तस्कर गिरफ्तार

रक्सौल। भारत-नेपाल सीमा पर मादक पदार्थ की तस्करी जोड़ो पर है, अब इस बार ब्राउन शुगर की तस्करी के आरोप में नकरदेई थाना पुलिस ने एक महिला और एक पुरुष को गिरफ्तार किया है। थानाध्यक्ष राम शरण साह ने बताया कि गुप्त सूचना के आधार पर यह कार्रवाई की गई। सूचना मिली थी कि क्षेत्र में ब्राउन शुगर की तस्करी होने वाली है। इसके बाद पुलिस ने पूरे इलाके में तलाशी अभियान चलाया। इस दौरान बाईक पर आ रहे एक पुरुष और महिला को रोका गया। जांच के दौरान उनके पास से 8 प्लास्टिक की पुड़िया में ब्राउन शुगर जैसा मादक पदार्थ बरामद हुआ। दोनों तस्करों की पहचान नकरदेई थाना क्षेत्र के सिरिसिया माल वीरता गांव के ओमप्रकाश साह की पत्नी ललिता देवी और वकील राय के पुत्र राधेश्याम यादव के रूप में हुई है। पुलिस दोनों आरोपियों से पूछताछ कर रही है। यह पता लगाया जा रहा है कि यह मादक पदार्थ कहां से लाया गया था और इसे कहां सप्लाई किया जाना था। पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। पुलिस का कहना है कि तस्करी रोकने के लिए सीमावर्ती क्षेत्रों में नियमित गश्त और निगरानी को और कड़ा किया जाएगा। ब्राउन शुगर जैसी मादक सामग्री के खिलाफ इस प्रकार की कार्रवाई जारी रहेगी।

विवाद में मारपीट, दोनों पक्षों ने कराई प्राथमिकी दर्ज

बगहा। वाल्मीकिनगर थाना क्षेत्र के चकदहवा गांव के बनई बिन ने थाने में आवेदन देकर अपने ही गांव के 11 लोगों आभा देवी, मनमोध बीन,सुशीला देवी ,आनंद कुमार ,चांदनी कुमारी, रघुनाथ बिन, सुगंधी देवी, सीमा देवी, राधेश्याम बिन, लाल कुमार, बिपत कुमार के विरुद्ध मुर्गी को मार कर उसका पैर तोड़ देने और उसके दरवाजे पर फेंक देने के मामले को लेकर हो रहे विवाद में मारपीट करने गाली गलौज करने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है वहीं दूसरे पक्ष ने भी बनई बीन, उमेश बीन, मुकेश कुमार, नीतीश कुमार, पप्पू कुमार शीला कुमारी, फूलमती देवी, रेशमी देवी, सरली देवी और रामायण बिन पर मारपीट करने, लाकेट छीन लेने का आरोप लगाते हुए प्राथमिकी दर्ज कराई है इस बाबत थाना अध्यक्ष संजय कुमार सिंह ने बताया कि दोनों पक्षों के आवेदन पर कांड संख्या 5 और 6 दर्ज कर मामले की जांच शुरू कर दी गई है।

पेड़ से लटका मिला शव ,पुलिस जांच में जुटी

बगहा ।बगहा में युवक का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई है। सूचना पर पहुंची पुलिस नें शव बरामद कर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेज दिया है ।दरअसल बगहा टाउन थाना क्षेत्र के बाड़ीपट्टी स्थित चौथी बगीचा की यह घटना है जहाँ पेड़ से लटका हुआ युवक का शव बरामद किया गया है। मृतक के शव के पास से कई नशीले पदार्थ बरामद किये गए हैं वहीं उसका चप्पल भी घटना स्थल से मिला है। मौके पर ग्रामीणों की भीड़ जुट गईं है ।सूचना पाकर फौरन मौके पर पहुंची पुलिस घटना की जाँच में जुटी है।

नेत्र जांच शिविर में सैकड़ों लोगों के आंखों की हुई जांच

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। सारण के छपरा विधानसभा नगरनिगम के प्रांगण में भाजपा जिला महामंत्री छपरा विधानसभा प्रभारी धर्मेंद्र कुमार साह एवं ओ0बी0सी0 मोर्चा के जिला अध्यक्ष पप्पू चौहान के द्वारा मुफ्त आंख का जांच का शिविर लगाया गया तथा आंखों की जांच निःशुल्क किया गया।आंख का चश्मा एवं दवा का वितरण शुरू किया गया।

जिसमें 282 मरीजों का की जांच कुशल चिकित्सको के द्वारा उचित इलाज किया गया। भाजपा के महामंत्री धर्मेंद्र कुमार साह ने बताया कि पूर्व में भी सोनारपट्टी दुर्गा स्थान पर कैंप लगाकर मरीजों का मोतियाबीन का सफल ऑपरेशन अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल मस्तीचक परसा में कराया गया। 400 मरीजों का मोतियाबिंद का ऑपरेशन निःशुल्क अखंड ज्योति आई हॉस्पिटल मस्तीचक में जल्द कराया जाएगा।

यह सिविल निरंतर चलता रहेगा और गरीब का जरूरतमंदों का इलाज होता रहेगा। छपरा विधानसभा के हर क्षेत्र में यह शिविर लगाया जाएगा। शिविर का उद्घाटन भाजपा नेता धर्मेन्द्र कुमार साह व पप्पू चौहान ने दीप प्रज्वलित कर किया।मौका पर सारण जिला कैंप इंचार्ज बब्लू कुमार डा0 राजकिशोर सिंह सलाहकार प्रमोद कुमार प्रचारक मनीष कुमार मौजूद रहे।

पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन ने की केंद्र सरकार से18 माह की फ्रीज मँहगाई राहत एरियर की माँग

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की मासिक बैठक 11 बजे दिन में पराशर कम्प्लेक्स भगवान बाजार में हुई। बैठक की अध्यक्षता कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने किया। बैठक को संबोधित करते हुए उप सचिव डॉ.ए एच अंसारी ने पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की छपरा शाखा की निरंतर हो रही उपलब्धियों पर खुशी जाहिर की और कहा कि जो कर्मचारी 30जून/31 दिसंबर को सेवानिवृत्त हुए हैं , उन्हें मुबारकबाद। ऐसे पेंशनर्स जो लोग कैट इलाहाबाद में याचिका दायर किए थे , उसको लागू करने का आदेश गोरखपुर मुख्यालय से निर्गत हो गया है। ऐसे पेंशनर्स को एक नोशनल इंक्रीमेंट का लाभ जल्द मिलेगा। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की ताकत है। इसलिए पेंशनर्स की

सदस्यता बढ़ने पर एसोसिएशन की ताकत भी बढ़ेगी। अगर पेंशनर्स की ताकत और एकता रही तो केंद्र सरकार को पेंशन को आयकर से मुक्त करना , एडिशनल पेंशन , आठवें वेतन आयोग गठन , अठारह महीने का मँहगाई राहत एरियर तथा चिकित्सा सुविधा में सुधार आदि हमारी मांगे माननी पड़ेगी। शाखा मंत्री मिथिलेश कुमार सिंह ने अपने संबोधन में पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन छपरा शाखा की उपलब्धियों को क्रमवार चर्चा की। जिन पेंशनर्स का जन्मदिन जनवरी माह है , उनको बधाई कार्ड देकर लंबी आयु की कामना दी ।उन्होंने एक तरह की चिकित्सा सुविधा सभी केंद्रीय कर्मचारियों को देने , एक्सग्रेसिया पेंशन को मिनिमम नौ हजार डीए सहित , नोशनल इंक्रीमेंट रेलवे पेंशनर्स का हेल्थ केयर अपग्रेडेशन , फिक्स मेडिकल एलाउंस तीन हजार डीए सहित आदि प्रमुख माँग की चर्चा की और कहा कि अगर हम एकजुट रहे तो केंद्र सरकार को विवश होना पड़ेगा। सभी सदस्यों ने जिनका जन्मदिन था , उनको बधाई एवं शुभकामनाएं दिए। पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन का नये साल का कैलेंडर सभी पेंशनर्स सदस्यों को वितरित किया गया। नये पेंशनर्स को एसोसिएशन की सदस्यता ग्रहण कराई गई। बैठक को संबोधित करते कार्यकारी अध्यक्ष ओ पी पराशर ने 65 , 70 , 75 वर्ष आयु पर क्रमशः 5 ,10 ,15 प्रतिशत अतिरिक्त भत्ता की माँग केंद्र सरकार से की। जाड़े के मौसम में पेंशनर्स को अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहने की सलाह दी और छपरा शाखा की उपलब्धियों पर खुशी जताई। पेंशनर्स की समस्याएं लिखित में एकत्र किया और रेलवे अस्पताल से रोगग्रस्त पेंशनर्स को उचित इलाज और दवा आपूर्ति की माँग की गई। उन्होंने ने कहा कि अब रेलवे अस्पताल से पेंशनधारियों को तीन माह की दवा इकट्ठे मिल रही है। यह पूर्वोत्तर रेलवे पेंशनर्स एसोसिएशन की देन है।

बैठक को संबोधित करने वालों में मुख्य रुप से मिथिलेश कुमार सिंह , ओ पी पराशर , मुंद्रिका प्रसाद , राजकुमार श्रीवास्तव , सुरेंद्र सिंह , पी के मांझी , सुधीर श्रीवास्तव , रामानंद महतो , रामनारायण तिवारी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

स्वामी विवेकानंद युवाओं के प्रेरक व्यक्तित्व: सेंगर

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के तत्वावधान में रविवार ।को विवेकानंद दिवस सह युवा दिवस के अवसर पर युवा मैराथन का आयोजन राजेन्द्र स्टेडियम, छपरा में हुआ। लड़के और लड़कियों के दोनों वर्गों में सैकड़ों बच्चों ने इसमें भाग लिया। इन सभी बच्चों को मेडल और प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर भाजपा नेता शैलेन्द्र सेंगर ने कहा कि स्वामी विवेकानंद भारत के दूरदर्शी नेताओं में से एक थे, जिनकी विचारधारा और कार्य आज

भी भारतीय युवाओं का मार्गदर्शन करते हैं। भारत के विकास में उनके योगदान को सम्मान देने के लिए, हर साल 12 जनवरी को उनकी जयंती पर राष्ट्रीय युवा दिवस (नेशनल यूथ डे) मनाया जाता है। स्वामी विवेकानंद का मानना था कि किसी भी देश की सबसे बड़ी शक्ति, उस राष्ट्र के युवा हैं। स्वामी विवेकानंद का कहना था कि ह्यतुम मुझे 100 युवा दो, मैं पूरे विश्व को बदल दूंगा।ह्ण उनके इस पंक्ति से आप अंदाजा लगा सकते हैं कि युवाओं में कितनी बड़ी शक्तियां समाहित है। डाङ्ग पूनम सिंह ने कहा कि आज राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप हम विवेकानंद जी के आदर्शों पर बात कर रहे हैं ञऔर इसे कैसे अपने जीवन में आत्मसात करना है ये हमें सोचना है। डा विवेकानंद तिवारी ने कहा कि इस दिन को राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है, जो समाज में युवाओं के प्रेरक योगदान और युवा पीढ़ी को व्यक्तिगत विकास, आत्म-सुधार और सामाजिक प्रगति की दिशा में प्रयास करता है। राष्ट्रीय युवा दिवस विवेकानंद की विरासत का सम्मान करने और युवाओं को उनके पदचिन्हों पर चलने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए मनाया जाता है। यह याद रखने का दिन है कि किसी देश का भविष्य उसके युवाओं के हाथों में होता है और जब वे खुद को नेक कामों के लिए समर्पित करते हैं, तो देश अधिक ऊंचाइयों तक पहुंच जाता है। डा जया पाण्डेय ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने एक बार कहा था, ह्लउठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।ह्व उनके शब्द हमेशा युवाओं के लिए मार्गदर्शक रहे हैं, जो उन्हें बाधाओं को तोड़ने, अपने सपनों का पीछा करने और चुनौतियों का सामना करने के लिए प्रेरित करते हैं।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर आयोजित किया गया युवा चेतना सम्मेलन

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। भारतीय जनता पार्टी युवा मोर्चा द्वारा आयोजित युवा चेतना सम्मेलन कार्यक्रम रविवार को सेंट्रल पब्लिक स्कूल के प्रांगण में आयोजित किया गया ! आज के कार्यक्रम को संबोधित करते हुए हृदय रोग चिकित्सक डा राजीव रंजन जी ने कहा कि स्वामी जी का विचार मुख्यत सांस्कृतिक राष्ट्र जागरण की क्रांति है जो मुख्यतः युवा शक्ति को आह्वान करती है ! शिक्षाविद् प्रो अरुण सिंह ने युवाओ को संबोधित करते हुए कहा कि स्वामी जी के उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य को पा नही ले ! प्रो हरेन्द्र सिंह सेंट्रल पब्लिक स्कूल के निदेशक ने अपने संबोधन में कहा कि स्वामी विवेकानंद जी के अध्यात्म के आधार पर भारत के विरासत को उँचाई पर ले जाने का सपना हमे तब दिखाए जब भारत परतंत्र था , कार्य क्रम के मुख्य अतिथि और भाजपा जिला अध्यक्ष रंजीत कुमार सिंह ने संबोधन में कहा कि एक नरेन्द्र समर्थ भारत का सपना देखा था जिसे दुसरा नरेन्द्र विकसित भारत संकल्प के साथ आगे बढ रहे है , और दोनो नरेन्द्र ने संकल्प और सपना पुरा करने के लिए युवा शक्ति को आह्वान किया है आप युवा भारत के वर्तमान और भारत के भविष्य है ! कार्य क्रम का विषय प्रवेश युवा मोर्चा के जिला अध्यक्ष राजीव कुमार सिंह ने किया और मंच संचालन गौरव सिह किसन द्वारा किया गया ! आज के कार्यक्रम में विशेष मार्ग दर्शन युवा मोर्चा के क्षेत्रीय प्रभारी राजीव तिवारी जी का प्राप्त हुआ और आज विभिन्न क्षेत्र में अपने विशिष्ट पहचान रखने वाले सैकरो युवा युवती को मोमेंटो अंगवस्त्र और माला देकर सम्मानित किया गया ! आज के कार्यक्रम में गरिमामय उपस्थित पूर्व मेयर राखी गुप्ता , माझी के पुर्व प्रत्याशी राणा प्रताप उर्फ डबलू सिंह, बिहार भाजपा क्रिरा प्रकोष्ठ संयोजक अभय सिंह ,नगर मंडल अध्यक्ष संस्कार गुप्ता,युवा मोर्चा महामंत्री सुजित प्रियदर्शी,कृष्णा शर्मा,दुर्गेश गुप्ता, सुधाशु सिंह ,आकाश सिंह कार्य क्रम प्रभारी मनीष मिश्रा, शुभम वर्मा आदिथे

युवा संवाद सह मकर संक्रांति मिलन समारोह का हुआ आयोजन

युवा ही देश की दिशा और दशा तय करते है: इं प्रभाष शंकर

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय। संगम मॉडर्न स्कूल सलेमपुर स्थित प्रागंण में युवा दिवस के अवसर पर युवा संवाद सह मकर संक्रांति का आयोजन स्कूल के डायरेक्टर प्रवीण कुमार शांडिल्य की अध्यक्षता में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से युवाओं की भागीदारी हर क्षेत्र में कैसे मजबूत हो इसपर ही चर्चा विस्तृत रूप से हर वक्ताओं ने रखा। कार्यक्रम में जिला महासचिव जेडीयू सारण के इं प्रभाष शंकर ने युवाओं को अपनी ताकत को पहचान कर सही दिशा में आगे बढ़ने की बात कही ।साथ ही कहा कि युवा ही देश की दिशा और दशा तय करते है ।इस उपलक्ष पर शिक्षा जागृति मंच का विधिवत रूप से गठन किया गया ।जिसका मुख्य उद्देश्य सारण

जिला में शिक्षा का समग्र विकाश कैसे हो पर कार्य किया जाएगा ।इस कार्यक्रम में संगम मॉडर्न पब्लिक स्कूल के डायरेक्टर ने शिक्षा में अनुशासन की आवश्यकता की जरूरत की बात कही।

साथ ही शिक्षा में माता पिता के रोल को भी बड़ी गंभीरता से लेने के चर्चा की ।इस कार्यक्रम का संचालन राकेश कुमार ने किया।

कार्यक्रम में आए अतिथियों का शेख नौशाद ने अंग वस्त्र देकर सभी का स्वागत किया ।कार्यक्रम में मुख्य रूप से जेडीयू प्रदेश महासचिव किसान प्रकोष्ठ अशोक कुमार,,राम प्रकाश सिंह,अमित गुप्ता , इम्तियाज खान गुड्डु,राजेश सिंह, दिनेश सिंह गुड्डु, चुन्नू सिंह,राकेश भूषण पांडे, शिक्षक नेता सुनील कुमार,सुरजीत सिंह,यशपाल, डॉ प्रेम शंकर दत्ता, ज्ञान प्रकाश,सुरेश कुमार, रविशंकर सिंह,अजीत कुमार ठाकुर,अभय सिंह, सिद्धांत शांडिल्य,चंदन सिंह,आलोक जायसवाल, सुधाकर कुमार, ज्ञानचंद शर्मा, अमरेंद्र कुमार,सुरेश तिवारी,मुकेश कुमार, मुन्ना मिश्रा,अम्बर मनी, रवींद्र पाण्डेय इत्यादि उपस्थित हुए।

जयन्ती पर भाविप ने स्वामी विवेकानंद को किया याद

प्रातः किरण, संवाददाता

रक्सौल। स्वामी विवेकानंद की 161वीं जयंती पर भारत विकास परिषद रक्सौल शाखा ने याद किया। इसके निमित्त शहर के कौड़िहार चौक समीप स्थित परिषद के कार्यालय में जयंती समारोह संपन्न हुआ। कार्यक्रम में वन्देमातरम गीत के बाद स्वामी विवेकानंद के तैलचित्र पर पुष्प चढ़ा श्रद्धा-सुमन अर्पित किया गया। इस मौके पर परिषद के संरक्षक अवधेश सिंह ने स्वामी जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर गहन प्रकाश डालते इस बात को रेखांकित किया कि दुनिया को भारत और भारतीयता का मर्म समझाने वाले महान ज्ञाता और दिग्गज वक्ता स्वामी विवेकानंद जी पूरे विश्व के लिए प्रेरणास्रोत एवं मार्गदर्शक हैं। स्वामीजी ने अल्पायु में ही

भारतीयता का परचम वैश्विक मंच पर लहराया वह हम सभी भारतीयों के लिए गर्व की बात है। वहीं अध्यक्ष डॉ.राजेन्द्र प्रसाद सिंह ने कहा कि स्वामी का संपूर्ण व्यक्तित्व युवाओं के लिए आदर्श है तथा देश के सभी युवाओं को उनके जीवन से सीख लेकर स्वयं के जीवन में आगे बढ़ने तथा राष्ट्र को एक नयी ऊँचाई प्रदान करने के लिए संकल्पबद्ध होने की जरूरत है। वहीं परिषद के सचिव सह मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने कहा कि माँ भारती के अनन्य उपासक युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानंद रामकृष्ण परमहंस के प्रमुख शिष्यों में से एक थे, रामकृष्ण परमहंस ने नरेंद्र नाथ की बुद्धि और जिज्ञासा को पहचान और अपना शिष्य बना लिया था इसलिए उन्होंने वेदांत, भक्ति और अन्य आध्यात्मिक विषयों का गहरा ज्ञान दिया था । 1883 के शिकागो के विश्व धर्म संसद में स्वामी विवेकानंद का उद्बोधन भारतीय संस्कृति और दर्शन के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ, जिसे आज भी याद किया जाता है। वहीं परिषद के पूर्व सचिव नीतेश कुमार सिंह, संगठन सचिव सुनील कुमार ने संयुक्त रूप से स्वामी जी को अपना श्रद्धा-सुमन अर्पित करते हुए कहा कि स्वामी जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि तब होगी जब हम मन वचन कर्म से उनके सिद्धांतों एवं आदर्श पर चलकर सतत राष्ट्र के समग्र उत्थान के लिए प्रयत्नशील रहें।इस मौके पर अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद सिंह, सचिव सह मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी, नीतेश कुमार सिंह, अजय कुमार, सुनील कुमार, सुरेश धानोठिया, प्रशांत कुमार, विनोद रौनियार, राम एकबाल प्रसाद समेत परिषद के कई सदस्य उपस्थित रहे। इसकी जानकारी परिषद के सचिव सह मीडिया प्रभारी रजनीश प्रियदर्शी ने दी।

भाजपा की शब्दों की राजनीति पर सारण राजद का दो टूक जवाब

प्रातः किरण, संवाददाता

छपरा कार्यालय ।भाजपा नेताओं ने राजद के हालिया ट्वीट में इस्तेमाल किए गए एक शब्द को पकड़कर अपनी राजनीति चमकाने की कोशिश शुरू कर दी है। यह हास्यास्पद है कि भाजपा मुद्दों से ध्यान भटकाने के लिए शब्दों की राजनीति कर रही है, जबकि ट्वीट का असली सवाल बिहार को विशेष राज्य का दर्जा देने से जुड़ा था। यह विडंबना ही है कि भाजपा इस गंभीर सवाल पर मौन साधे हुए है। उक्त बातें सारण राजद जिला अध्यक्ष सुनील राय के हवाले से प्रवक्ता डॉ अमित रंजन ने कही ।

उन्होंने आगे कहा कि राजद का ट्वीट सीधे-सीधे भाजपा की कथनी और करनी के बीच के अंतर को उजागर करता है। ट्वीट में प्रयुक्त शब्द का ठोस अर्थ है जो अपनी बातों, नीतियों और वादों में स्थिर न हो और दोहरा चरित्र दिखाए। भाजपा की राजनीति इसी का परिचायक है। चुनाव के समय बिहार के विकास के वादे करना और सत्ता में आते ही बिहार को हाशिए पर धकेल देना भाजपा की पुरानी आदत बन चुकी है।

उन्होंने आगे कहा कि भाजपा को यह समझना होगा कि बिहार की जनता अब उनकी खोखली बातों और ध्यान भटकाने वाली राजनीति से भ्रमित नहीं होगी। अगर भाजपा को सच में बिहारियों की चिंता है, तो वह विशेष राज्य का दर्जा देने के मुद्दे पर चर्चा करे और अपने वादों को पूरा करे।

नगर निगम क्षेत्र का चौतरफा विकास मेरा सर्वोपरि सपना: गरिमा

- नाला निर्माण के निरीक्षण में पहुंची महापौर ने दी नगर निगम से स्वीकृत अनेक योजनाओं का चयन मुख्यमंत्री समग्र विकास योजना से होने की जानकारी

प्रातः किरण, संवाददाता

बेतिया। नगर निगम महापौर गरिमा देवी सिकारिया ने कहा कि संपूर्ण नगर निगम क्षेत्र का चौतरफा विकास मेरा सर्वोपरि सपना और संकल्प है। वे वार्ड सात के कमलनाथ नगर के पास संत तेरेसा चौक से खीरी के पेड़ मोड तक के नगर निगम से जारी नाला नाला निर्माण कार्य का निरीक्षण करने पहुंची थीं। इस मौके पर महापौर ने नगर निगम के सघन शहरी क्षेत्र के लिए नगर निगम से प्रस्तावित आधे दर्जन उनकी विभिन्न योजनाओं का चयन मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना से कर लिया गया है। श्रीमति सिकारिया ने बताया कि इसमें एक करोड़ 64 लाख से भी अधिक से बनने वाले कमलनाथ नगर के खीरी पेड़ से एनएच 727 तक के सुप्रिया सिनेमा पीसीसी रोड का निर्माण स्वीकृत हुआ है। महापौर ने बताया कि इसके अलावा इसी रोड से होकर मुख्य नाला निर्माण की एक और योजना इससे पूर्व ही नगर निगम बोर्ड द्वारा स्वीकृति देकर विभाग द्वारा स्ट्रांम वाटर ड्रेनेज योजना के तहत निविदा प्रक्रिया भी पूरी करते हुए कार्य का आवंटन भी कर दिया गया है। इसके साथ ही महापौर ने यह भी बताया कि नगर विकास एवं आवास विभाग के संकल्प के अंतर्गत मुख्यमंत्री समग्र शहरी विकास योजना के तहत नगर निगम से प्रस्तावित 22.83 करोड़ लागत वाली कुल 23 योजनाओं की स्वीकृति भी जिला के प्रभारी मंत्री की अध्यक्षता वाली चयन समिति की बैठक में बीते माह ही स्वीकृति प्रदान कर दी गई है। महापौर ने बताया कि नए साल में निविदा प्रक्रिया के माध्यम से कुल 56 करोड़ से भी अधिक के लागत वाले ड्रेनेज सिस्टम के नव निर्माण के साथ 22.83 करोड़ लागत वाली कुल 23 योजनाओं का पूरा होना सुनिश्चित हो गया है। अब कमलनाथ नगर की वर्षों से इस जर्जर सड़क का निर्माण इसी वर्ष हो जाएगा।

शिया वफ्फ बोर्ड के चेयरमैन ने किया कंबल का वितरण

लहलादपुर। प्रखंड क्षेत्र के लशकरीपुर गांव में शिया वफ्फ बोर्ड बिहार के चेयरमैन सैयद अफजल अब्बास ने रविवार को अपने पैतृक आवास पर गरीबों के बीच कंबल वितरण किया. इस कड़ाके की ठंड में लगभग ढाई सौ गरीब जरूरतमंद कंबल पाकर खुश हुए तथा अब्बास को दुआ दिए. कंबल वितरण के दरम्यान सैयद अफजल अब्बास ने कहा कि जरूरतमंदों के साथ शिया वफ्फ बोर्ड हमेशा खड़ा रहता है और रहेगा. उन्होंने कहा कि मानवता से बढ़कर कोई बड़ा धर्म नहीं है. इस मौके पर उन्होंने यह भी कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में बिहार का चौतरफा विकास हुआ है और हो रहा है, आने वाले विधानसभा चुनाव में नीतीश कुमार के नेतृत्व में एनडीए की सरकार बनेगी तथा नीतीश कुमार ही बिहार की जनता के सर्वमान्य रहेंगे '

फरार चल रहे चार अभियुक्तों को नौरंगियां पुलिस ने गिरफ्तार कर जेल भेजा

बगहा। बगहा सीजेएम न्यायालय के आदेश के आलोक में टीआर 827/24 और आईएफ 53/16 के अभियुक्तों को नौरंगियां पुलिस ने थानाध्यक्ष अजय कुमार ने एएसआई धर्मेन्द्र कुमार के सहयोग से दबिश कर नौरंगियां से गिरफ्तार किया और त्वरित कार्यवाई में इन अभियुक्तों रमेश चौधरी, मुकेश चौधरी,नथुनी भर और भुआल चौधरी को (सभी नौरंगियां निवासी) न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया गया है।

विवेकानंद की मनाई गई जयंती, उनके आदर्शों पर चलने का लिया संकल्प

प्रातः किरण संवाददाता

बिक्रमगंज (रोहतास) । शहर के नासरीगंज रोड स्थित अखंड क्लासेस में रविवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती युवा दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम की शुरूआत उनके तैल चित्र पर पुष्प अर्पण के साथ किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित प्रतियोगी विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए मुख्य वक्ता समरसता पुरुष संजय तिवारी ने विवेकानंद के आदर्शों पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान के युवाओं के लिए अनुकरणीय बताया। वही कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि बलिराम मिश्रा ने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने अपने साधु स्वरूप से विश्व पटल पर भारत की स्वाभिमान बढ़ाने का काम किया था। क्लासेस के संचालक धनंजय सिंह ने छात्रों को जीवन में स्वयं के साथ राष्ट्र चिंतन का सुझाव दिया। एबीवीपी के रोहतास जिला विभाग संयोजक सूरज ने संगठन के कार्य एवं बिस्तर पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन वरिय स्वयंसेवक संतोष भंडारी द्वारा किया गया। मौके पर नवीन चंद्र शाह, नागेश्वर कुशवाहा,नगर मंत्री रितेश दुबे, विस्तारक कुश पांडेय आदि थे।

बीपीएससी अभ्यर्थियों के समर्थन में सासाराम बंद

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास)। बीपीएससी 70वीं रि- एक्जाम खाद की कालाबाजारी पूर्णिया के निर्दलीय सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव के बिहार बंद के आहवान पर रोहतास जिले के पप्पू यादव समर्थको ने सासाराम प्रदर्शन किया।सासाराम में बंद का नेतृत्व युवा शक्ति के प्रदेश अध्यक्ष तोराब नियाजी ,लालसाहेब सिंह ने संयुक रूप से किया।पप्पू यादव समर्थक विशाल कुशवाहा ने बताया कि छात्र युवा किसान विरोधी सरकार है। एक तरफ बिहार के प्रतियोगी परीक्षाओं में अनियमितता होने से बिहार के छात्रों के भविष्य के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है वहीं दूसरी तरफ किसानों के खेत में नहरों का पानी नहीं पहुंचना तथा फसलों के लिए खाद के कालाबाजारी होना,दोगुने दाम पर खाद बिकना किसानों के साथ नाइंसाफी है।

ऐसे में बिहार राजधानी में राजमहल में बैठ कर छात्रों, युवाओं, किसानों के साथ अन्याय करने वाली एनडीए सरकार को इसका खामियाजा भुगतना पड़ेगा। जाप के पूर्व जिला अध्यक्ष ई विशाल कुशवाहा ने कहा कि बीपीएससी छात्रों के मांगो के समर्थन में धरना,अनशन,पुतला दहन,चक्का जाम आदि चरणबध आंदोलन हुआ सरकार जब छात्रों की मांगो को अनसुनी कर दी तब इस गूंगी बहरी सरकार के बिहार बंद के माध्यम सरकार तक छात्रों, युवाओं, किसानों की मांग को पहुंचना पड़ रहा है।

इस दौरान सासाराम विनोद सिंह यादव, सागर यादव, मनीष कुशवाहा,धनजी यादव,राहुल कुमार,महमूद अलम,समीर,काशी यादव, विजय बैठा, अजित राम, रंगनाथ सिंह, सोनू गुप्ता आदि लोग मौजूद रहे।

डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी त्रिची तमिलनाडु में भाग लेंगे रोहतास के स्काउट और गाइड

प्रातः किरण संवाददाता

सासाराम(रोहतास)। बिहार राज्य भारत स्काउट और गाइड बुद्ध मार्ग पटना के निदेर्शानुसार रोहतास जिला से 28 स्काउट गाइड यूनिट लीडर जिला शिक्षा पदाधिकारी सह सभापति भारत स्काउट और गाइड रोहतास के निदेर्शानुसार जिला संगठन आयुक्त श्री अरविन्द कुमार सिंह एवं गाइड कैप्टन आरती सिंह के नेतृत्व में रोहतास जिला का प्रतिनिधित्व करने के लिए भारत स्काउट और गाइड की 75 वीं स्थापना दिवस पर डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी का आयोजन 28 जनवरी 2025 से 3 फरवरी 2025 तक तमिलनाडु के शीपकाट, तरिचिपल्ली जिला त्रिची में किया जा रहा है।

डायमंड जुबली जंबूरी में पड़ोसी देश के लगभग 1500 स्काउट गाइड सम्मिलित होंगे। उन्होंने बताया कि त्रिची में विभिन्न ऐतिहासिक, धार्मिक, और पर्यटन स्थलों का भ्रमण कर वहां की लोक संस्कृति, वेशभूषा, खान पान, पहनावा, प्राकृतिक छटाओं का अवलोकन कर हमारे यहां की विविधताओं का प्रदर्शन करेंगे।जंबूरी में विभिन्न प्रतियोगिताएं जिनमें स्टेट गेट, केम्प क्राफ्ट, शिविर ज्वाल, पायनीयरिंग प्रोजेक्ट, मार्चपास्ट, कलर पार्टी, लोकगीत, लोकनृत्य, फिजिकल डिस्प्ले, बेंड डिस्प्ले, झांकी,पायोनियारिंग किया जाएगा प्रदर्शन कार्यक्रम में रोहतास जिला से भाग लेने के लिए चयन किया गया है श्री दुर्गा उच्च विद्यालय शिवसागर से रविशंकर कुमार,अंकित कुमार,प्रिंस कुमार,अयुष कुमार,सुगम कुमारी, लक्की कुमारी,काजल कुमारी, रिया कुमारी,खुशी कुमारी,मनिषा कुमारी, श्री स्वामी आत्मा विवेकानंद उच्च विद्यालय रेड़िया चेनारी से शिवम कुमार सिंह, नारायनपुर से शिवम कुमार, उच्च विद्यालय रायपुरचोर से खुशी कुमारी,उच्चतर माध्यमिक विद्यालय करगहर से मोहित कुमार,रौशन आरा,गोपालपुर करगहर से अंकिता कुमारी, श्री गंगा पासवानअनुङ्ग जाति उच्च विद्यालय कोचस से सत्यम पटेल, उत्क्रमित उच्च विद्यालय बेलवैयाँ दिनारा से अमृत कुमार सिंह,राजबली कुमार, ऊअ.श.सेमरा बिक्रमगंज से अर्पित सिंह,करन पासवान,हरिओम कुमार, मोनू यादव,नन्द किशोर,ध्रुव कुमार और अमन राज डायमंड जुबली राष्ट्रीय जंबूरी त्रिची तमिलनाडु में प्रदर्शन करेंगे।

बीपीएससी अभ्यर्थियों के मांगों के समर्थन में छात्र युवा शक्ति के द्वारा पूरे बिहार को बंद को लेकर आरा में भी किया सड़क जाम

प्रातः किरण संवाददाता

आरा । पूर्णिया सांसद राजेश रंजन उर्फ पप्पू यादव जी के अनुसार बीपीएससी अभ्यर्थियों के मांगों के समर्थन में छात्र युवा शक्ति के द्वारा पूरे बिहार को बंद कराने का आदेश प्राप्त हुआ जिसके तहत छात्र युवा शक्ति भोजपुर के द्वारा भी भोजपुर जिले के आरा शहर को बंद कराया गया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे पूर्व जाप जिला अध्यक्ष आशुतोष सिंह ने बताया कि बीपीएससी अभ्यर्थी के सभी मांगे जायज है जिसमें परीक्षा का री एग्जाम एवं पेपर लीक का उच्च स्तरीय जांच महत्वपूर्ण है और उनको सरकार के द्वारा जल्द ही मान लेनी चाहिए।इस कड़ाके की ठंड में बीपीएससी अभ्यर्थी पटना के गर्दनीबाग में पिछले 20-22 दिनों से लगातार धरना प्रदर्शन कर रहे हैं लेकिन उनको सरकार लगातार अनदेखी कर रही है। युवा और छात्रों के साथ खिलवाड़ ठीक नहीं है। छात्र और युवा देश के भविष्य होते है। वही जाप नेता डॉक्टर बृजेश कुमार सिंह ने बताया कि जब तक अभ्यर्थियों की मांगे सरकार नहीं मान लेती है तब तक इस तरह की धरना प्रदर्शन, रोड जाम, बिहार बंद छात्र युवा शक्ति भोजपुर करती रहेगी । वही जाप नेता लड्डू यादव ने बताया कि इस कड़ाके की ठंड में पटना के गर्दनीबाग में धरना प्रदर्शन कर रहे हैं अभ्यर्थियों के साथ लाठी डंडे की बौछार के साथ-साथ वॉटर कैनल से पानी बरसाना कहां तक जायज है, मानवाधिकार भी इस मामले में कुछ नहीं बोल रही है। नीतीश सरकार को इसके प्रति सकारात्मक रवैया अपनाने की जरूरत है ।जाप नेता संजय यादव उर्फ.नेताजी ने बताया कि पटना के गर्दनीबाग में धरना प्रदर्शन करने वाले छात्रों पर लाठी बरसाना बिल्कुल ही जायज नहीं है और वहां के सिटी एसपी को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दोषी पुलिस कर्मियों पर सख्त कार्रवाई करने की जरूरत है जाप छात्र नेता सुजीत कुशवाहा ने बताया कि पटना के गर्दनीबाग में बैठे अभ्यर्थियों पर जो ऐफ आइ आर की गई है उसको तुरंत वापस लेनी चाहिए यह कहीं से वाजिब नहीं है । इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से अजय कुमार सुमन, अमरेश कुमार अर्जुन यादव, सनोज यादव, मनोज यादव, कुणाल सिंह, अभिनव सिंह, गुड्डू यादव, रवि शंकर सिंह, रंजीत कुमार पप्पू, छात्र नेता रजनीश यादव, राम तपस्या यादव एवं सैकड़ो कार्यकरता मौजूद थे।

श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में समाजवादी चिंतक स्वर्गीय पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव का मनाया गया पुण्यतिथि समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

आरा (श्री कृष्ण चेतना समिति सभागार में समाजवादी चिंतक पूर्व केंद्रीय मंत्री शरद यादव जी का पुण्यतिथि समारोह प्रो बिरेन्द्र राय के अध्यक्षता में आयोजित किया गया।कार्यक्रम के संचालन यादव रामसकल सिंह भोजपुरिया ने तथा उद्घाटन जिला परिषद के पूर्व अध्यक्ष हाकिम प्रसाद ने उनके तैल चित्र पर माल्यार्पण कर किया।समारोह को सम्बोधित करते समाजवादी नेता अजय यादव ने कहा कि शरद यादव जी समाजवाद के प्रखर प्रहरी थे उन्होंने1974में पहली दफा लोकसभा के चुनाव जीते थे उसके बाद उतर प्रदेश के बूंदाऊ लोकसभा तथा बिहार के मधपुरा लोकसभा से चुनाव जीत कर अनेको बार केंद्रीय मंत्री के रूप में कार्य कर चुके हैं।प्रो विजय सिंह मुखिया ने अपने सम्बोधन में कहा कि शरद यादव जी आरक्षण के जन्मदाता थे स्वर्गीय रामविलास पासवान और शरद यादव के प्रयास से श्री वीपी सिंह जी ने7अगस्त1990में मण्डल कमीशन की घोषणा की थी।राजद के बरिष्ठ नेता महेश यादव ने कहा कि शरद यादव जी के कथनी और करनी में अंतर नही रखते थे उन्ही के दें था कि गुदड़ी के लाल श्री लालू प्रसाद यादव बिहार के मुख्यमंत्री बने थे।हाकिम प्रसाद ने कहा कि शरद यादव अकेला ब्यक्ति थे जिन्होंने महिला आरक्षण आरक्षण के लिए महिला बिल को रोक दिया था आज शरद यादव जी रहते तो बिना अनुचित जाति पिछड़ा वर्ग के महिलाओं के आरक्षण दिये बिना महिला आरक्षण बिल को पास नही होने दिये थे।

ग्राम रक्षा दल शाह पुलिस मित्र संगठन का आरा रमना मैदान में एक दिवसीय बैठक संपन्न

प्रातः किरण संवाददाता

आराः रविवार को आरा के रमना मैदान ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र बिहार संगठन का एक दिवसीय बैठक किया गया बैठक की अध्यक्षता जिला अध्यक्ष राजकिशोर प्रसाद ने किया वहीं बैठक का संचालन जिला सचिव तिवारी बाबा ने किया वहीं वहीं बैठक का नेतृत्व बिहार संगठन प्रदेश उपाध्यक्ष सह अध्यक्ष धीरज कुमार सिंह ने किया वहीं विहार प्रदेश अध्यक्ष सह उपाध्यक्ष श्री सिंह ने कहा कि बिहा ग्राम रक्षा दल सह पुलिस मित्र के सिपाही कई वर्षों से गांव में सुरक्षा प्रदान कर रहे हैं। लेकिन, सरकार द्वारा उन्हें मासिक भत्ता नहीं दिए जाने से वे भुखमरी के कगार पर आ पहुंचे हैं। बावजूद, सरकार ध्यान नहीं दे रही है। वही मीटिंग के दौरान बिहार के सभी जिलों में पुलिस मित्र सह ग्राम रक्षा दल के सिपाहियों को नियमित करने, उन्हें मासिक भत्ता देने और प्रशिक्षण प्रदान कर सरकारी सुविधा प्रदान करने की मांग की गई। साथ ही साथ साल में एक बार वर्दी आपूर्ति करने की भी मांग प्रमुख रूप से उठाई गई। वही संगठन के जिला अध्यक्ष राज किशोर प्रसाद ने कहा कि ग्राम रक्षा दल साहू पुलिस मित्र आरा जिला का जांच प्रतिवेदन बिहार सरकार के द्वारा भेजा गया है सभी सदस्यों को एक साथ बैठक का निर्देश दे दिया गया है कि अपने-अपने थाना से संपर्क कर सूची में नाम चढ़ा ले।

संक्षिप्त खबरें

योग भगाए रोग ग्रुप के सदस्यों ने कंबल वितरण किया

प्रातः किरण संवाददाता

डेहरी(रोहतास) । सामाजिक संस्था योग भगाए रोग ग्रुप के सदस्यों ने शनिदेव मंदिर रतूबिगहा, डेहरी स्टेशन परिसर और नगरपालिका बस स्टैंड परिसर में घूम घूम कर जरूरतमंदों में कम्बल वितरण किया। योग भगाए रोग ग्रुप के अध्यक्ष बबलू मधेशिया ने बताया कि ग्रुप के सदस्य शहर के गली मोहल्लों में भी गरीब और जरूरतमंदों को चिन्हित कर भोजन, कम्बल और वस्त्र का वितरण कर रहे है। मौके पर विकास कुमार, पिंटू कुमार, प्रिंस गुप्ता ,आर के सिंह, दिलीप तिवारी, इंद्र मोहन जायसवाल, अजय कुमार, चिंटू कुमार और पंकज रंजन उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय युवा दिवस पर पौधारोपण

दिनारा(रोहतास) । दिनारा प्रखंड क्षेत्र अंतर्गत नटवार बाजार स्थित ठाकुरबाड़ी में राष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर हिमांशु सिंह के नेतृत्व में युवाओं ने दर्जनों आम व जामुन के पौधे लगाए । इस मौके पर लोगों को संबोधित करते हुए हिमांशु सिंह ने बताया कि बढ़ती जनसंख्या और घटते वन क्षेत्र से पर्यावरण की बहुत नुकसान हो रहा हैं । ऐसे में इनकी देखभाल और पर्यावरण संतुलन बनाए रखना हर व्यक्ति का परम कर्तव्य हैं । मौके पर जितेंद्र शर्मा,एच के सिंह,शिक्षक मुन्ना प्रसाद,उदय प्रकाश सिंह,मोनू कुमार,आशीष सिंह, अप्पू सिंह,बिट्टू कुमार सहित अन्य लोग उपस्थित रहे ।

अवैध रूप से विद्युत जलाते हुए 6 लोगों पर प्राथमिकी दर्ज

आदापुर। अवैध रूप से बिजली जलाते पकड़े जाने पर विद्युत विभाग ने छह लोगों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराया है। इसको लेकर विद्युत जेई प्रीतम कुमार बंटी ने आदापुर एवं हरपुर थाना में अलग-अलग प्राथमिकी दर्ज कराया है। इस संदर्भ में विद्युत जेई ने कचरबारी गांव निवासी इकबाल ठाकुर, मुकेश पटेल, प्रमोद पटेल व विश्वनाथ ठाकुर के विरुद्ध हरपुर थाना में बतौर जुमार्ना क्रमशः साढ़े अठारह हजार, नौ हजार, अठारह हजार तथा सत्रह हजार क्षति पूर्ति होने का जुमार्ना लगाया गया है। वहीं श्यामपुर बाजार निवासी आकाश कुमार पटेल एवं शिवम कुमार के विरुद्ध अठारह आठ उन्नीस हजार रुपए का जुमार्ना ठोकते हुए आदापुर थाना में प्राथमिकी दर्ज कराया गया है। विद्युत विभाग के इस कार्रवाई से चोरी की बिजली जलाने वालों में हड़कंप व्याप्त है।

राम मंदिर के प्रथम वर्षगांठ पर जिले के कई स्थानों पर हिन्दू जागरण मंच द्वारा हुई भव्य महाआरती

प्रातः किरण संवाददाता

गौड़ना। रोड स्थित बाबा नागेश्वर नाथ महादेव मंदिर प्रांगण में हिंदू पंचांग के अनुसार 11 जनवरी 2025 शनिवार को संध्या 5 बजे से श्री राम मंदिर के प्रथम वर्षगांठ के शुभ अवसर पर हिन्दू जागरण मंच द्वारा संपन्न हुई भव्य महाआरती। यह रामलाल की महाआरती बनारस के मुख्य अर्चक द्वारा कराए गई ओर साथ ही पुष्प वर्षा भी हुई। आरती के दौरान हजारों हजार के संख्या में श्रद्धालु सम्मिलित हुए और हर हर महादेव,जय श्री राम के नारे लगाए। इसके साथ में हिंदू जागरण मंच द्वारा अगिआंव प्रखंड के पावना गांव में भी भव्य महाआरती हुआ, यह आरती हिन्दू जागरण मंच अगिआंव प्रखंड के संयोजक दीपक जी के नेतृत्य में हुआ। इसी क्रम में आरा के रामगढ़िया मोरे पर भी गाजे बजे के साथ राम लाला के भव्य महाआरती कराई गई साथ में प्रसाद वितरण भी हुआ जिसमें स्थानीय लोगों ने बढ़ चढ़ के साथ दिया। महाआरती में हिन्दू जागरण मंच के सैकड़ों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

स्वामी विवेकानंद जयंती पर अभाविप ने विद्यार्थियों को किया सम्मानित

प्रातः किरण संवाददाता

अंकोढीगोला (रोहतास) स्वामी विवेकानंद जयंती पर रविवार को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने शीला वाटिका में प्रतिभाशील प्रतियोगिता सम्मान समारोह का आयोजन नगर अध्यक्ष गौतम कुमार के अध्यक्षता में कार्यक्रम का उद्घाटन दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम के अतिथि डॉ. आशुतोष कुमार प्रांत प्रमुख अग्रविजीन अभाविप ने विद्यार्थी परिषद के कार्यशैली पर चर्चा करते हुए विवेकानंद के विचारों से छात्र छात्राओं को अवगत कराया। जबकि मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित छात्र नेता यश उपाध्याय ने विद्यार्थी परिषद की राष्ट्रपुरनिर्माण में भूमिका पर प्रकाश डाला। साथ ही बताया कि स्वामी विवेकानंद जैसे सपूत सदियों में एक बार इस धरा पर अवतरित होते है। अगर भारत को जानना है तो सबसे पहले लोगों को विवेकानंद को जानना चाहिए। अवसर पर मेडिविजिन के रोहित सिंह ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले भानु कुमार,द्वितीय स्थान प्राप्त करने राहुल कुमार, लक्की कुमार, सागर कुमार सहित अमृता कुमारी तथा शिवम कुमार को मोमेंटो व मेडल से सम्मानित किया गया। मौके पर सोनू सिंह, सूरज सोनी,अयान खान,पुष्पा कुमारी, संतोष कुमार , नगर मंत्री आदित्य कुमार , सूरज गुप्ता , कृष्णा सोनी, हेमंत कुमार, शिवम कुमार ,सुमित कुमार ,अभिजीत कुमार सहित अन्य कार्यकताओं उपस्थित थें।

मसीही समाज के लोगो ने द होली सेवियर चर्च रमना आरा मे सांसद सुदामा प्रसाद का किया अभिनदन समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

आरा,। मसीही समाज के लोगो ने द होली सेवियर चर्च रमना आरा मे माननीय वर्तमान सांसद सुदामा प्रसाद जी का हार्दिक अभिनदन करते हुये चर्च सौन्दर्यीकरण की मांग रखा।द होली सेवियर चर्च आरा का ऐतिहासिक चर्च मे मसीही समाज के लोगो ने फुल माला,बुके और शौल देकर माननीय सांसद आरा कॉ सुदामा प्रसाद जी का भव्य स्वागत किया।अभिनदन समारोह का संचालन सीता राम रवि (राज्य निर्देशक)ने किया स्वागत मेथोडिसट चर्च सेकेट्ररी चन्दन प्रसाद और द होली सेवियर चर्च रमना सेकेट्ररी आर पी किरन,पादरी राजेश ,सोनू, रामजी राकेश मसीह, जगजीवन , काशीनाथ ने माला पहनाकर किया पादरी अनिल जीउत ने बुके और बाईबिल देकर किया ।आर पी किरन ने चर्च की समस्याओ से सासंद को अवगत कराया और मसीही समाज ने चर्च सौन्दर्यीकरण से सम्बंधित आवेदन दिया पादरी अनिल जीउत ने अपने सम्बोधन मे बताया चर्च एक आरा का ऐतिहासिक स्थान है इसका सौन्दर्यीकरण होना चाहिए और चारदिवारी की मरम्मत और चकमक बिजली व्यवस्था के साथ सड़क ,पेयजल ,बैठने की उचित व्यवस्था सांसद फण्ड से किया जाय।चर्च एक शान्तिपूर्ण स्थान होता है सांसद माननीय कॉ सुदामा प्रसाद ने बताया चर्च की मागे जायज है आरा के विकास मे इसका ध्यान रखा जायेगा,कब्रिस्तान की चारदीवारी और चर्च को असमाजिक लोगो से मुक्त कराने के लिए हम सभी संगठित होकर लडेगे।मुझे चर्च मे बहुत अच्छा लगा की मसीही समाज ने याद किया हम अभारी है पादरी अनिल जीउत ,सीताराम रवि,चन्दन प्रसाद, काशीनाथ, सोनू,राजेश,राजेन्द्र प्रसाद, एनोरिन साईमन ,राकेश मसीह, जगजीवन प्रकाश ,निर्मला आदि थे।

श्रीराम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव को यादगार बनाने के लिए होगा सुमङ्गल कार्यक्रम

- कार्यक्रम में आकर्षण का केंद्र होगा 121 शंखध्वनि एवं हजारों के साथ एकसाथ सुंदरकांड पाठ

प्रातः किरण संवाददाता

आरा। भारतीय सभ्यता एवं सम्मान का प्रतीक श्री राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा वार्षिकोत्सव समारोह को लेकर 22 जनवरी को आयोजित होने वाले सुमङ्गल कार्यक्रम के लिए शहर के धर्मावलम्बियों , बुद्धिजिवियो एवं सनातन धर्म के प्रहरियों की बैठक बड़ी मठिया में आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ पी सिंह सर्जन की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जिसका संचालन यशवन्त नारायण ने किया। बैठक का शुभारंभ जय श्री राम के उद्घोष से हुआ। बैठक में आयोजन को लेकर उपस्थित सदस्यों के बीच कई बिंदुओं पर चर्चा हुआ। कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए अभय विश्वास भट्ट ने कहा कि कार्यक्रम में 121 ब्राह्मणों के द्वारा शंखध्वनि के साथ किया जाएगा तथा उपस्थित सदस्यों द्वारा मंगलाचरण एवं सुंदरकांड पाठ का आयोजन होगा।

वही कार्यक्रम में उपस्थित मनोज सिंह शिक्षाविद ने कार्यक्रम को सुंदर एवं आकर्षक बनाने के लिए भजन का भी कार्यक्रम करने का सुझाव दिया।

कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षाविद अर्चना सिंह ने इस मौके को यादगार बनाने के लिए झांकी का प्रस्ताव रखा।

वही मुखिया राकेश सिंह ने महिलाओं की भागीदारी ज्यादा से ज्यादा हो इसके लिए महिला संगठनो को जोड़ने का सुझाव दिया। वही शम्भू प्रसाद चौरसिया ने प्रचार प्रसार पर जोर दिया। युवा समाजसेवी सुनील पाठक ने युवा वर्ग को जोड़ने एवं शोशल मीडिया से प्रचार प्रसार पर जोर दिया। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों के सुझाव पर निर्णय लिया गया कि शंखध्वनि के साथ एक ही समय पर उपस्थित सभी लोगो के साथ सुंदर कांड पाठ करने का निर्णय लिया गया। जिसका समय अगली बैठक में निर्धारित करने का निर्णय हुआ।

प्रखंड मुख्यालय गड़हनी में स्वच्छता कर्मियों का समीक्षा बैठक आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

गड़हनी(भोजपुर)। बिहार प्रदेश स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी संघह्व के जिला इकाई के बैनर तले गड़हनी प्रखंड के स्वच्छता पर्यवेक्षक व स्वच्छता कर्मी संघ का एक दिवसीय समीक्षात्मक बैठक रविवार को प्रखंड मुख्यालय परिसर में किया गया है।

बैठक का मुख्य उदेश्य स्वच्छता पर्यवेक्षक एवं स्वच्छता कर्मी पूरी लगन से स्वच्छता का कार्य करते आ रहे हैं लेकिन बारह माह के बाद भी इन लोगों का तय मानदेय स-समय नहीं मिल रहा है, जिससे इनके भरण पोषण में काफी समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

जितना कार्य स्वच्छता कर्मियों स्वच्छता पर्यवेक्षक कर रहे हैं उसके तुलना में मानदेय काफी कम है फिर भी बकाया मानदेय से असंतुष्ट स्वच्छता कर्मी को जागरूक किया गया कि वर्ष 2025 माह जनवरी से सभी कर्मी को मानदेय रेगुलर मिलेगा।इसलिए सभी कर्मी को स्वच्छता से सबंधित कार्य को और बेहतर तरीके से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।

सरकार से हम सभी आग्रह करते है कि स्वच्छता पर्यवेक्षको के कार्य को देखते हुए मानदेय बाजार द के हिसाब से समकक्ष पद के वेतन अनुसार सम्मान जनक मानदेय बीस हजार बढ़ाया जाय,एवं स्वच्छता कर्मी का उचित मानदेय दस हजार तक किया जाए। ताकि सभी कर्मी और पर्यवेक्षको का सपरिवार का भरण पोषण अच्छा से हो सके।मौके पर प्रखंड अध्यक्ष नंद बिहारी पांडे स्वच्छता पर्यवेक्षक आजाद कुमार गुप्ता ,गौरव कुमार मिश्रा,मिथिलेश कुमार सिंह,खुशी लाल कुमार गुप्ता, सुशील कुमार सुमित कुमार सिंह

व्यवसायी संघ गड़हनी ने कोर कमिटी के संघ किया बैठक

16 जनवरी को होगा सभी दुकानदारों के साथ आम बैठक,लिया जाएगा कई निर्णय

प्रातः किरण संवाददाता

गड़हनी(भोजपुर)।भोजपुर जिले के नगर पंचायत गड़हनी के नया बाजार स्थित राम जानकी ठाकुरबाड़ी में रविवार के दोपहर व्यवसायी संघ गड़हनी के बैनर तले एक बैठक का आयोजन किया गया।बैठक की अध्यक्षता निर्मल कुशवाहा एवं संचालन व्यवसायी संघ के प्रखंड अध्यक्ष श्री निवास यादव ने किया।यह बैठक व्यवसायी संघ के कोर कमिटी के साथ किया गया।बैठक को संचालित करते हुए अध्यक्ष श्री निवास यादव ने कहा कि आए दिन दुकानदारों पर हो रहे अत्याचार ,रंगदारी, चोरी एवं आगलगी के घटनाएं होते रह रहा हैं,दुकान पर किसी तरह की क्षति होने पर दुकानदार पर बोझ हो जा रहा हैं कैसे समाधान हो ।

इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता हैं।वही बैठक में उपस्थित सभी कोर कमिटी के सदस्यों ने सभी दुकानदारों को सूचित कर एक आम बैठक आयोजित करने की बात कही।इसके सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि आगामी 16 जनवरी दिन वृहस्पतिवार को समय 10 बजे दिन में स्थान सब्जी मंडी के राम जानकी ठाकुरबाड़ी गड़हनी सुनिश्चित किया गया।बैठक में ज्यादा से ज्यादा दुकानदार पहुंचे उसके लिए गड़हनी के दुकानदारों को सूचना देने की जिम्मेदारी गड़हनी सहिला पुल से गोला बनास नदी पुल तक संघ के सचिव शाहिन रजा एवं बनास नदी पुल नया बाजार से अगिआंव मोड़ स्टेशन तक अनिश सिंह एवं गड़हनी पुरानी बाजार में बंटी राठौर को दिया गया।सभी जिम्मेदार सदस्यों से कहा गया कि दुकानदार जैसे जुटे उन्हें जगाइए लाउडस्पीकर घुमवाइए ,रजिस्टर पर हस्ताक्षर कराइए।मौके पर प्रमोद गुप्ता, संतोष गुप्ता,नीरज गुप्ता,ओमप्रकाश गुप्ता,रामबाबू गुप्ता,सोनू कुमार,बिड्डू गुप्ता,रवि गुप्ता, ओमप्रकाश केशरी,बंटी राठौर,अनीश सिंह,नितेश सिंह,पंकज सिंह,संजय गुप्ता,राजेश गुप्ता,सुरेश केशरी समेत कई अन्य उपस्थित थे।

जयंती पर स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन

बिक्रमगंज (रोहतास) (स्वामी विवेकानंद की जयंती पर रविवार को शहर के विभिन्न जगहों पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की सेवा भारती दक्षिण बिहार प्रांत द्वारा स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। आयोजित स्वास्थ्य शिविर में मेडिकल कॉलेज जमुहार सासाराम के चिकित्सकों की टीम द्वारा लोगों का स्वास्थ्य जांच करते हुए निशुल्क दवा वितरण किया गया। धारूपुर में डॉ अमित की टीम 35, तेंदूनी में डॉ सोनम की टीम ने 50, धनगाई में डॉ पंकज की टीम ने 52 एवं सिकरिया में डॉ विवेक की टीम ने 90 लोगों का स्वास्थ्य जांच कर उचित परामर्श के साथ उपलब्ध दवा का वितरण किया। चिकित्सकों के टीम की व्यवस्था नगर कार्यवाह ओम नारायण, सेवा प्रमुख अनिल, नगर बौद्धिक शिक्षण प्रमुख दिनेश, नगर श्रमिक कार्य प्रमुख अमर देव, जिला व्यवस्था प्रमुख धीरेंद्र, भाजपा नगर अध्यक्ष नागेश्वर कुशवाहा एवं रवि पांडे द्वारा किया गया।

आदि काल से आज तक प्राकृतिक रूप से आयुर्वेद के लिए अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सभी मानकों से बेहतर क्षेत्र है राजगीरः वैद्य (प्रो.) दिनेश्वर प्रसाद

त्रिदिवसीय वैद्यकीय प्रशिक्षण का समापन समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

पटना/राजगीर / नालन्दा। त्रिदिवसीय वैद्यकीय प्रशिक्षण का समापन राजगृह यानि राजगीर के आम्रवन में आयुर्वेद के उदभट विद्वान, भगवान बुद्ध के नीजी चिकित्सक एवं मगध राज्यके तत्कालीन राजवैद्य आचार्य जीवक के जन्म एवं कर्म स्थली तथा उनके द्वारा बनाये गये अस्पताल के भग्नावशेष/ खंडहर के स्थल पर राजकीय आयुर्वेद कालेज अस्पताल, पटना के पुर्व प्राचार्य वैद्य प्रोफेसर दिनेश्वर प्रसाद एवं अहमदाबाद, गुजरात के राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त वैद्य हितेन बाजा के सानिध्य में एक सामूहिक शपथ ली गई कि जब तक जीवक के याद

में राजगीर के अन्तर्गत अंतर्राष्ट्रीय स्तर का शिक्षा एवं चिकित्सा, सहित शोध संस्थान नहीं बन जाता, तबतक हम लोग माननीय प्रधानमंत्री एवं विहार के माननीय मुख्यमंत्री को इस पर अमल करने के लिए नित्य दिन प्रार्थना करते रहेंगे और देश के समस्त वैद्यों, आयुर्वेद के औषधि निमार्ताओं तथा आयुर्वेद प्रेमियों तथा पक्ष विपक्ष के माननीयों से इसके लिए आग्रह एवं एकजुट होकर सरकार से इसके लिए आग्रह करते हुए सरकार द्वारा इस पर पहल नहीं करने के स्थिति में समाजीक रूप से धन संग्रह कर दुनिया भर में आयुर्वेद को प्रचारित करने के लिए प्रयास किया जाएगा।

ज्ञातव्य हो कि इस वैद्यकीय प्रशिक्षण में नव राज्यों से 51 आयुर्वेद के शिक्षक, चिकित्सक अपने व्यय से ज्ञानार्जन हेतु उपस्थित हुए, जिनका तीनों दिन 10 से, 12 घंटों तक प्रशिक्षण प्राप्त किए।

जाता था। इस विश्व विद्यालय के प्रथम कुलपति के रूप में वैद्य नागार्जुन को चयनित किया गया था।

उस समय स्थानीय छात्रों को विधि व्यवस्था को लेकर नामांकित नहीं किया जाता था , फलस्वरूप यहाँ के स्थानीय छात्र जीवक का भी नामांकन नहीं हो पाया था, जिसके कारण उन्हें लाहौर के पास अवस्थित तक्षशिला विश्व विद्यालय से शिक्षा के लिए विवश होना पड़ा था, हलाकि उन्होंने सात बर्ष के अध्ययन के बाद आयुर्वेद की उपाधि प्राप्त कर विश्व स्तर पर प्रशिध्द के बाद आकर बौद्ध ग्रंथों के अनुसार आम्रवन में भव्य चिकित्सालय का निर्माण कर उसमें लम्बे समय तक स्थानीय लोगों के साथ साथ यहाँ के बौद्ध विहार में रहने वाले बौद्ध भिक्षुओं के साथ साथ पुरे दुनिया से बौद्ध दर्शन के लिए आने वाले पर्यटकों के साथ साथ भगवान-बुद्ध को भी अस्वस्थ होने पर चिकित्सा किया करते थे। इस तरह पुरे दुनिया में राजगीर को कराया था। आज भी उसका इतिहास उपलब्ध है,। विहार में समुद्र मंथन से अमृत कलश की प्राप्ति का इतिहास बांका से तो च्यवनप्राश के रूप में पुरे विश्व में चर्चित च्यवन ऋषि का जन्म एवं कर्मस्थली औरंगाबाद जिले से जुड़ा हुआ है,पर नेताओं एवं प्रशाशकों के उपेक्षा के कारण आयुर्वेद की लगातार उपेक्षा हो रही है।

जिले के हर खिलाड़ी को आगे बढ़ने के लिए हमारी संस्था हर संभव मदद करेगी: विकास माली

प्रातः किरण संवाददाता

गया।विशुनपुरा प्रीमियर लीग के फाइनल मुकाबले में मंझियांव की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए चेचरिया नगर को हराकर खिताब अपने नाम किया है। यह रोमांचक मुकाबला राजकीय मध्य विद्यालय, विशुनपुरा के प्रांगण में खेला गया, जिसमें हजारों दर्शकों ने उत्साहपूर्वक खेल का आनंद लिया है।मंझियांव की टीम ने न सिर्फ बेहतरीन गेंदबाजी की, बल्कि बल्लेबाजी में भी दमखम दिखाते हुए चेचरिया नगर को मात दी है। मंझियांव के खिलाड़ियों ने टीम वर्क और संयम का बेहतरीन उदाहरण पेश किया, जिससे उन्होंने खिताबी जीत दर्ज की है।मैच में भवनाथपुर विधायक अनंत प्रताप देव और कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव विकास माली बतौर मुख्य अतिथि मौजूद रहे हैं। दोनों ने विजेता और उपविजेता टीम को बधाई दी है। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए कहा, यह जीत आपकी मेहनत और लगन का परिणाम है।कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव विकास माली ने कहा कि जिला के हर खिलाड़ी को आगे बढ़ने के लिए हमारी संस्था हर संभव मदद करेगी। जिला से लेकर राज्य स्तर तक जहां भी किसी प्रकार के मदद की जरूरत हो संस्था करेगी।

कन्या विवाह एंड विकास सोसाइटी के सचिव विकास माली ने झारखंड सरकार के खेल को बढ़ावा देने के प्रयासों की भी प्रशंसा की और कहा कि ऐसे आयोजनों से नई प्रतिभाओं को निखरने का मौका मिलता है।इस फाइनल मुकाबले में दर्शकों ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया गया है। पूरे मैच के दौरान जोश और उत्साह का माहौल बना रहा है। विजेता और उपविजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान कर सम्मानित किया गया है।

यह टूर्नामेंट अभिषेक सोनी अध्यक्ष, अमन भंडारी सचि और मिठू चौरसिया कोषाध्यक्ष के प्रयासों से सफलतापूर्वक संपन्न हुआ है।

युवा देश का भविष्य है इसे पहचानना अत्यंत आवश्यक है :डॉ सुधांशु

प्रातः किरण संवाददाता

गया।अखिल विश्व गायत्री परिवार की युवा इकाई मगध युवा प्रकोष्ठ द्वारा राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर एक विशेष बौद्धिक सत्र सह सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है । जिसमें मुख्य वक्ता दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय, गया के ऐतिहासिक अध्ययन पुरातत्व विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ सुधांशु झा रहे हैं ।इस कार्यक्रम की शुरूआत गया जिला के अपर समाहर्ता राहुल कुमार , जिला खेलसंघ के सचिव मोती करीमी , और संयुक्त सचिव जिला खेलसंघ , जितेंद्र कुमार , बीआइटी के डायरेक्टर नीतीश हलचल , अधिवक्ता राकेश कुमार , एवं जय हिन्द कोचिंग संस्था के अध्यक्ष सुशील कुमार के कर कमलों से दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया है ।उद्घाटन सत्र में अपर समाहर्ता राहुल कुमार ने कहा कि हमे मयार्दा को अपने जीवन मे उतारना चाहिए।उन्होंने कहा आज विवेकानंद के जन्म दिवस जैसे पुनीत अवसर पर हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि मैसेज को बिना सत्यापित किए हम कहीं आगे फॉरवर्ड नहीं करेंगे। साथ ही साथ उन्होंने ये भी कहा कि कई दशक पहले स्वामी विवेकानंद का कहा हुआ बातें आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना पहले था। जिसे हमे अपनाने की जरूरत है और स्वामी जी के आध्यात्मिक विचार अपने जीवन मे उतारने की जरूरत है ।वहीं डॉ॰ सुधांशु झा ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि गायत्री परिवार द्वारा किए जा रहे सामाजिक कार्य निस्वार्थ कार्य बहुत ही प्रशंसनीय है। मगध युवा प्रकोष्ठ समाज मे बडा बदलाव ला रहा है। मगध युवा प्रकोष्ठ आर्थिक ताकत को समाज के सामने ला रहा है ।स्वामी विवेकानंद शिकागो के भाषण में अध्यात्म की बात करते हैं।और जब वहाँ उन्होंने भाईयों और बहनों कहा तो तालियों के गड़गड़ाहट से हॉल गूंज गया है। स्वामी विवेकानंद ने शिकागो से भारत आकर भौतिक और विज्ञान को मजबूत करने की बात करते हैं ।स्वामी विवेकानंद ने अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय के बात किए जिसे हर एक युवा को अपनाने की जरूरत है ।युवा में आक्रामकता और अनुशासन दोनों है। जिसे हमे संवारने की जरूरत है। हमे सपना देखकर उसे पूरा करने की जरूरत है ।मगध युवा प्रकोष्ठ के संचालक सह मीडिया प्रभारी अमित कुमार ने कहा कि युवाओं में ऊर्जा, उत्साह और नवाचार की भावना होती है । युवाओं में ऊर्जा, उत्साह और नवाचार की भावना होती है, जो उन्हें नए विचारों और समाधानों को विकसित करने में मदद करती है। युवाओं को अपनी रचनात्मकता और नवाचार की क्षमता को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।वहीं कार्यक्रम का नेतृत्व मगध युवा प्रकोष्ठ के सक्रिय कार्यकर्ता राहुलकांत ने किया उन्होंने ने कहा कि युवा देश के भविष्य के निमार्ता हैं। युवा देश के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उनके विचार, ऊर्जा और उत्साह देश के विकास और समृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं। युवाओं को देश के भविष्य के लिए जिम्मेदार और सक्रिय नागरिक बनने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए। मगध युवा प्रकोष्ठ के समन्वयक रूपेश कुमार ने युवाओं की रचनात्मकता और नवाचार की क्षमता को प्रोत्साहित करने की बात कही।

पारस में निःशुल्क कैंसर जांच शिविर का सफल आयोजन

विशेषज्ञ डॉक्टरों ने दिए कैंसर से उपचार की सलाह

- 173 मरीजों ने मुफ्त में कैंसर की जांच कराई

प्रातः किरण संवाददाता

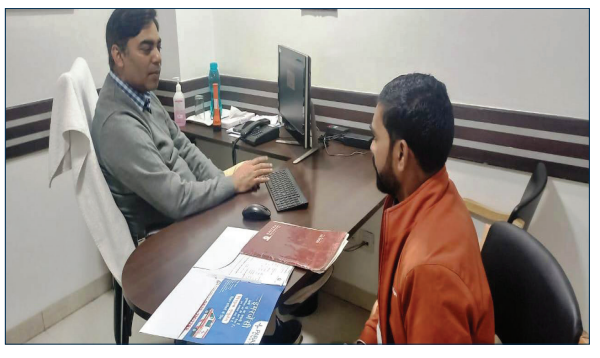

पटना। पारस एचएमआरआई, पटना ने रविवार को निःशुल्क कैंसर जांच शिविर का आयोजन किया। इस शिविर का मकसद कैंसर एंव एनीमिया जैसे गंभीर बीमारी के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों को समय पर उपचार की सुविधा प्रदान करना था। शिविर में 173 लोगों ने भाग लिया और विशेषज्ञ डॉक्टरों से परामर्श लिया। इसमें कैंसर के नए और पुराने, दोनों तरह के मरीज थे। हिमैटो आंकोलाजी के विभागाध्यक्ष डॉ. अविनाश कुमार सिंह, सिनियर कंसल्टेंट व हेड व नेक सर्जन डॉ. मिताली दांडेकर रेडिएशन ओन्कोलॉजी डॉ. शेखर कुमार केशरी, सिनियर कंसल्टेंट-सर्जिकल ऑन्कोलॉजी डॉ. रुपेश कुमार सिंह, सिनियर कंसल्टेंट- हेड लाल और कंसल्टेंट- मेडिकल ऑन्कोलॉजी डॉ. मोसर्रत शाहीन ने मरीजों को कैंसर के शुरूआती लक्षणों, निदान और उपचार के बारे में विस्तृत जानकारी दी। डॉक्टरों ने मरीजों की हर जिज्ञासा का सहजता से जवाब दिया और उन्हें कैंसर जैसी गंभीर बीमारियों के प्रति जागरूक रहने की सलाह दी।

शिविर के बाद पारस एचएमआरआई के फैसिलिटी डायरेक्टर अनिल कुमार ने कहा कि हम इस शिविर की सफलता से बेहद खुश हैं। इस शिविर को बहुत अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। सैकड़ों लोग इस शिविर में भाग लेकर लाभान्वित हुए। पारस एचएमआरआई समय समय पर ऐसे निःशुल्क जांच शिविरों का आयोजन करता है ताकी लोग अपने स्वास्थ्य को लेकर जागरूक और गंभीर हो सकें। हम आशा करते हैं कि इस तरह के प्रयासों से कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से लड़ने में मदद मिलेगी।

शिक्षक संघ गोप गुट सक्षमता परीक्षा पास शिक्षकों को सेवा निरंतरता का लाभ दिलाने के लिए संघर्ष जारी रखेगा

प्रातः किरण संवाददाता

औरंगाबाद। बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ(गोप गुट)मूल शिक्षकों के दमन उत्पीड़न के खिलाफ अपना संघर्ष जारी रखते हुए सक्षमता परीक्षा पास शिक्षकों की सेवा निरंतरता का लाभ दिलाने हेतु अपना संघर्ष जारी रखेगा। बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ(गोप गुट) मूल की राज्य कमिटी की सम्पन्न वर्चुअल-मीटिंग में लिया गया उक्त आशय का निर्णय। इस मीटिंग में सरकार द्वारा नियिजित शिक्षकों के लिए बनाई गई नई सेवा-शर्त नियमावली के अनुरूप उन्हें भी वरीयता के अनुरूप प्रोन्नति दिलाने के लिए विभिन्न जिलों में अपना संघर्ष जारी रखेगा । अभी जहानाबाद, अरवल,इत्यादि जिलों में उक्त कोटि के शिक्षकों को प्रोन्नति दिलाई जा चुकी है और शीघ्र हीं अन्य जिलों में भी प्रोन्नति दिलाने के लिए संघर्ष शुरू होगा । इसके अलावे वर्ष-1996 के बाद में वर्ष- 1999, वर्ष-2000 एवं उसके बाद बहाल जिला-संवर्ग के उच्च योग्यताधारी शिक्षकों को नियुक्ति तिथि से ही प्रशिक्षित वेतन दिलाने की लड़ाई जारी रहेगी। मुख्यमंत्री द्वारा बिहार विधान सभा में की गई घोषणा के अनुरूप विद्यालय की समयावधि पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 04:00 बजे तक करने तथा शनिवार को विद्यालय आधा दिन हीं संचालित करने की मांग पर संघर्ष जारी रहेगा। उक्त माँगो की पूर्ति हेतु सरकार का ध्यान आकृष्ट कराने के लिए फिलहाल जिलों के स्तर पर शिक्षकों का जिला कन्वेंशन करने का निर्णय लिया गया । बाद में अन्य आंदोलनों की घोषणा भी की जाएगी। बिहार राज्य प्राथमिक शिक्षक संघ(गोप गुट) मूल की राज्य कमिटी की एक ऑन-लाइन वर्चुअल मीटिंग को देर रात तक सम्पन हुई, जिसकी अध्यक्षता संघ के राज्याध्यक्ष-बच्चु कुमार एवं संचालन महासचिव-सत्येन्द्र कुमार ने किया । इस मीटिंग में शामिल राज्य कमिटी के पदधारकों ने सर्वसम्मति से एक प्रस्ताव पारित कर शिक्षकों की मांगों एवं ज्वलंत समस्याओं के समाधान हेतु विभिन्न जिलों में शिक्षकों का जिला कन्वेंशन कराने का निर्णय लिया है। राज्य कमिटी की इस वर्चुअल मीटिंग में एक प्रस्ताव पारित कर राज्य सरकार से यह माँग की गई कि सरकार सक्षमता परीक्षा पास शिक्षकों को नियोजित शिक्षक के रूप में योगदान-तिथि से सेवा निरंतरता का लाभ देते हुए उन्हें हर तरह का आर्थिक लाभ दे । साथ ही राज्य कमिटी ने सरकार से यह भी मांग की है कि वह नियोजित शिक्षकों के लिए बनाई गई सेवा-शर्त नियमावली के अनुरूप उन्हें वरीयता के अनुसार स्नातक ग्रेड एवं प्रधानाध्यापक के पद पर तत्काल प्रोन्नति का लाभ दे । बैठक में यह तथ्य भी रेखांकित किया गया कि अरवल,जहानाबाद,इत्यादि कुछ जिलों में हमारे संघ ने स्थानीय तौर पर संघर्ष कर नियोजित शिक्षकों को प्रोन्नति का लाभ दिलाया है जिसे अब व्यापक संघर्ष कर के पूरे बिहार में लागू कराया जाएगा । इसके अलावा वर्ष:-1999-2000 या उसके बाद बहाल शिक्षकों को भी नियुक्ति तिथि से प्रशिक्षित वेतनमान देने,सभी प्रकार के शिक्षकों के लिए पुरानी पेंशन व्यवस्था के तहत पेंशन का प्रावधान करने,विद्यालय की समयावधि माननीय मुख्यमंत्री द्वारा बिहार विधान सभा में की गई घोषणा के अनुरूप पूर्वाह्न 10:00 बजे से अपराह्न 04:00 बजे तक करने,शनिवार को विद्यालय की समयावधि पूर्व की भांति आधा दिन करने,विभिन्न जिलों में आंदोलनों के क्रम में शिक्षकों के ऊपर की गई सभी प्रकार की दमनात्मक कार्रवाइयों एवं झूठे मुकदमों को वापस लेने,इत्यादि कई मांगों की पूर्ति हेतु संघर्ष करने का निर्णय इस मीटिंग में लिया गया । इसके लिए सभी जिलों में शिक्षकों का जिला कन्वेंशन कर के उक्त मांगों से संबंधित प्रस्तावों को पारित कर के राज्य सरकार एवं अन्य संबंधित पदाधिकारियों को प्रेषित करने का भी निर्णय लिया।

विवेकानंद जयंती पर सामयिक संवाद

औरंगाबाद। जिला मुख्यालय औरंगाबाद की महत्वपूर्ण साहित्यिक संस्था जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के तत्वावधान में भारत के महान संत,मनीषी स्वामी विवेकानंद की 162वीं जयंती समारोह राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में सामयिक संवाद का कार्यक्रम आयोजित किया गया।जिला हिंदी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष डॉ सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, उपाध्यक्ष डॉ सुरेंद्र प्रसाद मिश्रा,महामंत्री धनंजय जयपुरी के आह्वान पर संवाद करते हुए संस्था के उपाध्यक्ष सुरेश विद्यार्थी ने बताया कि स्वामी विवेकानंद भारत के उन संत मनीषियों में से एक हैं जिनकी पहचान पूरे विश्व में वैश्विक आध्यात्मिक गुरु के रूप में की जाती है ।यदि कहीं भी भारतीय दर्शन की चर्चा की जाती है और किसी आध्यात्मिक सम्मेलन की चर्चा होती है तो विवेकानंद का नाम जरूर लिया जाता है जब विश्व में किसी धर्म संसद की चर्चा की जाती है तो शिकागो धर्म संसद का नाम जरुर लिया जाता है जिनके जन्मदिन को युवा दिवस के रूप में मनाई जाती है क्योंकि पूरे युवा वर्ग के निमित उन्होंने इतने कालजई कार्य किया जो युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत है।

सड़क दुर्घटना में वृद्ध की मौत

करपी। शहर तेलपा बाजार के निकट मियांबाग महादलित टोला के पास सड़क दुर्घटना में एक वृद्ध की मौत हो गई। घटना स्थल के पास वाले लोगों ने बताया कि मियांबाग के रहने वाले राम ईश्वर राम (६२ वर्ष) सड़क पार करने की कोशिश कर रहे थे उसी बीच तेज रफ्तार से आ रही मोटरसाइकिल ने जबरदस्त टक्कर मार दी। घटना स्थल पर उपस्थित लोगों ने कहा कि धक्का मारने के बाद मोटरसाइकिल और भी रफ्तार से भाग निकला। वृद्ध राम ईश्वर राम की मौत दुर्घटना स्थल पर ही हो गई। घटना के सूचना के बाद स्थानीय थाना ने पहुंचकर मृत शरीर को पोस्टमार्टम के लिए सदर अस्पताल अरवल भेज दिया।

बीपीएससी में धांधली को लेकर बिहार बंद का कुर्था में भी दिखा आंशिक असर

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) बीपीएससी 70 वीं प्रिलिप परीक्षा 13 दिसंबर 2024 में 2000 पदों पर भर्ती को लेकर परीक्षा केंद्र में अभ्यर्थियों ने बीपीएससी पेपर लीक व परीक्षा में धांधली का आरोप लगाया था जिसको लेकर पूरे राज्य भर में उबाल देखा जा रहा था इसी को लेकर जन अधिकार पार्टी के संरक्षक पप्पू यादव के आह्वान पर बारा जनवरी को पूरे बिहार बंद की घोषणा की गई थी जिसको लेकर रविवार को कुर्था में जन अधिकार पार्टी के समर्थकों ने कुर्था गया मुख्य मार्ग को बारह माइल के समीप जामकर बीपीएससी में धांधली की जांच की मांग कर रहे थे। इस मौके पर जन अधिकार पार्टी के पूर्व जिलाध्यक्ष सह पंचायत के उपमुखिया श्याम बिहारी सिंह उर्फ झगडु यादव ने कहा कि राज्य सरकार तमाम परीक्षाओं में पेपर लिखकर प्रतिभावान युवाओं के जिंदगी से खिलवाड़ कर रही है जिसे बिहार के युवा वर्ग किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं करेगी। वहीं उन्होंने बीपीएससी की परीक्षा को कैंसिल कर नए सिरे से परीक्षा लेने की मांग की है। इस मौके पर जन अधिकार पार्टी के नेता रौशन कुमार, कमलेश यादव समेत कई जन अधिकार पार्टी के नेता शामिल थे।

तेलपा में जल निकासी का इंतजाम नहीं रहने से सड़क पर बह रहा नाली का पानी,आवागमन हो रहा बाधित

- मुख्यमंत्री के संभावित कार्यक्रम को लेकर भी प्रशासन सुस्त
- प्रगति यात्रा को लेकर अधिकारी खाना पूर्ति करने में जुटे हैं

प्रातः किरण संवाददाता

करपी। बैदराबाद शिवगंज राजकीय पथ पर शहर तेलपा बाजार के निकट सड़क पर बह रहा नाली का पानी की समस्या वर्षों से जस का तस बना हुआ है। कोई भी प्रतिनिधि या पदाधिकारी इसके प्रति जागरूक नजर नहीं आ रहा । उक्त स्थान पर सड़क के किनारे बसे दलित टोला के लोग को काफी परेशानी झेलना पड़ रहा है। इस मार्ग से गुजरने वाले लोगों को आवागमन में भी काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। सड़क पर गिर रहे लगातार पानी के कारण सड़क पर बड़े बड़े गढ़े बन चुके है जिसके कारण कई बार वाहन दुर्घटनाग्रस्त भी हो जाती है । आसपास के लोगों का कहना है कि बाजार के तरफ से जो नाली आई है वो इस दलित टोला के आपस आकर ही समाप्त हो जाती है ।इसके आगे नाली के पानी के निकास के लिए कोई उपाय नहीं किया गया है जिसके कारण पानी सड़क पर ही पसरा रहता है। रोजाना ही इस सड़क से कोई न कोई प्रतिनिधि या बड़े पदाधिकारी की गाड़ी गुजरती है लेकिन किसी ने वर्षों से बनी इस समस्या की सुध नहीं ली। वर्तमान में अरवल जिले में मुख्यमंत्री के संभावित यात्रा की तैयारी में पदाधिकारी लगे है और शहर तेलपा थाना क्षेत्र के ही बेलखरा पंचायत में मुख्यमंत्री की यात्रा संभावित तय मानी जा रही है बावजूद बेलखरा से कुछ ही दूरी पर शहर तेलपा के नजदीक बने इस समस्या को जिला स्तरीय पदाधिकारी नजर अंदाज किए हुए है।

खेल से कायम होती है आपसी समरसताः सुरेंद्र मेहता

प्रातः किरण संवाददाता

कुर्था (अरवल) खेल से कायम होती है आपसी समरसता खेल को खेल की भावना से ही खेलनी चाहिए साथ ही बच्चों को खेल के साथ-साथ पढ़ाई पर भी ध्यान देनी चाहिए चुकी शिक्षा जिंदगी का वह सीढ़ी है जिसके बूते आदमी किसी भी मुकाम तक अपना परचम लहरा सकता है उक्त बातें रविवार को प्रखंड क्षेत्र के सती नगरी लारी में मां सती क्रिकेट लीग चैंपियन सेशन तीसरा के फाइनल मैच के उद्घाटन के दौरान बिहार सरकार के खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कही साथ ही उन्होंने कहा कि बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार बिहार के सभी जिलों के प्रतिभावान युवाओं को जो खेल के प्रति जागरुक है वैसे युवाओं के प्रतिभा को ध्यान में रखते हुए राज्य के सभी जिलों में व सभी प्रखंडों व पंचायत में खेल मैदान का निर्माण करने का सहमति प्रदान की है ताकि बिहार के ग्रामीण इलाकों में भी प्रतिभा को निखारा जाए वहीं उन्होंने पत्रकारों द्वारा पूछे गए सवाल के जवाब में कहा कि सती नगरी लारी गढ़ को भी बेहतर स्वरूप देने को लेकर राज्य सरकार पूरी तरीके से तत्पर है हालांकि कार्यक्रम के उपरांत खेल मंत्री सुरेंद्र मेहता ने लारी में अवस्थित मां सती मंदिर में पहुंचकर पूजा अर्चना किया वही क्रिकेट के विजेता व उपविजेता टीम को शील्ड प्रदान किया हालांकि क्रिकेट के फाइनल मैच सिकरिया बनाम नसीरना के बीच खेला गया जिसमें सिकरिया के टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 214 रन बनाए जबकि नासिरना के टीम 164 रन पर ही सिमट गया और इस प्रकार सिकरिया ने नसीरना को 50 रन से पराजित किया। इस मौके पर मैन ऑफ द मैच रंजीत कुमार को चुना गया हालांकि मैच के आयोजकों के द्वारा रनर व विनर टीम को शिल्ड व इनाम की राशि प्रदान किया गया। इस मौके पर एमएलसी डॉ0 प्रमोद चंद्रवंशी, जदयू के प्रदेश सचिव निरंजन केशव प्रिंस, भारतीय जनता पार्टी के जहानाबाद के पूर्व जिलाध्यक्ष शशि रंजन, अहमदपुर हरणा पंचायत के मुखिया अमरेंद्र शर्मा, राष्ट्रीय लोक मोर्चा के नेता पप्पू वर्मा सचई पंचायत के पैक्स अध्यक्ष अमरकांत रॉबिंसन समेत कई गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बीपीएससी परीक्षा लेकर वजीरगंज विधानसभा के जाप प्रत्याशी ने गया बंद कराई

गया।आज राज्य व्यापी आंदोलन के तहत बिहार बंद को लेकर गया में भी वजीरगंज के पूर्व प्रत्याशी राजीव कुमार कन्हैया के नेतृत्व में गया बंद करने का काम किया गया है ।इस अवसर पर राजीव कुमार कन्हैया ने कहा कि बिहार की वर्तमान सरकार लोकतंत्र की हत्या कर रही है जिस तरह से बीपीएसी के छात्रों पर लाठी बरसाई गई दशार्ता है कि बी पी एसी में व्याप्त भ्रष्टाचार को सरकार बढ़ावा दे रही है और इन बच्चों को वंचित करने का काम कर रहा है जो कि गरीब परिवार से आते हैं बिहार के जन-जन के नेता पप्पू यादव जो बराबर बिहार के मुद्दों को लेकर संघर्ष करने का काम किया है आज अपने उनके आवाहन पर हम लोग बिहार बंद करने का काम कर रहे हैं और सरकार को चेतावनी देने का काम कर रहे हैं। कि अगर छात्रों के साथ न्याय नहीं करती है सरकार तो आने वाला समय में इस आंदोलन को देश स्तर पर ले जाया जाएगा गया के विभिन्न मार्गों पर सैकड़ो की संख्या में लोगों ने सरकार विरोधी नारा लगाते हुए विरोध प्रदर्शन किया और शांतिपूर्ण बंद कराया है ।इस अवसर पर मुकेश नारायण सतीश वर्मा, भैया मांझी, मुकेश कुमार ,नवनीत कुमार बिट्टू कुमार ,मनोज कुमार चुनचुन ,शैलेंद्र कुमार, विवेक कुमार, किशन यादव ,भूपेंद्र सिंह, निरंजन कुमार, अजय यादव आदि थे

नगर निगम को लूट की छूट नहीं मिलेगी: लालजी प्रसाद

प्रातः किरण संवाददाता

गया।सम्पपत्ति कर (भवन कर) में मनमाना वृद्धि एवं अन्यायपूर्ण वसूली के खिलाफ अभियान समिति गया के तत्वाधान में लालजी प्रसाद संयोजक एवं गोपाल पटवा सहसंयोजक के नेतृत्व में गया नगर निगम द्वारा बेतहाशा भवन कर वृद्धि को लेकर मानपुर नगर निगम क्षेत्र अंतर्गत दुर्गा स्थान हेड मानपुर में जन जागरूकता सह हस्ताक्षर अभियान का आयोजन किया गया है। हस्ताक्षर अभियान का आयोजन मानपुर दुर्गा स्थान हेड मानपुर , जोड़ा मस्जिद के निकट स्टॉल लगाकर व्यवसायिक व उधोगिक भवन टैक्स एवं प्रधान मुख्य पथ में मोफसिल मोड़ से अलीपुर निगम क्षेत्र तक को वर्गीकरण के बारे में जागरूकता के माध्यम से लोगों को बताया गया कि आपकी व्यावसायिक टैक्स पहले की अपेक्षा डेढ़ से तीन गुना वृद्धि कि गई है।

पूर्व के टैक्स की अपेक्षा आपको बेतहाशा मनमाना एवं अन्याय पूर्ण वसूली गया नगर निगम द्वारा किया जा रहा है। इस अवसर पर भवन कर में अन्यायपूर्ण एवं बेतहाशा वृद्धि के खिलाफ समिति के संयोजक लालजी प्रसाद ने बताया कि लोगों को जागरूक होने की आवश्यकता है हम आपको बताने आए हैं कि आपका भवन कर वसुली के पैसे का सदुपयोग नहीं हो रहा है बल्कि कभी शमशान

शवदाहगृह के नाम पर कभी जीबी रोड - केपी रोड निर्माण के नाम पर कभी लाइट एंड साउंड ब्रह्मसत के नाम पर कभी शौचालय के नाम पर कहीं ना कहीं आपके द्वारा दिए गए भवन कर के राशि का दुरुपयोग गया नगर निगम के मठाधीश द्वारा किया गया है। इसके खिलाफ आपका साथ और सहयोग चाहिए हम नेतृत्व करने के लिए तैयार हैं। गोपाल पटवा सहसंयोजक सह सामाजिक कार्यकर्ता ने कहा हम लोग सड़क से लेकर वरिय पदाधिकारी एवं सुबे के मुखिया से मिलकर अन्यायपूर्ण बेतहाशा मनमाना भवन कर के रवैया के खिलाफ संघर्ष करेंगे और जनता पर जो अनावश्यक भवन कर का बोझ बढ़ाया गया है उसके निवारण के लिए अथक प्रयास करेंगे। आवश्यकता हुई तो न्यायालय का भी दरवाजा खटखटाने का कार्य करेंगे। स्थानीय लोगों ने हस्ताक्षर अभियान में रुचि दिखाते हुए अभियान को सराहा और आगे बढ़कर हस्ताक्षर अभियान को सफल बनाने में अपना हस्ताक्षर कर समर्थन प्रदान करते हुए सभी तरह के सहयोग देने का वादा किया है। यह हस्ताक्षर अभियान लगातार जारी रहेगा और हस्ताक्षर युक्त निवेदन का मांग पत्र मुख्यमंत्री एवं नगर विकास एवं आवास विभाग के मंत्री को सौपा जाएगा। हस्ताक्षर अभियान में सैकड़ो लोगों ने अपना योगदान समर्पित किया। सभी लोगों ने कहा या नगर निगम के मनमाना भवन कर के खिलाफ जोर जुल्म के टक्कर में संघर्ष हमारा नारा है।

देश दुनिया की ताजा तरीन खबरें पढ़ने के लिए लॉग ऑन करें
@Pratahkiran www.pratahkiran.com

सुपर स्पेशलियटी हॉस्पिटल के द्वारा एयरपोर्ट सीआईएफ यूनिट में लगाया गया नि:शुल्क चिकित्सा शिविर

प्रातः किरण संवाददाता

गया।आर्षेय अरिहंत फाउंडेशन ट्रस्ट के अधीन संचालित गया शहर के एपी कॉलोनी स्थित अर्श सुपर स्पेशलियटी हॉस्पिटल के तत्वावधान में एयरपोर्ट के सीआईएफ यूनिट में निःशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया है। इस निःशुल्क चिकित्सा शिविर का उद्घाटन सीआईएसएफ के कमांडेंट सर्वेश सिंह एवं अर्श सुपर स्पेशलियटी हॉस्पिटल के निदेशक डॉक्टर नवनीत निश्चल ने दीप प्रज्वलित कर किया गया है। इस चिकित्सा शिविर में सीआईएसएफ के जवानों एवं अधिकारियों एवं उनके परिजनों का निःशुल्क चिकित्सीय परामर्श दी गई है। इस निःशुल्क चिकित्सा शिविर में ब्लड प्रेशर, ब्लड शुगर,ईसीजी का भी जांच किया गया है।इस चिकित्सा शिविर में डॉ टी शर्मा, डॉ गुंजन कुमार ,डॉ अबू हुरैरा, डॉ अमित कुमार सिंह, डॉ आकांक्षा कुमारी ,डॉ विकास सिंह ने अपना चिकित्सीय परामर्श दिया ।वही सीआईएसएफ के कमांडेंट सर्वेश सिंह के द्वारा सभी उपस्थित चिकित्सकों को अंग वस्त्र और स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया है। इस मौके पर सीआईएसएफ के कमांडेंट सर्वेश सिंह ने हॉस्पिटल के निदेशक डॉ नवनीत निश्चल एवं उनके पूरी टीम के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि यह कार्य सराहनीय है। जिन्होंने अपना बेसकीमती समय देकर एयरपोर्ट पर तैनात जवानों सहित उनके परिवारों के चिकित्सीय परामर्श दिया गया है।वही इस मौके पर अर्श सुपर स्पेशलियटी हॉस्पिटल के डॉ नवनीत निश्चल ने कहा कि एयरपोर्ट पर सेवा दे रहे सीआईएफ के जवानों को चिकित्सीय परामर्श दिया गया है। उन्होंने यह भी कहा कि अस्पताल के द्वारा पूर्व में भी कई गांव सहित शहरी क्षेत्र में भी कई स्थानों पर शिविर लगाकर निःशुल्क चिकित्सा सेवा प्रदान किया जाता है और आगे भी की जाएगी। इस चिकित्सा शिविर में रमेश कुमार, मनोज कुमार, अमर पांडेय, अमित कुमार, रजनीश कुमार, रविंद्र कुमार, गौरव कुमार ,सतीश कुमार, संतोष कुमार, ज्वाला सिंह ,रजन्ति कुमारी, शमीर्ली कुमारी, सूरज आदि थे।

नगर परिषद कार्यपालक पदाधिकारी पर लगा 1 करोड़ 44 लाख गबन घोटाले का आरोप

- शहर में लगे प्याऊ और शौचालय निर्माण कार्यों में बर्ती गयी है भारी अनियमिता, सरकारी राशि की हुई वारे नियारे
- कार्यपालक पदाधिकारी तान्या ने दी सफाई, कहा शशक्त बोर्ड के आदेश पर हुई है राशि की निकासी, सभी आरोप है बेबुनियाद

प्रिंस कुमार

मधेपुरा । सीएम के प्रगति यात्रा से पूर्व हीं नगर परिषद का पोल खुल रहा है। नगर परिषद क्षेत्र में विकास कार्यों को लेकर एक दूसरे पर आरोप प्रतिरोप का दौर जारी है।जहां 1 करोड़ 44 लाख गबन घोटाले का मामला, बिना प्रशासनिक स्वीकृति के हीं निकासी होने की बात सामने आई है। दरअसल शहर में लगे प्याऊ और शौचालय निर्माण कार्यों में भारी अनियमितता बरती गयी है। इस मामले में नगर परिषद के वार्ड पार्षदों ने कार्यपालक पदाधिकारी पर सरकारी राशि की बंदरबाँट का आरोप लगाया है। वहीं नगर परिषद के कार्यपालक पदाधिकारी ने मामले को अपने सिरे से खारिज करते हुए कहा मेरे ऊपर लगाए गए सभी आरोप बेबुनियाद है। उन्होंने कहा सशक्त बोर्ड के बैठक में सर्व सम्मती से ली गयी निर्णय के बाद हीं राशि की निकासी हुई है। कार्यपालक पदाधिकारी ने बताया कि हमें जो सहयोग मुख्य पार्षद और वार्ड पार्षद से मिलनी चाहिए वो नहीं मिल पा रहा है। फिलहाल एक दूसरे पर छीटा कसी को लेकर शहर में कई विकास कार्य बाधित है। उन्होंने कहा कि नगर परिषद क्षेत्र में जो भी विकास कार्य किए जा रहे हैं वो सभी सरकारी निर्देश और नगर परिषद के नियमानुसार हीं की जाती है। इधर नगर परिषद के कई वार्ड पार्षद ने कार्यपालक पदाधिकारी पर आरोप लगाया कि जहाँ एक प्याऊ की लागत 2 लाख है वहीं एक प्याऊ में 9 लाख 5 हजार की राशि का बारे न्यारे की गयी है। इतना हीं नहीं शौचालय निर्माण और मरम्मती के नाम पर करोडो की राशि का गबन किया गया है जो जाँच का विषय है। इस मामले को लेकर वार्ड पार्षद नगर विकास आयोग से जांच कर कार्रवाई की मांग कर रहे हैं।

डॉ के एन सिन्हा को मिला लायंस क्लब का 2 अवार्ड

आरा। डॉ के एन सिन्हा को मिला लायंस क्लब का 2 अवार्ड आरा के लायंस क्लब आरा मिलेनियम के सदस्य एवं लायंस क्लब, जिला 322 ए के जिला पाल ला. डॉ मधेश्वर सिंह के द्वारा अपने सत्र का एक अवॉर्ड फंक्शन का आयोजन पटना के होटल चाणक्य में शनिवार की शाम किया गया । इस समारोह में लायंस क्लब के सभी क्लबो व सदस्यों को अच्छे कार्य करने के लिए अवार्ड दिया गया ।विदित हो कि लायंस क्लब आरा मिलेनियम की स्थापना डॉ के एन सिन्हा ने हीं 2000 में की थी। यह क्लब आज लायंस मल्टीप्ल में बिहार ,झारखंड ,उड़ीसा मिला कर सबसे बड़ा क्लब है ,इसने 10 से ज्यादा क्लबों को जन्म दिया एवं आज इसके सैकड़ो मेंबर है। इस क्लब ने दो लायंस जिला पाल को दिया ,ला. डॉ रामकृष्ण आदि थे।

और ला.डॉ मधेश्वर सिंह।

समाजवाद के प्रखर नेता शरद यादव की कार्यकर्ताओं ने मनाया स्मृति दिवस

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। जदयू के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष सह प्रखर नेता शरद यादव की याद में रविवार को कार्यकताओं ने स्मृति दिवस के रूप में मनाया। कार्यकताओं ने कार्यक्रम में सबसे पहले स्वर्गीय शरद यादव के तैलीय चित्र पर माल्यार्पण कर पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। जिसमें दो मिनट का मौन रखकर कार्यकताओं ने नम आंखों से श्रद्धांजलि दी। जिसमें विभिन्न राजनीतिक दलों के नेता, कार्यकताओं ने हिस्सा लिया। मौके पर पूर्व जिप सदस्य अमलेश राय ने कहा कि शरद जी राष्ट्रवाद के महान नेता थे। उन्होंने देश की राजनीति में अपनी जीवन समर्पित कर दिया। मधेपुरा की धरती पर लगातार दो बार सांसद रहकर विकास की जो गति प्रदान की वह ताउम्र भुला नहीं जा सकता। कार्यक्रम में बसपा नेता रविंद्र कुमार राय ने कहा कि देश के समाजवाद नेता शरद यादव देश के महान नेता थे। जिन्होंने देश की राजनीति को दिशा और दशा देने का काम करते थे।

उन्होंने कभी अपने लिए राजनीति नहीं किया। वे हमेशा गरीबों, दलितों, वंचिततो और शोशिषितों की आवाज बुलंद किया। मधेपुरा की धरती उन्हें हमेशा याद करेगी। कार्यक्रम में राजद प्रखंड अध्यक्ष गजेन्द्र राम, पूर्व राजद प्रखंड अध्यक्ष अयुब अली, महेंद्र यादव, पैक्स अध्यक्ष तुषार कुमार पौदार, प्रीतम आनंद, उमेश सहनी, राजद नेता विवेक यादव, समाजसेवी वसंत झा, दीनबंधु कुमार आदि ने अपने -अपने विचार प्रकट कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम में मंच संचालन जदयू नेता मनोज कुमार यादव तथा संयोजक छत्री यादव ने किया।

आगामी महासम्मेलन को लेकर भाकपा- माले के कार्यकर्ताओं की हुई बैठक

प्रातः किरण संवाददाता

पुरैनी (मधेपुरा) ।पुरैनी मुख्यालय के डुमरैल चौक स्थित स्टेट बैंक परिसर में रविवार की दोपहर भाकपा- माले के कार्यकताओं द्वारा बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता रामचन्द्र दास ने की। वहीं मुख्य अतिथि के तौर पर भाकपा-माले के विधायक कॉमरेड सत्यदेव राम और कोशी प्रभारी कॉमरेड बैधनाथ यादव ने भाग लिया। जिसमें विधायक सत्यदेव राम ने कहा कि आज तमाम लोग क्रान्तिकारी विचार धारा भाकपा- माले से जुड़ रहे है और उन्हें पता ही की भाजपा-माले ही गरीब, मजदूर लोगों के साथ जो अन्याय हुआ है उसकी लड़ाई लड़ रही है। गरीबों की लड़ाई कोई पूरा करेगा तो वह बस भाकपा-माले ही करेगा। उन्होंने आगामी 9 मार्च को हो रही पटना में महासम्मेलन के लिए भी सभी कार्यकत्ताओं से कहा की सभी संगठन सरकारी या संविदा वाले लोग अपने बैनर के साथ अपनी नारा लेकर गांधी मैदान पहुंचेंगे। आज के समय विधवा व वृद्ध व्यक्ति को जो चार सौ रूपया प्रति महीना पेंशन दिया जा रहा है उससे कुछ नहीं होने वाला है साथ ही नीतीश कुमार ने जो विधानसभा में 94 लाख परिवारों को 2 लाख रोजगार देने का वादा किया था उस वादे से सरकार पीछे भाग रही है। वहीं कोशी प्रभारी कॉमरेड बैधनाथ यादव ने कहा कि आज जो देश और प्रदेश में सरकार चल रही है वह गरीबों को जाति, धर्म के नाम पर दिग्भ्रमित कर रही है और गरीबों को उसके मुद्दों से भटका रही है। आज जो सहारा में गरीबों का करोड़ों रूपया फँसा हुआ है उसे भाकपा-माले के सांसद सुदामा प्रसाद सदन में अमित साह से लड़ कर उसे दिलाने में लगे हैं। वही भाकपा- माले जिला संयोजक रामचंद्र दास ने कहा कि 26 जनवरी को राष्ट्रीय महासचिव दीपांकर भट्टाचार्य सहरसा आ रहे है उसमें हम सभी को अधिक संख्या में पहुँचकर मधेपुरा की स्तिथि दिखाएंगे। उक्त बैठक में मुखिया गजेंद्र राम, मनोरंजन सिंह, अधिवक्ता कृत्यानंद यादव, जिला संयोजक कृष्ण कुमार, आइसा जिला सचिव पावेल कुमार, एक्ट जिलाध्यक्ष सीताराम रजक, संजय मंडल, अशोक सिंह, राहुल कुमार, रामचंद्र साह, पवन शर्मा, रूपम कुमारी के साथ सीपीआई-एम के कई साथी भाकपा- माले के बैठक में शामिल थे।

नगर परिषद कर्मी व नगर पार्षदों के बीच फैंसी क्रिकेट मैच का आयोजन

मसौढ़ी ।राष्ट्रीय युवा दिवस के मौके पर नगर मुख्यालय स्थित डीएन कॉलेज खेल मैदान में रविवार को नगर परिषद कर्मी व नगर परिषद पार्षदों के बीच एक दिवसीय फैंसी क्रिकेट मैच का आयोजन हुआ ।नगर परिषद कर्मी की टीम ने मैच का टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला लिया ।जिसमें पार्षदों की टीम ने पहले बल्लेबाजी करते हुए,16ओवर में 161रन का लक्ष्य दिया ।जवाबी पारी में खेलने उतरी नगर परिषद की टीम ने 16ओवर में 9विकेट खोकर129 रन बनाए ।इस पर नगर परिषद कर्मी टीम ने 32 रनों से जीत हासिल की ।इसमें मैन ऑफ द मैच नगर परिषद पार्षदों की टीम राकेश यादव रहे ।वही विजेता टीम के मुख्य पार्षद प्रतिनिधि शंभू सिंह वं उपमुख्य पार्षद चंद्रकांत कुमार उर्फ छोटे पासवान के द्वारा कप देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे आयोजन से कार्मिकों में आपसी मेलजोल व प्रेम की भावना बढ़ती है।

स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनने और अपने देश के उत्थान के लिए काम करने की प्रेरणा दी :मनीष पंकज मिश्रा

प्रातः किरण संवाददाता

गया।भारतीय जनता पार्टी किसान मोर्चा के जिला सह प्रभारी डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने स्वामी विवेकानंद की जयंती के अवसर पर किसान मोर्चा के कार्यालय में कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। सर्वप्रथम उनके चित्र पर माला पुष्प चढ़ा कर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए नमन किया गया है ।इस अवसर पर डॉ मनीष पंकज मिश्रा के द्वारा कार्यक्रम स्वामी विवेकानंद के विचारों और उनकी शिक्षाओं को किसानों और युवाओं के बीच प्रसारित करना था डॉ. मनीष पंकज मिश्रा ने स्वामी विवेकानंद के जीवन और उनके शिक्षाप्रद विचारों पर प्रकाश डाला गया है। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को आत्मनिर्भर बनने और अपने देश के उत्थान के लिए काम करने की प्रेरणा दी है।उनके विचार आज भी किसानों और युवाओं के लिए प्रासंगिक हैं।

डॉ. मिश्रा ने इस अवसर पर किसानों को जागरूक किया और उन्हें आत्मनिर्भर भारत अभियान के अंतर्गत कृषि में नई तकनीकों और सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने का आह्वान किया है। उन्होंने किसानों को बताया कि कैसे आधुनिक कृषि तकनीक और प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना जैसे कार्यक्रम उनके जीवन को बेहतर बना सकते हैं। विशेष रूप से युवाओं को स्वामी विवेकानंद के विचारों से प्रेरणा लेने की अपील की गई है। डॉ. मिश्रा ने कहा कि विवेकानंद ने हमेशा युवाओं को देश की रीढ़ माना और उन्हें राष्ट्र निर्माण के लिए कार्य करने का संदेश दिया है। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया, बल्कि किसानों और युवाओं को उनके संदेशों से प्रेरित होकर राष्ट्र निर्माण में योगदान देने की प्रेरणा भी दी है। आज के कार्यक्रम में भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेंद्र प्रसाद अधिवक्ता जिला महामंत्री गोपाल प्रसाद यादव, राणा रणजीत सिंह, जिला मीडिया प्रभारी संतोष ठाकुर ,अजय भट्टाचार्य ,विनोद सिंह प्रमोद सिंह रामबालक पांडे धर्मेंद्र पांडे राजकुमार पांडे शंभू शरण सिंह आर एस लूंगा महेश यादव बबलू गुप्ता दिनकर कुमार मिश्रा धनेश्वर महतो आदि।

70वीं बीपीएससी री परीक्षा की मांग को ले सांसद पप्पू यादव के आह्वान पर बिहार बंद का दिखा मिला जुला असर

प्रातः किरण संवाददाता

मधेपुरा । बीपीएससी परीक्षा में हुई धांधली और छात्रों पर लाठी चार्ज के विरुद्ध पूर्णियाँ सांसद पप्पू यादव के आह्वान पर बिहार बंद किया गया। बिहार बंद का मधेपुरा में भी मिला जुला असर देखा गया। शहर के कई दुकान बंद तो कई दुकाने दिखी खुली, युवा शक्ति के कार्यकताओं ने जिलाध्यक्ष मोहन मंडल के अगुवाई में जबरण दुकान बंद कराया गया और शहर में सड़क मार्च किय। इस दौरान भारी संख्या में युवा शक्ति के कार्यकताओं ने बिहार सरकार और बीपीएससी के विरुद्ध सड़क पर जमकर नारेबाजी की।

वहीं इस मौके पर मौजूद युवा शक्ति के जिला अध्यक्ष मोहन मंडल ने बिहार सरकार और बीपीएससी को आड़े हाथो लेकर कहा कि आज 70वीं बीपीएससी परीक्षा में हुई व्याप्त धांधली और छात्रों पर लाठी चार्ज के विरुद्ध री एग्जाम कि मांग को लेकर पूर्णियाँ सांसद पप्पू यादव के आह्वान पर बिहार बंद है इसी कड़ी में हम लोग मधेपुरा को भी बंद करवाया है। जब तक बीपीएससी और बिहार सरकार के मुखिया नितीश कुमार री एग्जाम की घोषणा नहीं करते हैं तब तक हमारा आंदोलन ऐसे हीं जारी रहेगा।

एमडीजे पब्लिक स्कूल लोहई टोला, अमरपुरी, बाली सोनवर्षा में विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया

प्रातः किरण संवाददाता

एमडीजे पब्लिक स्कूल लोहई टोला, अमरपुरी, बाली सोनवर्षा में आज विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि जगदीशपुर विधायक माननीय राम विशुन सिंह लोहिया तथा वरिष्ठ अतिथि कर्नल राणा प्रताप सिंह, गुरु गोविंद सिंह कॉलेज पटना के प्रोफेसर अवध बिहारी सिंह चारिणी, सिविल कोर्ट आरा के वरिष्ठ लोक अभियोजक राणा प्रताप सिंह तथा विद्यालय के निदेशक डॉक्टर नंद कुमार सिंह के द्वारा संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया गया। इसके बाद विद्यालय की छात्राओं द्वारा स्वागत गीत गाकर अतिथियों का स्वागत किया गया तत्पश्चात क्रमबद्ध रूप से विद्यालय के निदेशक डॉ नंद कुमार सिंह के द्वारा सभी अतिथियों को अंग वस्त्र देकर माला पहनकर एवं पुष्प-गुच्छ प्रदान कर सम्मानित किया गया ।विज्ञान प्रदर्शनी में विद्यालय के छात्रों द्वारा कुल 1500 प्रकार के प्रोजेक्ट्स, मॉडल्स,स्वचालित मॉडल्स बनाया गया था जिसमें फिजिक्स, केमिस्ट्री, बायोलॉजी, बॉटनी, जूलॉजी, ज्योग्राफी, हिस्ट्री, इकोनॉमिक्स, पॉलिटिकल साइंस, हिंदी, इंग्लिश, मैथमेटिक्स, म्यूजिक, आर्ट एंड क्राफ्ट, संस्कृत समेत भिन्न-भिन्न विषयों के अलग-अलग स्टॉल लगाकर सभी विषयों के मॉडल प्रदर्शित किया गया था जिसमें प्रमुख रूप से डीएनए मॉडल, फायर विदाउट मैचबॉक्स, पैरेलल एंड सीरीज कलेक्शन, रेनवाटर हार्वेस्टिंग, एफिल टावर, चंद्रयान 3, एग्रीकल्चर फार्मिंग, फंक्शन ऑफ ब्लड सकुर्लेशन, रेसिपायरेट्री सिस्टम, वोलकैनो,फाइव स्टेप ऑफ वॉटर प्यूरिफिकेशन,पावर जनरेटर, इंडिया गेट, गोकुल ग्राम, सुपर कंप्यूटर, एटीएम मशीन, वीणा, गिटार, हारमोनियम, मैथमेटिकल शेप्स समेत हजारों प्रकार के मॉडल्स एवं कलाकृतियां बनाकर बच्चों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए अतिथियों को मंत्र मुग्ध करने का काम किया । वरिष्ठ अतिथियों में राणा प्रताप सिंह वरिष्ठ लोक अभियोजक आरा, प्रोफेसर शोभनाथ गुप्ता, अगिआंव बाजार के थाना प्रभारी अंगद तिवारी, डुमरांव राज हाई स्कूल के पूर्व प्राचार्य श्रीमती पुष्पा कुमारी, वरिष्ठ राजद नेता सुनील कुमार सिंह उर्फ पप्पू जी, सोनवर्षा बीडीसी अजय गुप्ता आदि थे।

चोरों ने गोदाम का ताला तोड़कर की लाखों की चोरी, पुलिस जांच में जुटी

प्रातः किरण संवाददाता

दुकान में चोरी करते धराया चोर, किया गया पुलिस के हवाले

मसौढ़ी !नगर मुख्यालय स्थित गंगाचक मालिकाना मुहल्ले में एक किराना दुकान में चोरी करते एक चोर को दुकानदारों ने मौके पर रंगेहाथ पकड़ कर पुलिस के हवाले कर दिया। पकड़े गए चोर की पहचान कश्मीरगंज मुहल्ले निवासी स्वर्गीय बिरजू साव के पुत्र सागर कुमार के रूप में की गई है। कुछ दिन पहले ही वह जेल से छुटकर आया था।इस मामले में पुलिस ने किराना दुकानदार संतोष कुमार की पुत्री प्रिया कुमारी के लिखित आवेदन पर थाने में एक प्राथमिकी दर्ज की है।दर्ज प्राथमिकी में आरोप है कि शनिवार की शाम गंगाचक मालिकाना स्थित अपने घर में ही किराना दुकान में बैठा थी,जब उसे प्यास लगा तो पानी पीने चला गई।

मसौढ़ी !नगर परिषद अंतर्गत धनरूआ थाना क्षेत्र के बरनी रोड स्थित मां वैष्णवी स्टोर गोदाम से शटर उखाड़ कर चोरों ने लाखों रुपये की सामग्री चोरी कर ली। इस मामले में पीड़ित ने अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है।मसौढ़ी थाना क्षेत्र के मेनरोड मुहल्ले निवासी कृष्ण मुरारी प्रसाद के पुत्र संजय कुमार ने बताया कि मेरा बरनी रोड में मां वैष्णवी स्टोर के नाम से दुकान है।रोजाना की तरह रात्रि आठ बजे मैं दुकान बंद करके घर चला जाता हु। शनिवार को भी रात्रि में अपना दुकान बंद करके मै घर चला गया रविवार को सुबह में आया तो।देखा की गोदाम का शटर उखाड़ा हुआ था।और गोदाम के अंदर रखे नकद दो लाख रुपए कैश व लगभग दस लाख रुपए समेत अन्य सामान चुरा ले गए।भुक्तभोगी ने अज्ञात चोरों के खिलाफ तहरीर दी।का सामान गायब था।

भारतीय राष्ट्रीय जगसेवा पार्टी की आम सभा आयोजित

प्रातः किरण संवाददाता

पटना। भारतीय राष्ट्रीय जगसेवा पार्टी की आम सभा रविवार को राजधानी के बिहार राज्य पंचायत परिषद भवन में संपन्न हुई।जिसमें एक तरफ पार्टी के राष्ट्रीय कार्यकारिणी में कुछ महत्वपूर्ण बदलाव हुए, वहीं दूसरी तरफ पार्टी का प्रदेश व जिला स्तर पर विस्तार किया गया। पूर्व झारखंड प्रदेश अध्यक्ष नितेश कुमार सिन्हा को पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित किया गया, साथ में गौतम वीर को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष एवं आईटी सेल हेड का प्रभार दिया गया। वहीं डॉ. पंकज कुमार को बिहार प्रदेश अध्यक्ष, जीतू कुमार को छात्र संगठन का प्रदेश अध्यक्ष, डॉ. अमित पटेल को महिला संगठन का प्रदेश अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। जबकि पटना जिला अध्यक्ष के पद पर नितेश कुमार, वैशाली जिला अध्यक्ष कुमार सत्यम, भागलपुर जिला अध्यक्ष मोहम्मद अहमद का निर्वाचन किया गया। इस आम सभा में बिहार में पार्टी के विस्तार के साथ बिहार विधानसभा चुनाव में 35 से 40 सीटों पर प्रत्याशी उतारने का निर्णय लिया गया। बिहार के लोगों के प्रमुख मुद्दों स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार और कानून व्यवस्था पर बिहार सरकार को घेरने की रणनीति पर चर्चा हुई। इस आमसभा की अध्यक्षता और समापन राष्ट्रीय महासचिव सौरभ कुमार द्वारा की गई।

अनुग्रह मेमोरियल महाविद्यालय में स्वामी विवेकानन्द की जयंती समारोह का आयोजन

गया।12 जनवरी 2025 को अनुग्रह मेमोरियल महाविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा स्वामी विवेकानंद की जयंती राष्ट्रीय युवा दिवस के शुभ अवसर पर महाविद्यालय परिसर में स्थित स्वामी विवेकानंद की प्रतिमा पर माल्यार्पण सह दीपोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया है ।महाविद्यालय परिसर में नव निर्मित स्वामी विवेकानंद उद्यान में संध्या के समय दीप प्रज्वलित किया गया है ।इस अवसर डॉ श्वेता सिंह कार्यक्रम पदाधिकारी राष्ट्रीय सेवा योजना ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी विवेकानंद ज के जीवन दर्शन से प्रेरणा लेकर हम सभी को अपने जीवन में आत्मसात चाहिए।डॉ मोहन सिंह, सहायक प्राध्यापक,मनोविज्ञान विभाग ने कहा कि युवा पीढ़ी को स्वामी के जीवन से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते रहना होगा।

महा कुंभ 2025: रेलवे की विशेष तैयारियों का शुभारंभ

पटना। केंद्रीय रेल मंत्री श्री अश्विनी वैष्णव ने महा कुंभ 2025 के लिए प्रयागराज क्षेत्र में रेलवे की तैयारियों को एक नया आयाम देते हुए कई प्रमुख परियोजनाओं और सुविधाओं का शुभारंभ किया।

मुख्य घोषणाएँ और उद्घाटन:

कुंभ वार रूम का उद्घाटन:

रेलवे बोर्ड में कुंभ वार रूम का शुभारंभ।

यह वार रूम 24ग7 कार्य करेगा, जिसमें ऑपरेटिंग, कमर्शियल, आरपीएफ, मैकेनिकल, इंजीनियरिंग, इलेक्ट्रिकल जैसे विभिन्न विभागों के अधिकारी तैनात रहेंगे।

1,176 सीसीटीवी कैमरों से प्राप्त लाइव फीड की मॉनिटरिंग प्लेटफॉर्म स्तर से लेकर रेलवे बोर्ड स्तर तक की जाएगी।

मॉनिटरिंग संरचना:

प्लेटफॉर्म स्टेशन मंडल जिला जोनल रेलवे बोर्ड।

इस वार रूम के माध्यम से जिला प्रशासन और रेलवे के बीच समन्वय को मजबूत किया जाएगा, जिससे यात्रियों को तत्काल सहायता और सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।

घोषणा प्रणाली और यात्री पुस्तिका का विमोचन:

12 भाषाओं में उद्घोषणा प्रणाली की शुरूआत प्रयागराज, नैनी, छिवकी और सुबेदारगंज स्टेशनों पर।

यात्रियों को उपयोगी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए 22 भाषाओं में तैयार की गई विशेष पुस्तिका का विमोचन।

प्रयागराज क्षेत्र में यात्री सुविधाएँ:

रेलवे नेटवर्क में विस्तार और सुधार: कुल 13,000 ट्रेनों का संचालन: 10,000 नियमित ट्रेनें।3,134 विशेष ट्रेनें (पिछले कुंभ से 4.5 गुना अधिक), 1,869 शॉर्ट डिस्टेंस ट्रेनें।706 लॉन्ग डिस्टेंस ट्रेनें।559 रिंग ट्रेनें।मालगाड़ियों को डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर पर डायवर्ट किया गया। महा कुंभ के लिए बीते 3 वर्षों में 5,000 करोड़ का निवेश।

यात्री सुविधाओं का विस्तार:

48 प्लेटफॉर्म, 21 फुट ओवर ब्रिज। 23 स्थायी होल्डिंग एरिया, जिनकी क्षमता 1 लाख से अधिक।

554 टिकटिंग काउंटर, जिनमें 151 मोबाइल वळर काउंटर शामिल।

सड़कों और रेलवे की सुगम आवाजाही के लिए 21 फ्लइ२/फ्नइ२ का निर्माण। सभी 9 स्टेशनों पर 12 भाषाओं में उद्घोषणा प्रणाली।

3,700 करोड़ की लागत से परियोजनाएँ। बनारस-प्रयागराज डबलिंग (गंगा ब्रिज सहित)।

फाफामऊ-जंघई डबलिंग।

40 करोड़ श्रद्धालु महा कुंभ में भाग लेंगे। मौनी अमावस्या के दिन 5 करोड़ श्रद्धालुओं की उपस्थिति।

हरिहर साहा महाविद्यालय में राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया स्वामी विवेकानंद का जयंती समारोह

प्रातः किरण संवाददाता

उदाकिशुनगंज (मधेपुरा)। अनुमंडल क्षेत्र के एकमात्र अंगीभूत इकाई हरिहर साहा महाविद्यालय में सांस्कृतिक परिषद एवं राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई हरिहर साहा महाविद्यालय के सौजन्य से रविवार को स्वामी विवेकानंद का जयंती समारोह राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुरूआत बीएनएमयू के पूर्व कुलपति प्रो. (डॉ.) अनंत कुमार, बिहारीगंज विधानसभा के विधायक निरंजन कुमार मेहता, बीएनएमयू के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) विपिन कुमार राय, महाविद्यालय के प्रधानाचार्य प्रज्ञा प्रसाद ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह में उपस्थित अतिथियों और गन्यमान लोगों ने स्वामी विवेकानंद के तेलिय चित्र पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। कार्यक्रम कि अध्यक्षता प्रधानाचार्य प्रज्ञा प्रसाद ने कि तो संचालन का काम प्रो. (डॉ.) अमित कुमार मिश्रा ने किया। समारोह को संबोधित करते हुए बिहारीगंज विधानसभा के विधायक निरंजन कुमार मेहता ने भी भी उनके अपना विचार व्यक्त किया। साथ हीं उन्होंने महाविद्यालय के विकास के बारे में बताते हुए कहा कि बहुत जल्द भविष्य महाविद्यालय के दिन बहुरेंगे। 5 करोड़ के लागत से महाविद्यालय का कायाकल्प होगा। बीएनएमयू के कुलसचिव प्रो. (डॉ.) विपिन कुमार राय ने कहा कि विवेकानंद की ओजस्वी वाणी, ओजपूर्ण विचारों ने सुप्त लोगों को जागृत किया। कार्यक्रम कि अध्यक्षता कर रहे प्रधानाचार्य प्रज्ञा प्रसाद ने कहा कि राष्ट्रीय युवा दिवस युवाओं को विवेकानंद की शिक्षाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती है और उन्हें हर साल एक प्रगतिशील राष्ट्र की दिशा में काम करने का आग्रह करती है। मौके पर प्रो. (डॉ.) सुमन कुमार झा, प्रो. अरुण कुमार, प्रशाखा पदाधिकारी डॉ. अरविंद कुमार हरिहर साहा के प्रप्रोत्र अभिषेक प्रणव, युवा वक्ता राहुल कुमार यादव, छात्र नेता आदेश प्रताप सिंह, आदित्य कुमार, खुशी कुमारी, उर्वशी कुमारी आदि ने भी सभा को संबोधित किया।

महाविद्यालय की ओर से छात्र और छात्राओं का प्रतिनिधित्व करते हुए महाविद्यालय की छात्रा खुशी कुमारी ने कहा कि सपने हमेशा बड़े देखो कोई आपको कितना भी नीचे दिखाए या आप पर हंसे आपका ध्यान लक्ष्य पर होना चाहिए क्योंकि मेहनत कभी बेकार नहीं जाती मैं सभी युवा छात्र-छात्राओं से कहना चाहूंगी कि कुछ भी हो जाए खुद पर भरोसा रखो आप वह सब हासिल कर सकते हैं जो चाहते हो बस अपनी जमीन और धैर्य को मत खोना। हमें बस जरूरत है स्वामी विवेकानंद के विचारों को अपने अंदर आत्मसात करने की और सही दिशा में चलने की। उन्होंने कहा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था उठो जागो और तब तक मत रुको और जब तक तुम्हें लक्ष्य की प्राप्ति ना हो जाए।

महाविद्यालय के तरफ से छात्र-छात्राओं का प्रतिनिधित्व करते हुए उर्वशी कुमारी ने कहा कि स्वामी विवेकानन्द भारत के युवाओं को गौरवशाली अतीत और भव्य भविष्य की मजबूत कड़ी के रूप में देखते थे। विवेकानन्द कहते थे कि सारी शक्ति तुम्हारे भीतर है, उस शक्ति का आह्वान करो। आपको विश्वास होना चाहिए कि आप सब कुछ कर सकते हैं। स्वयं पर यह विश्वास और असंभव को संभव में बदलना आज भी देश के युवाओं के लिए प्रासंगिक है।

योगराज सिंह ने कहा-

मैं कपिल देव के सिर में गोली मारना चाहता था...

नईदिल्ली, एजेंसी। युवराज सिंह के पिता योगराज सिंह ने एक दिल दहलाने वाला खुलासा किया। उन्होंने बताया कि वो टीम इंडिया के पूर्व कप्तान कपिल देव को मारना चाहते थे। योगराज सिंह ने 1980-81 में ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे के दौरान भारत के लिए एक टेस्ट और छह वनडे मैच खेले। योगराज सिंह ने इसका खुलासा भी किया कि वो आखिर क्यों कपिल देव को मारना चाहते थे। योगराज सिंह ने अनफिल्टर्ड बाय समदिश पर कहा कि जब कपिल देव भारत, उत्तरी क्षेत्र और हरियाणा के कप्तान बने, तो उन्होंने बिना किसी कारण के मुझे टीम बाहर कर दिया। मेरी पत्नी (युवी की माँ) चाहती थीं कि मैं कपिल से सवाल पूछूं और मैंने उनसे कहा कि मैं इसआदमी को सबक सिखाऊंगा।

कपिल देव को गोली मारने गए थे योगराज सिंह – योगराज सिंह ने कहा कि मैंने अपनी पिस्तौल निकाली और सेक्टर 9 में कपिल के घर गया। वह अपनी मां के साथ बाहर आया। मैंने उसे एक दर्जन गाली दी। मैंने उससे कहा कि तुम्हारी वजह से मैंने एक दोस्त खो दिया है और तुमने जो किया है, उसकी कीमत तुम्हें चुकानी पड़ेगी। मैंने उससे कहा कि मैं तुम्हारे सिर में गोली मारना चाहता हूं, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाऊंगा क्योंकि तुम्हारी एक बहुत ही पवित्र मां है, जो यहां खड़ी हैं। फिर मैंने शबनम से कहा कि चलो यहां से चलते हैं। योगराज सिंह ने आगे बताया कि यही वो पल था जब मैंने तय किया कि मैं क्रिकेट नहीं खेलूंगा, युवी खेलेगा। योगराज ने टीम इंडिया के पूर्व स्पिनर बिशन सिंह बेदी पर भी तीखी टिप्पणी की। उन्होंने कहा कि बिशन सिंह बेदी समेत इन लोगों ने मेरे खिलाफ साजिश रची। मैंने बिशन सिंह बेदी को कभी माफ नहीं किया। वह व्यक्ति बिस्तर पर ही मर गया। जब मुझे टीम से बाहर किया गया तो मैंने चयनकर्ताओं में से एक रवींद्र चड्ढा से बात की। उन्होंने मुझे बताया कि बिशन सिंह बेदी (मुख्य चयनकर्ता) मुझे नहीं चुनना चाहते थे क्योंकि उन्हें लगता था कि मैं सुनील गावस्कर का आदमी हूं और मैं मुंबई में क्रिकेट खेल रहा था। मैं गावस्कर के बहुत करीब था।

कपिल देव ने मांगी थी माफी

योगराज ने यह भी बताया कि इतने साल में उन्होंने कपिल देव के बारे में कभी बात नहीं की। उन्होंने कहा कि 2011 में जब भारत ने विश्व कप जीता था, तो सिर्फ एक ही व्यक्ति रो रहा था और वह कपिल देव थे। योगराज ने आगे कहा कि मैंने कपिल को एक पेपर कटिंग भेजी थी कि मेरे बेटे ने विश्व कप में आपसे बेहतर प्रदर्शन किया है। योगराज ने यह भी याद किया कि कपिल देव ने उनसे माफी मांगी थी। योगराज ने कहा कि कपिल ने मुझे व्हाट्सऐप पर एक संदेश भेजा था जिसमें कहा गया था कि अगले जन्म में हम भाई होंगे। हम अगले जन्म में एक ही मां से पैदा होंगे। वह मुझसे मिलना चाहता था, लेकिन बदला लेना है और यह अभी भी दुख देता है।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड ने किया 15 सदस्यी टीम का ऐलान

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड ने 15 सदस्यी टीम का ऐलान कर दिया जिसमें तेज गेंदबाज बेन सियर्स और विल ओ'रूर्के के अलावा ऑलराउंडर नाथन स्मिथ को भी शामिल किया गया। इस टूर्नामेंट के लिए बेन सियर्स को भी वनडे टीम में शामिल किया गया है जो कीवी टीम के लिए एक टेस्ट और 17 टी20 मैच खेल चुके हैं। विल ओ'रूर्के ने भी सभी प्रारूपों में प्रभावित किया है, लेकिन टेस्ट प्रारूप में उनका प्रदर्शन काफी शानदार रहा है।

इस टूर्नामेंट में कीवी टीम की कप्तानी मिचेल सैंटनर करेंगे जबकि नाथन स्मिथ टीम में ऑलराउंडर की भूमिका निभाएंगे जो निचले क्रम पर अच्छी बल्लेबाजी करते हैं साथ ही तेज गेंदबाजी भी करते हैं। नाथन स्मिथ इस टीम में काफी हद तक टिम साउथी की जगह को भरते हुए नजर आ सकते हैं। चैंपियंस ट्रॉफी से पहले कीवी टीम को पाकिस्तान में होने वाले ट्राई सीरीज में भी हिस्सा लेना है और उसमें भी यही टीम खेलती हुई नजर आएगी। इस ट्राई सीरीज में पाकिस्तान, न्यूजीलैंड के अलावा साउथ अफ्रीका भी हिस्सा लेगा।

चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए न्यूजीलैंड की टीम

मिचेल सैंटनर (कप्तान), माइकल ब्रेसवेल, मार्क चैपमैन, डेवोन कॉनवे, लॉकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी, टॉम लैथम, डेरिल मिशेल, विल ओ'रुरके, ग्लेन फिलिप्स, रचिन रवींद्र, बेन सियर्स, नाथन स्मिथ, केन विलियमसन, विल यंग।

मिचेल सैंटनर पहली बार किसी आईसीसी टूर्नामेंट में न्यूजीलैंड टीम की कप्तानी करते हुए नजर आएंगे तो वहीं इस टीम में केन विलियमसन और टॉम लाथम जैसे अनुभवी खिलाड़ियों को भी जगह दी गई है। टीम में मार्क चैपमैन, रचिन रवींद्र और विल यंग भी हैं जबकि स्पिन गेंदबाजी ऑलराउंडर माइकल ब्रेसवेल के भी टीम का हिस्सा बनाया गया है। चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में न्यूजीलैंड को पाकिस्तान, बांग्लादेश और भारत के साथ वाले ग्रुप में रखा गया है। लॉकी फर्ग्यूसन अगर उपलब्ध नहीं हो पाते हैं तो न्यूजीलैंड ने तेज गेंदबाज जैकब डफी को रिजर्व के रूप में रखा है।

पाकिस्तान के खिलाफ नहीं खेलेंगे बुमराह

चैंपियंस ट्रॉफी से पहले भारत को बड़ा झटका, इंजरी रिपोर्ट में हुआ ये खुलासा

सेमीफाइनल में खेलने की उम्मीद

ऑस्ट्रेलिया में जसप्रीत बुमराह से जरूरत से ज्यादा गेंदबाजी करवाने का नतीजा टीम इंडिया को चैंपियंस ट्रॉफी में भुगतना पड़ रहा है. जैसा कि हमने पहले ही बताया बुमराह को मार्च के पहले हफ्ते तक ही पूरी तरह फिट हो पाएंगे. तब तक भारत के ग्रुप स्टेज के मुकाबले खत्म हो जाएंगे. भारतीय टीम अपना आखिरी ग्रुप मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 2 मार्च को खेलेगी, जिसमें बुमराह का खेलना मुश्किल लग रहा है. इसका मतलब है कि अगर टीम इंडिया सेमीफाइनल में पहुंचने में कामयाब होती है तो 4 मार्च को होने वाले इस मैच में बुमराह खेल सकते हैं. हालांकि, अभी ये सिर्फ मौजूदा जानकारी के आधार पर अनुमान लगाया जा रहा है.

नईदिल्ली, एजेंसी। चैंपियंस ट्रॉफी की शुरुआत 19 फरवरी से होनी है. वहीं 20 फरवरी भारतीय टीम दुबई में बांग्लादेश के खिलाफ टूर्नामेंट में अपने सफर की शुरुआत करेगी. वहीं भारत और पाकिस्तान का मुकाबला 23 फरवरी को खेला जाएगा. यानि इस अहम मुकाबले में अब करीब 1.5 महीने का समय रह गया है. लेकिन इससे ठीक पहले टीम इंडिया के लिए एक बुरी खबर सामने आई है. दरअसल, ऑस्ट्रेलिया में सिडनी टेस्ट के दौरान जसप्रीत बुमराह को इंजरी हो गई थी. इसके बाद उनका स्कैन किया गया था, जिसकी रिपोर्ट सामने आ गई है. इसमें खुलासा हुआ है कि उनकी कमर में सूजन है और वो करीब दो महीने तक मैदान से बाहर रह सकते हैं.

शनिवार 11 जनवरी को इंग्लैंड के खिलाफ टी20 सीरीज के लिए स्क्वाड का ऐलान किया गया था. इसी दिन बीसीसीआई ने एक मीटिंग भी की थी. मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इसमें ही बुमराह की इंजरी के बारे में सेलेक्टर्स को डिटेल जानकारी दी गई. बता दें भारतीय क्रिकेट बोर्ड की मेडिकल टीम लगातार बुमराह की इंजरी को लेकर नजर बनाए हुई थी. पहले अनुमान लगाया जा रहा था कि उन्हें फ्रैक्चर है. लेकिन रिपोर्ट सामने आने के बाद पता चला है कि उनके कमर में सूजन है.

बीसीसीआई सूत्रों की मानें तो बुमराह को नेशनल क्रिकेट एकेडमी में रिपोर्ट करने के लिए कहा गया है. यहां वो रिहैब करेंगे, जिसमें करीब दो महीने का समय लग सकता है. मार्च के पहले हफ्ते तक ही उनके पूरी तरह ठीक होने की उम्मीद है. बता दें एनसीए उनकी रिकवरी को पहले तीन हफ्ते तक मॉनिटर करेगी. इसके बाद उन्हें दो प्रैक्टिस मैच खेलने होंगे, जहां फिटनेस की जांच की जाएगी. इसमें पास होने के बाद ही भारतीय टीम के लिए खेलने की अनुमति दी जाएगी.

रोहित-कोहली का भविष्य तय करेगी चैम्पियंस ट्रॉफी...

नईदिल्ली, एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पांच मैचों की टेस्ट सीरीज में भारतीय टीम को 1-3 से हार का सामना करना पड़ा था. इसके चलते भारतीय टीम ने 10 साल बाद बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी गंवा दी थी. साथ ही भारतीय टीम वर्ल्ड टेस्ट चैम्पियनशिप के मौजूदा चक्र के फाइनल में भी नहीं पहुंच सकी थी. ऑस्ट्रेलिया दौरे के बाद भारतीय क्रिकेट नियंत्रण बोर्ड ने 11 जनवरी (रविवार) को मुंबई में रिव्यू मीटिंग बुलाई.

बल्लेबाजों के प्रदर्शन पर हुई गंभीर चर्चा

सूत्र ने आगे बताया, बैठक में टीम के प्रदर्शन पर विस्तृत चर्चा हुई, खासकर बल्लेबाजी लाइन अप पर. प्रबंधन यह समझना चाहता था कि मजबूत लाइन-अप होने के बावजूद भारतीय बल्लेबाज अच्छा प्रदर्शन क्यों नहीं कर पा रहे हैं. साथ ही, मुख्य कारण और उसके सुधार पर भी चर्चा हुई. सभी बातों पर गौर किया गया है और चैम्पियंस ट्रॉफी के तुरंत बाद कुछ कदम उठाए जाएंगे. एक सदस्य ने यह भी बताया कि टीम घरेलू मैदान पर सीरीज हार गई, जो दर्शाता है कि कुछ गड़बड़ है और उन्होंने इस पर स्पष्टीकरण मांगा.

कोहली-रोहित के फ्यूचर पर मीटिंग में हुई चर्चा

इस मीटिंग का उद्देश्य यह समझना था कि ऑस्ट्रेलिया दौरे पर टीम इंडिया के साथ क्या गलत हुआ. रिव्यू मीटिंग में कप्तान रोहित शर्मा, हेड कोच गौतम गंभीर, बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी, सचिव देवजीत सैकिया और उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला शामिल हुए. यह बैठक करीब 2 घंटे तक चली. मैनेजमेंट ने इस दौरान न्यूजीलैंड के खिलाफ भी भारतीय टीम के प्रदर्शन की समीक्षा की, जहां रोहित ब्रिगेड को अपने घर में टेस्ट सीरीज में 0-3 से करारी हार झेलनी पड़ी थी.

सूत्रों के मुताबिक इस बैठक में रोहित शर्मा और विराट कोहली के प्रदर्शन पर चर्चा हुई. समझा जाता है कि दोनों खिलाड़ियों को मैदान पर अच्छा प्रदर्शन करने के लिए कहा गया है. साथ ही मीटिंग में रोहित शर्मा की कप्तानी को लेकर भी बात हुई. पूरे घटनाक्रम की जानकारी रखने वाले सूत्र ने आजतक को बताया, अभी कुछ नहीं होने वाला है, लेकिन मैनेजमेंट चैम्पियंस ट्रॉफी के बाद कप्तानी को लेकर फैसला कर सकता है।

आरसीबी के इस बल्लेबाज को भारतीय टीम में नहीं मिली जगह

2024 में 181 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से बनाए थे 823 रन

नईदिल्ली, एजेंसी। इंग्लैंड के खिलाफ 5 मैचों की टी20 सीरीज के लिए भारतीय टीम का ऐलान कर दिया गया। भारतीय सेलेक्टर्स ने इस टीम में आरसीबी के धाकड़ बल्लेबाज रजत पाटीदार को मौका नहीं दिया जो घरेलू स्तर पर लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। रजत का प्रदर्शन आईपीएल में भी अच्छा रहा है और वो अपनी टीम आरसीबी के लिए रन बनाने में पिछले सीजन में भी सफल रहे थे।

रजत पाटीदार को आक्रामक बल्लेबाज के रूप में जाना जाता है तो मध्यक्रम के शानदार बल्लेबाज हैं। रजत को भारत के लिए 3 टेस्ट और एक वनडे मैच में खेलने का मौका मिला है, लेकिन टी20 प्रारूप में वो अब तक डेब्यू नहीं कर पाए हैं। रजत लगातार छोटे प्रारूप के लिए टीम इंडिया का दरवाजा खटखटा रहे हैं, लेकिन उन्हें मौका नहीं मिल पाया है।

साल 2024 में रजत ने किया शानदार प्रदर्शन

रजत पाटीदार ने साल 2024 में टी20 में काफी अच्छा प्रदर्शन किया और उन्होंने 181.6 की स्ट्राइक रेट के साथ कुल 823 रन बनाए। उन्होंने साल 2024 में आरसीबी के लिए खेलते हुए 177.13 की स्ट्राइक रेट के साथ 395 रन बनाए जबकि हाल ही में खत्म हुए सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी टूर्नामेंट में उन्होंने शानदार बल्लेबाजी करते हुए 186.6 की स्ट्राइक रेट के साथ कुल 428 रन बनाए थे। रजत रन बनाने में निरंतर रहे हैं, लेकिन वो 31 साल के हो चुके हैं और शायद ये बड़ी वजह हो सकती है कि उन्हें भारतीय टी20 टीम में जगह नहीं मिल रही है।

रजत पाटीदार का टी20 क्रिकेट करियर

रजत पाटीदार का टी20 क्रिकेट करियर काफी अच्छा रहा है और उन्होंने अब तक खेले 75 मैचों की 71 पारियों में 158.18 की स्ट्राइक रेट के साथ 2463 रन बनाए हैं। उनका औसत इस दौरान 38.48 का रहा है। रजत ने टी20 प्रारूप में अब तक एक शतक और 24 अर्धशतकीय पारियां खेली हैं और उनका बेस्ट स्कोर नाबाद 112 रन रहा है। उन्होंने अब तक 141 चौके और 143 छक्के लगाए हैं।

जय शाह के बाद देवाजीत सैकिया बने BCCI के नए सेक्रेटरी

प्रभतेज भाटिया को बनाया गया नया कोषाध्यक्ष

नईदिल्ली, एजेंसी। असम के पूर्व क्रिकेटर देवजीत सैकिया ने जय शाह की जगह भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) के सचिव पद की जिम्मेदारी संभाल ली है। जय शाह के आईसीसी अध्यक्ष बनने के बाद से ये पद एक महीने से अधिक समय से खाली था। सचिव के तौर पर सैकिया ने बीसीसीआई अध्यक्ष रोजर बिन्नी के साथ उस बैठक में हिस्सा लिया था जिसे भारत के खराब ऑस्ट्रेलिया दौरे पर आयोजित किया गया था। इस बैठक में कप्तान रोहित शर्मा, कोच गौतम गंभीर और चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर भी शामिल हुए थे। वहीं पूर्व सचिव जय शाह भी इसका हिस्सा थे। इसके अलावा प्रभतेज भाटिया को बोर्ड का नया कोषाध्यक्ष बनाया गया। असम से ताल्लुक रखने वाले देवजीत सैकिया का बैकग्राउंड बहुआयामी है। उन्होंने क्रिकेट भी खेला और कानून व प्रशासन के क्षेत्र में भी काम किया। प्रथम श्रेणी क्रिकेटर के रूप में सैकिया ने 1990 और 1991 के बीच 4 मैच खेले जिसमें उन्होंने विकेटकीपर के रूप में काम किया। उनका क्रिकेट करियर काफी छोटा था और इस दौरान उन्होंने विकेटकीपर के रूप में 9 शिकार किए जबकि 53 रन बनाने में सफल रहे। क्रिकेट खेलना छोड़ने के बाद सैकिया ने वकालत के क्षेत्र में काम किया और 28 साल की उम्र में में गुवाहाटी उच्च न्यायालय में वकील के रूप में प्रैक्टिस शुरू की।

अंपायर की बेटी ने बढ़ाई टीम इंडिया की ताकत

विरोधियों के लिए बनी आफत, स्मृति मंधाना के सामने ठोके 290 रन!

नईदिल्ली, एजेंसी। इंटरनेशनल डेब्यू को अभी महीना भी नहीं बीता और पूरा इंडिया उसकी बात कर रहा है. वजह है उसकी बल्लेबाजी, जो बेलगाम है. भारत के नजरिए से जहां उसका बेखौफ होकर खेलना ताकत है, वहीं विरोधी टीमों के लिए आफत. हम जिनकी बात कर रहे हैं वो एक अंपायर की बेटी हैं. उन्होंने साइकोलॉजी की पढ़ाई की है, ऐसे में जाहिर है कि गेंदबाजों की दिमाग की पढ़ाई कर उनकी मानसिकता को समझना उनके लिए मुश्किल नहीं. भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उभरती हुई इस नई स्टार का नाम है प्रतीका रावल, जिन्होंने टीम इंडिया के लिए ओपनिंग करते हुए अब तक स्मृति मंधाना के सामने 290 रन ठोक दिए हैं.

अंपायर की बेटी जो बन गई क्रिकेटर –प्रतीका रावल दिल्ली यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएट हैं. वहीं उनके पिता प्रदीप रावल, बीसीसीआई से मान्यता प्राप्त लेवल 2 के अंपायर हैं. स्कूली दिनों में बास्केटबॉल में गोल्ड मेडल जीतने वाली प्रतीका को क्रिकेट की अपनी काबिलियत का असली पता कॉलेज के दिनों में चला. बस फिर क्या था शुरू हो गया सफर. उसने बहुत जल्दी ही अपनी प्रतिभा के दम पर टीम इंडिया में कदम रखा.

आयरलैंड के खिलाफ हल्ला बोल – प्रतीका का डेब्यू तो वेस्टइंडीज के खिलाफ 22 दिसंबर 2024 को हुआ था. लेकिन, बल्ले का जोर फिलहाल आयरलैंड के खिलाफ दिख रहा है. 3 वनडे की सीरीज के पहले दो मैचों में वो लगातार दो अर्धशतक जड़ चुकी है. पहले वनडे में 89 रन की पारी खेलने के बाद प्रतीका ने दूसरे वनडे में 83 रन बनाए.

स्मृति मंधाना के सामने ठोके 290 रन! – प्रतीका रावल ने डेब्यू से अब तक 5 वनडे खेले जिसमें उसने 32 चौके और 3 छक्के के दम पर 290 रन बनाए हैं. इस दौरान 3 अर्धशतकीय पारियां प्रतीका के बल्ले से निकली. इन सभी मैचों के दौरान क्रीज के दूसरे छोर पर स्मृति मंधाना उनके साथ रहीं. मतलब वो मंधाना की नई ओपनिंग पार्टनर है, जो अब टीम की ताकत और विरोधियों के लिए आफत बनती दिख रही है. व्हाइट बॉल क्रिकेट में टीम इंडिया के पास पहले से ही शेफाली वर्मा जैसी विस्फोटक ओपनर है।

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए भारत के पड़ोसी देश ने किया टीम का ऐलान, 447 मैच खेलने वाले को नहीं मिली जगह

नईदिल्ली, एजेंसी। 2025 चैंपियंस ट्रॉफी 19 फरवरी से 9 मार्च तक पाकिस्तान और संयुक्तर अरब अमीरात में खेली जानी है. 8 टीमों के बीच खेले जाने वाले इस टूर्नामेंट के लिए स्क्वॉड का ऐलान होना शुरू हो गया है. इंग्लैंड की टीम ने पहले ही अपनी टीम चुन ली थी. अब भारत के एक पड़ोसी देश ने भी अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है. लेकिन इस टीम में सबसे अनुभवी खिलाड़ी को शामिल नहीं किया गया है. इस खिलाड़ी के पास 447 इंटरनेशनल मैच खेलने का अनुभव है. लेकिन पिछले कुछ समय से ये खिलाड़ी एक विवाद में फंसा हुआ है. चैंपियंस ट्रॉफी के लिए बांग्लादेश की टीम ने अपने स्क्वॉड का ऐलान कर दिया है. नजमुल हुसैन शांतो इस टीम की कमान संभालेंगे. वहीं, पूर्व कप्तान और अनुभवी ऑलराउंडर शाकिब अल हसन को टीम में नहीं चुना गया है. हाल ही में शाकिब अल हसन लगातार दूसरी बार बॉलिंग एक्शन के टेस्ट में फेल हुए हैं. ऐसे में उन्हें टीम में नहीं चुना गया है. दूसरी ओर लिटन दास को भी स्क्वॉड में शामिल नहीं किया गया है. हालांकि अनुभवी खिलाड़ी महमूदुल्लाह और मुशफिकुर रहीम इस टीम का हिस्सा हैं.

इन टीमों से होगी बांग्लादेश की टक्कर – चैंपियंस ट्रॉफी 2025 में बांग्लादेश के ग्रुप में भारत, न्यूजीलैंड और पाकिस्तान की टीमें शामिल हैं. वह अपने अभियान की शुरुआत 20 फरवरी से करेगी. जहां उसका सामना टीम इंडिया से होगा. ये मुकाबला दुबई में खेला जाएगा. इसके बाद बांग्लादेश की टीम पाकिस्तान जाएगी. ग्रुप स्टेज में वह अपना दूसरा मैच न्यूजीलैंड के खिलाफ 24 फरवरी को रावलपिंडी में खेलेगी. इसके बाद 27 फरवरी को रावलपिंडी में ही उसकी टक्कर पाकिस्तान से होगी. बता दें, पिछली चैंपियंस ट्रॉफी में बांग्लादेश की टीम सेमीफाइनल तक पहुंची थी. ऐसे में वह बाकी टीमों के लिए इस बार भी बड़ी खतरा रहने वाली है.

चैंपियंस ट्रॉफी के लिए बांग्लादेश का स्क्वॉड

नजमुल हुसैन शांतो (कप्तान), सौम्या सरकार, तंजीद हसन, तौहीद हृदोय, मुश्फिकुर रहीम, एमडी महमूद उल्लाह, जेकर अली अनिक, मेहदी हसन मिराज, रिशाद हुसैन, तस्कीन अहमद, मुस्तफिजुर, परवेज हुसैन इमोन, नसुम अहमद, तंजीम हसन साकिब, नाहिद राणा।

संक्षिप्त खबरें

हमास के साथ बंधक समझौते के लिए कतर जाएगा इजरायली प्रतिनिधिमंडल

यरूशलम। गाजा पट्टी में बंधक बनाए गए इजरायली नागरिकों की रिहाई के लिए हमास के साथ समझौते को आगे बढ़ाने के लिए इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने एक वरिष्ठ प्रतिनिधिमंडल को कतर की राजधानी दोहा रवाना होने का निर्देश दिया है।प्रधानमंत्री कार्यालय ने शनिवार को बताया कि नेतन्याहू ने यह निर्देश रक्षा मंत्री इजरायल काट्ज और अमेरिकी वार्ताकारों (जिसमें मौजूदा और आने वाला प्रशासन दोनों शामिल है) के साथ स्थिति का आकलन करने के बाद दिया।समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, इजरायली प्रतिनिधिमंडल में इजरायली मोसाद खुफिया एजेंसी के प्रमुख डेविड बार्निया और शिन बेट आंतरिक सुरक्षा सेवा के प्रमुख रोनेन बार शामिल हैं। इस बीच, 10 जनवरी को इजरायल काट्ज ने सेना को निर्देश दिया है कि यदि 20 जनवरी तक बंधकों की रिहाई के समझौते पर हस्ताक्षर नहीं किए गए तो वे हमास को पूरी तरह पस्त करने के लिए एक योजना तैयार करें।

यमन: अल बायदा गवर्नरेट में गैस स्टेशन पर विस्फोट में 7 की मौत

अदन। मध्य यमन के अल बायदा गवर्नरेट में एक गैस स्टेशन पर विस्फोट में सात लोगों की मौत हो गई और 65 घायल हो गए।मीडिया रिपोर्ट में क्षेत्र के प्रशासन के हवाले से यह जानकारी दी गयी।सूत्रों ने कहा, विस्फोट अल बायदा गवर्नरेट के उत्तर में एन नसीफ क्षेत्र में एक गैस स्टेशन पर हुआ।इसके परिणामस्वरूप लगी भीषण आग में सात लोगों की मौत हो गई और 65 घायल हो गए, जिनमें से 15 की हालत गंभीर है। सूत्रों के मुताबिक, विस्फोट में 20 से ज्यादा कारें क्षतिग्रस्त हो गईं। सुरक्षा बलों ने घटना के कारणों की जांच शुरू कर दी है। अल बायदा गवर्नरेट हाल ही में उत्तरी यमन पर शासन करने वाले शिया आंदोलन अंसार अल्लाह (हूती) के पक्ष के सैनिकों और उनका विरोध करने वाले सशस्त्र समूहों के बीच संघर्ष का स्थान रहा है।

गाजा में इजरायली हमलों में बीस फिलिस्तीनी मारे गए

गाजा। गाजा पट्टी के विभिन्न इलाकों में शनिवार को इजरायली हवाई हमलों में कम से कम 20 फिलिस्तीनी मारे गए और कई लोग घायल हो गए। नागरिक सुरक्षा प्रवक्ता महमूद बसल ने बताया कि उत्तरी गाजा पट्टी के जबालिया में विस्थापित लोगों के आवास वाले एक स्कूल पर इजरायली बमबारी में दो बच्चों और दो महिलाओं सहित आठ फिलिस्तीनियों की मौत हो गई और 19 बच्चों सहित 30 से अधिक लोग घायल हो गए।श्री बसल के अनुसार एक अन्य हमले में गाजा शहर के पूर्व में शुजैया पड़ोस में एक घर को निशाना बनाकर किए गए इजरायली हवाईहमले मेंदो फिलिस्तीनी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए।गाजा शहर के पश्चिम में अल-रिमल पड़ोस में एक आवासीय इमारत के एक अपार्टमेंट को निशाना बनाकर किए गए बम विस्फोट में एक महिला और एक बच्चे सहित तीन अन्य लोग मारे गए और 10 घायल हो गए। उन्होंने कहा कि गाजा शहर के पूर्व में अल-नफाक स्ट्रीट में नागरिकों की एक सभा पर हवाई हमले में चार लोग मारे गए।उन्होंने बताया कि इजरायली युद्धक विमानों ने मध्य गाजा पट्टी के दीर अल-बलाह शहर में एक तंबू पर बमबारी की जिसमें तीन लोग मारे गए। इस बीच इजरायली सेना के प्रवक्ता अविचाई अद्राई ने एक प्रेस बयान में कहा कि वायु सेना के विमानों ने हमास के आतंकवादियों पर हमला किया जो जबालिया में पहले एक स्कूल के रूप में इस्तेमाल किए जाने वाले क्षेत्र में एक कमांड और नियंत्रण परिसर के अंदर काम करते थे।

लॉस एंजिलिस में तबाही मचाने वाली तेज हवाओं के लौटने से पहले आग पर काबू पाने के प्रयास और तेज

लॉस एंजिलिस। अमेरिका के कैलिफोर्निया राज्य के लॉस एंजिलिस शहर में दमकल कर्मियों ने फिर से तेज हवाएं चलने की आशंका को देखते हुए जंगल में लगी भीषण आग को काबू करने के प्रयास और तेज कर दिये हैं। दमकल कर्मी प्रयास कर रहे हैं कि आग विश्व प्रसिद्ध जे. पॉल गेटी संग्रहालय और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय तक न फैले।मैन्डेविल कैनयन में आग बुझाने के लिए पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं।पैसिफिक कोस्ट के निकट स्थित मैन्डेविल कैनयन में प्रसिद्ध अभिनेता अर्नोल्ड श्वार्जनेगर समेत कई हस्तियों के घर हैं।कैलफायर ऑपरेशन्स के प्रमुख क्रिश्चियन लिट्ज ने एक ब्रीफिंग में कहा कि आग बुझाने के अभियान के दौरान विशेष ध्यान कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के निकट घाटी क्षेत्र पैलिसेड्स में जल रही भीषण आग पर रहेगा।

बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ कट्टरपंथी हमलों को राजनीतिक बताकर यूनुस सरकार ने पल्ला झाड़ा

प्रात: किरण/एजेंसी

ढाका। बांग्लादेश में लगातार हिंसा और कट्टरपंथी बर्बरता का सामना कर रहे हिंदू सहित दूसरे अल्पसंख्यक समुदाय को लेकर मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली बांग्लादेश की अंतरिम सरकार का पूर्वाग्रह भरा रवैया सामने आया है। ऐसे हमलों को रोकने में अपनी विफलता पर पर्दा डालते हुए बांग्लादेश सरकार ने अल्पसंख्यकों के खिलाफ हुए ज्यादातर हमलों को राजनीतिक करार दिया है। सरकार का कहना है कि हिंसा की कुछेक घटनाएं ही सांप्रदायिक थीं।

05 अगस्त को शेख हसीना सरकार के पतन के बाद से लगातार हिंदू आबादी के खिलाफ कट्टरपंथियों की हिंसक मुहिम को लेकर दुनिया भर में आलोचना का सामना कर रही बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने दावा किया है कि हिंसा की कुछ घटनाएं ही सांप्रदायिक थीं, जबकि ज्यादातर मामले राजनीतिक थे।बांग्लादेश ट्रिब्यून के मुताबिक शनिवार को बांग्लादेश सरकार ने पुलिस जांच रिपोर्ट का हवाला देते हुए दावा किया कि 4 अगस्त के बाद से हिंदुओं समेत अल्पसंख्यकों पर हमले और बर्बरता की अधिकांश घटनाएं राजनीतिक थी और कुछ ही घटनाएं सांप्रदायिक थीं।पुलिस ने सांप्रदायिक हिंसा की शिकायतें सीधे प्राप्त करने और अल्पसंख्यक समुदाय के साथ संपर्क बनाए रखने के लिए व्हाट्सएप नंबर जारी किया

है। अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद यूनुस की प्रेस विंग की तरफ से जारी बयान में बताया गया है कि पुलिस ने यह जांच बांग्लादेश हिंदू बौद्ध ईसाई एकता परिषद के इस दावे के बाद की कि अपदस्थ प्रधानमंत्री शेख हसीना के 5 अगस्त को देश छोड़कर चले जाने से इस साल 8 जनवरी तक सांप्रदायिक हिंसा की 2,010 घटनाएं दर्ज की जा चुकी हैं। इन घटनाओं में से 1,769 हमले और तोड़फोड़ से जुड़ी हुई थीं। पुलिस ने दावों के आधार पर अब तक कुल 62 मामले दर्ज किए और 35 आरोपितों को गिरफ्तार किया। बयान में दावा किया गया है कि जांच में पाया गया कि ज्यादातर मामलों में हमले सांप्रदायिक प्रकृति के नहीं थे बल्कि राजनीति से प्रेरित थे। पुलिस की जांच से पता चला कि 1,234 घटनाएं ह्यराजनीतिक प्रकृति की थींह्न, 20 घटनाएं सांप्रदायिक थीं और कम से कम 161 दावे झूठे या फर्जी थे।

उल्लेखनीय है कि शेख हसीना सरकार के पतन के बाद बांग्लादेश में हिंदुओं सहित अल्पसंख्यक समुदाय के इलाकों, धार्मिक स्थलों पर लगातार हिंसक हमले होते रहे हैं और इन हमलों में कई लोगों को जान भी गई है। खास तौर पर हिंदू आबादी को कट्टरपंथियों ने निशाना बनाया और कई मंदिरों को नुकसान पहुंचाया गया। ढाका में इस्कॉन मंदिर के पुजारी चिन्मय कृष्ण दास को भी इस दौरान गिरफ्तार किया गया जिनकी रिहाई को लेकर स्थिति साफ नहीं है। ऐसे में पुलिस रिपोर्ट के आधार पर सरकार के ताजा दावे, अंतरराष्ट्रीय आलोचनाओं से बचने के लिए नये पैंतरे के रूप में देखे जा रहे हैं।

अमेरिका आग: मरने वालों की संख्या बढ़कर 16 हुई

प्रात: किरण/एजेंसी

लॉस एंजिलिस। अमेरिका के लॉस एंजिलिस शहर के चिकित्सा परीक्षक कार्यालय ने जंगलों में लगी भीषण आग में मरने वालों की संख्या बढ़कर 16 होने की पुष्टि की है। कार्यालय ने शनिवार शाम को एक बयान में कहा कि कुल 16 लोगों की मौत हो चुकी है, जिनमें से पांच की मौत पैलिसेड्स जबकि 11 की मौत ईटॉन इलाके में हुई। इससे पहले 11 लोगों की मौत होने की पुष्टि की गई थी, लेकिन अधिकारियों ने कहा था कि मृतकों की संख्या बढ़ सकती है। अधिकारियों ने एक केंद्र स्थापित किया है, जहां लोग गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करा सकते हैं। इस बीच, दमकल कर्मियों ने फिर से तेज हवाएं चलने की आशंका को देखते हुए आग को काबू करने के प्रयास और तेज कर दिये हैं। दमकल कर्मी प्रयास कर रहे हैं कि आग विश्व प्रसिद्ध जे. पॉल गेटी संग्रहालय और कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय तक न फैले। मैन्डेविल कैनयन में आग बुझाने के लिए पुरजोर प्रयास किए जा रहे हैं। पैसिफिक कोस्ट के निकट स्थित मैन्डेविल कैनयन में प्रसिद्ध अभिनेता अर्नोल्ड श्वार्जनेगर समेत कई हस्तियों के घर हैं।

कैलफायर ऑपरेशन्स के प्रमुख क्रिश्चियन लिट्ज ने एक ब्रीफिंग में कहा कि आग बुझाने के अभियान के दौरान विशेष ध्यान कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के निकट घाटी क्षेत्र पैलिसेड्स में लगी भीषण आग पर रहेगा। फिलहाल आग प्रभावित इलाकों में हल्की हवाएं चल रही हैं, लेकिन राष्ट्रीय मौसम सेवा ने चेतावनी दी कि अग्निशामकों के लिए मुश्किलें खड़ी करने वालीं तेज सेंटा ऐना हवाएं जल्द ही लौट सकती हैं। बताया जा रहा है कि इन हवाओं के कारण आग तेजी से फैल रही है, जिसने लॉस एंजिलिस तथा आसपास के पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में लेकर नष्ट कर दिया है। लॉस एंजिलिस में आठ महीनों से अधिक समय से कोई खास बारिश नहीं हुई है। आग के कारण अंतरराज्यीय राजमार्ग 405 पर भी खतरा मंडरा रहा है जो इस क्षेत्र से होकर गुजरने वाला मुख्य यातायात मार्ग है। लॉस एंजिलिस काउंटी के शेरिफ रॉबर्ट लूना ने बताया कि विनाश को रोकने का काम शनिवार को भी जारी रहा और टीमें शवों को खोजने वाले कुत्तों की मदद से खोजी अभियान चला रही हैं। लूना ने बताया कि पासाडेना में एक परिवार सहायता केंद्र भी स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने निवासियों से कर्फ्यू का पालन करने का आग्रह किया। आग ने करीब 145 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को अपनी चपेट में ले लिया है।

हजारों लोगों को अब भी आग प्रभावित इलाकों को खाली करने के आदेश दिए गए हैं। शहर के उत्तर में घनी आबादी वाले 40 किलोमीटर के क्षेत्र में लगी आग ने 12,000 से ज्यादा इमारतों को जलाकर राख कर दिया है, जिसमें घर, अपार्टमेंट इमारतें, व्यवसायिक इमारतें आदि शामिल हैं। हालांकि अब तक आग लगने का मुख्य कारण नहीं पता चल पाया है। आग अब भी जल रही है और शुरुआती अनुमानों के अनुसार यह संपत्ति के नुकसान के लिहाज से सबसे बड़ी आग है। एक्यूवेदर के प्रारंभिक अनुमान के अनुसार अब तक 135 अरब अमेरिकी डॉलर से लेकर 150 अरब अमेरिकी डॉलर के बीच नुकसान हो चुका है। अल्टाडेना के निवासी जोस लुइस गोडिनेज ने बताया कि उनके परिवार के 10 से ज्यादा सदस्यों के तीन घर नष्ट हो गए। उन्होंने कहा, सब कुछ खत्म हो गया है। मेरा पूरा परिवार उन तीन घरों में रहता था और अब हमारे पास कुछ भी नहीं है। जले हुए घरों में लौट रहे लोगों को अधिकारियों ने आगाह किया है। कुछ निवासी मलबे से अपनी यादगार चीजें ढूंढने के लिए वापस आ रहे हैं। शनिवार को अधिकारियों ने उन्हें चेतावनी देते हुए कहा कि राख में सीसा, आर्सेनिक, एस्बेस्टस और अन्य हानिकारक पदार्थ हो सकते हैं। थॉमस ने कहा कि क्षतिग्रस्त संपत्तियों के मूल्यांकन के बाद निवासियों को सुरक्षात्मक उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए लौटने की अनुमति दी जाएगी।

पाकिस्तान के करक में सड़क दुर्घटना में 12 लोगों की मौत

प्रात: किरण/एजेंसी

करक (पाकिस्तान)। पाकिस्तान में करक के अंबीरी चौक पर शनिवार को एक भयानक सड़क दुर्घटना में कम से कम 12 लोगों की मौत हो गई और 25 अन्य घायल हो गए। मीडिया रिपोर्टों में यह जानकारी दी गयी है। करक के उपायुक्त शकील जान मारवत ने रिपोर्ट की पुष्टि करते हुए कहा कि दुर्घटना ट्रेलर के ब्रेक फेल होने के कारण हुई। इस कारण ट्रेलर सिंधु राजमार्ग पर एक यात्री कोच और कई अन्य वाहनों से टकरा गया। उन्होंने बताया कि आपातकालीन प्रतिक्रियाकताओं ने घायलों को नजदीकी अस्पतालों में पहुंचाया जहां उनका इलाज चल रहा है। जियो न्यूज की एक रिपोर्ट के अनुसार खैबर पख्तूनख्वा के गवर्नर फैसल करीम कुंडी ने घटना का संज्ञान लिया है और इसका विवरण मांगा है। उन्होंने स्वास्थ्य विभाग को घायलों को तत्काल चिकित्सा सहायता प्रदान करने का निर्देश दिया और हिलाल-ए-अहमर टीमों को अंबीरी चौक पर राहत गतिविधियां चलाने का निर्देश दिया। इसके अतिरिक्त उन्होंने पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी (पीपीपी) कार्यकताओं से राहत गतिविधियों में सहायता करने और पीड़ितों की सहायता के लिए रक्त दान करने का आग्रह किया। पीपीपी सीनेटर शेरी रहमान ने जानमाल के नुकसान पर दुख व्यक्त किया और स्थानीय सरकार के साथ-साथ जिला प्रशासन से पीड़ितों के लिए सर्वोत्तम संभव राहत सुविधाओं का प्रावधान सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

भारत की बढ़ती अर्थव्यवस्था में सिंगापुर को दिख रहे हैं अवसर: ली सीन लूंग

प्रात: किरण/एजेंसी

सिंगापुर। सिंगापुर के वरिष्ठ मंत्री ली सीन लूंग ने कहा है कि भारत आगे बढ़ रहा है और सिंगापुर को दक्षिण एशिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था वाले इस देश के साथ द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने के कई अवसर दिखाई दे रहे हैं। ली ने शनिवार को भारतीय व्यापारिक समुदाय को संबोधित करते हुए यह बात कही। बीस वर्षों तक देश के प्रधानमंत्री रहे ली ने कहा, भारत आगे बढ़ रहा है। सिंगापुर की भारत में छवि अच्छी है और भारत की विभिन्न सरकारों के साथ हमारे बहुत अच्छे संबंध रहे हैं। स्ट्रेट्स टाइम्स ने अपनी एक खबर में ली के हवाले से कहा कि सिंगापुर और भारत के बीच द्विपक्षीय व्यापार, कौशल प्रशिक्षण और फिनटेक जैसे क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के कई अवसर हैं और साथ ही स्वास्थ्य, डिजिटल समेत कई क्षेत्रों में भी सहयोग के अवसर तलाशे जा सकते हैं। उन्होंने भारतीय व्यापार समुदाय से इन अवसरों का अधिक से अधिक लाभ उठाने का आग्रह किया। ली ने लगभग दो दशक पुराने सिंगापुर-भारत मुक्त व्यापार समझौते व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (सीईसीए) के महत्व का भी उल्लेख किया, जिसने दोनों देशों के बीच व्यापक व्यापार, निवेश और यात्रा संबंधों को बढ़ावा देने में मदद की है। उन्होंने यह भी कहा कि सिंगापुर अपनी जनसंख्या और प्रतिभा को बढ़ाने के लिए प्रवासियों और विदेशी कर्मियों पर बहुत अधिक निर्भर है। दरअसल स्थानीय लोगों ने प्रवासी और विदेशी कामगारों के साथ-साथ निवेशकों और पेशेवरों की बढ़ती संख्या का मुद्दा उठाया है। जिनमें भारत से आए लोग भी शामिल हैं। हालांकि इन नए आने वालों को समृद्धि लाने तथा आर्थिक गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। सिंगापुर भारतीय विकास संघ और 14 अन्य भारतीय सामुदायिक संगठनों द्वारा आयोजित रात्रिभोज में अपने भाषण में ली ने कहा, लेकिन हमें स्वदेशीवाद और विदेशियों के प्रति द्वेष के खिलाफ भी दृढ़ता से खड़ा होना चाहिए, तथा हमारे विस्तारित परिवार का हिस्सा बनने के लिए नव आगंतुकों का स्वागत करना चाहिए।

लॉस एंजिल्स जंगल की आग से मरने वालों की संख्या बढ़कर 13 हुयी

लॉस एंजिल्स। कैलिफोर्निया के जंगल की आग से मरने वालों की संख्या बढ़कर 13 हो गई है। एनबीसी न्यूज ने सरकारी आंकड़ों का हवाला देते हुए यह जानकारी दी। इससे पहले मरने वालों की संख्या बढ़कर 11 हो गई थी। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाईडेन ने कहा कि लॉस एंजिल्स की आग से मरने वालों की संख्या बढ़ने की संभावना है क्योंकि कई लोग लापता हैं। कैलिफोर्निया में मंगलवार से कई बार जंगल की आग लगी है, जिसके कारण हजारों लोगों को पलायन करना पड़ा है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक आग तेजी से फैलने का कारण शुष्क और बहुत तेज हवा वाला मौसम था। आग से क्षेत्र की 10 हजार से अधिक इमारतें नष्ट हो गयी है। कैलिफोर्निया के गवर्नर गेविन न्यूसोम ने शुक्रवार तड़के कहा कि कैलिफोर्निया नेशनल गार्ड निकासी क्षेत्र में लूटपाट को रोकने के लिए लॉस एंजिल्स पहुंचे गये है।

एचएमपीवी वायरस फेफड़ों के लिए हो सकता है घातक

प्रात: किरण/एजेंसी

जिनेवा। चीन में फैल रहा ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस (एचएमपीवी) फेफड़ों के लिए अधिक घातक हो सकता है, और सवाल यह उठ रहा है कि क्या एचएमपीवी का संक्रमण दिल की सेहत के लिए भी खतरनाक हो सकता है। विशेषज्ञों के अनुसार, एचएमपीवी एक रेस्पिरेटरी वायरस है, जो बच्चों और कमजोर इम्यूनिटी वाले लोगों को ज्यादा प्रभावित करता है। इस वायरस से फेफड़े प्रभावित होते हैं, जिससे सांस लेने में परेशानी होती है। कार्डियोलॉजिस्ट का कहना है कि यह वायरस दिल की सेहत पर भी नकारात्मक असर डाल सकता है। इससे हार्ट पर सूजन आ सकती है और दिल की विफलता (हार्टफेलियर) की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, विशेष रूप से उन मरीजों के लिए जो पहले से किसी दिल की बीमारी से जूझ रहे हैं। अगर एचएमपीवी का संक्रमण अधिक फैलता है, तो यह हार्ट फेलियर जैसी गंभीर स्थिति को जन्म दे सकता है, क्योंकि फेफड़े शरीर के अन्य अंगों तक ऑक्सीजन पहुंचाने का काम करते हैं, और जब फेफड़े प्रभावित होते हैं, तो यह शरीर के सभी अंगों को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, विशेषज्ञ यह भी मानते हैं कि एचएमपीवी और कोविड-19 के लक्षण कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं, लेकिन एचएमपीवी को कोविड जितना घातक नहीं माना जा रहा है। फिर भी, इसके संक्रमण से बचाव की जरूरत है, खासकर उन लोगों को जो पहले से हार्ट डिजीज या अन्य गंभीर बीमारियों से जूझ रहे हैं। स्वास्थ्य विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि इन लोगों को मास्क पहनने, हाथ धोने, और भीड़-भाड़ से बचने की सलाह दी जाती है।

ट्रंप ने दिया ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने का प्रस्ताव, कितना ताकतवर है ये देश

प्रात: किरण/एजेंसी

वॉशिंगटन। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने हाल ही में ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने का प्रस्ताव दिया है, उन्होंने इसके के लिए आर्थिक दबाव और सैन्य बल के इस्तेमाल की धमकी भी दी है। ट्रंप के बयान ने ग्रीनलैंड के भविष्य को लेकर सवाल खड़े कर दिए हैं, खासकर क्योंकि ग्रीनलैंड डेनमार्क का एक स्वायत्त क्षेत्र है और इसकी स्वतंत्रता नहीं है। विश्लेषकों का मानना है कि यदि ट्रंप ग्रीनलैंड पर कब्जा करने के लिए सेना का इस्तेमाल करने का आदेश देते हैं, तब अमेरिकी सैन्य ताकत के कारण यह संघर्ष बहुत जल्दी समाप्त हो सकता है। जानकार का कहना है कि अमेरिकी सेना की ताकत को देखकर, अगर युद्ध हुआ तब यह केवल 24 घंटे में समाप्त होगा।

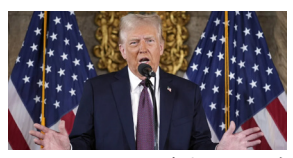

जानकार का कहना है कि ट्रंप अपने किसी भी विवादास्पद विचार को लागू करने में सक्षम हैं, और ग्रीनलैंड पर हमले की धमकी को हल्के में नहीं लिया जाना चाहिए। दरअसल ग्रीनलैंड एक महत्वपूर्ण रणनीतिक क्षेत्र है, जो प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर है और प्रमुख आर्कटिक व्यापार मार्गों के बीच मौजूद है। हालांकि यह डेनमार्क का स्वायत्त क्षेत्र है, ग्रीनलैंड के नागरिक डेनिश नागरिकता रखते हैं। ग्रीनलैंड की जनसंख्या केवल 57,000 है और इसके पास अपनी रक्षात्मक क्षमता नहीं है। इसकी सुरक्षा का जिम्मा डेनमार्क के पास है, लेकिन डेनमार्क की सैन्य क्षमता अमेरिका के मुकाबले कुछ भी नहीं है। डेनमार्क का रक्षा बजट 6 अरब पाउंड है, जो अमेरिकी रक्षा बजट से 100 गुना कम है। डेनमार्क की सेना में केवल 17,000 सक्रिय सैनिक हैं, और ग्रीनलैंड की सुरक्षा के लिए तैनात डेनिश तटरक्षक बल में सीमित संसाधन हैं। इसके अलावा, ग्रीनलैंड में अमेरिकी सैन्य अड्डा भी स्थित है, जहां नियमित रूप से अमेरिकी सैनिक तैनात रहते हैं। इसके बाद यदि अमेरिका ने ग्रीनलैंड पर हमला किया, तब डेनमार्क की सबसे बड़ी उम्मीद नाटो से मदद मिलने की होगी। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर ट्रंप ग्रीनलैंड को अमेरिका में शामिल करने के लिए सैन्य बल का इस्तेमाल करने का निर्णय लेते हैं, तब यह एक छोटे युद्ध के रूप में हो सकता है, जो संभवतः एक दिन के भीतर समाप्त हो जाएगा।

विदेश नीति सीरिया में बशर-अल-असद के शासन को बनाए रखने और लेबनान में हिजबुल्लाह का समर्थन करने के बावजूद ये प्रयास विफल साबित हुए।

संकट: मुस्लिम देशों का नेता बनने के चक्कर में ईरान की डगमगा गई विदेश नीति

प्रात: किरण/एजेंसी

तेहरान। ईरान की महत्वाकांक्षी विदेश नीति और मुस्लिम मुल्कों के नेता बनने के प्रयास ने देश को आर्थिक और सामाजिक संकट में धकेल दिया है। अरबों डॉलर सीरिया, लेबनान और गाजा जैसे क्षेत्रों में खर्च करने के बावजूद ईरान को कोई ठोस लाभ नहीं मिला। इसके चलते ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामनेई को घरेलू स्तर पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है।

जेरूशलम पोस्ट और इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने 2000 से लेकर अब तक सीरिया और लेबनान में लगभग 50 बिलियन डॉलर (43 खरब रुपये से अधिक) खर्च किए। सीरिया में बशर-अल-असद के शासन को बनाए रखने और लेबनान में हिजबुल्लाह का समर्थन करने के बावजूद ये प्रयास विफल साबित हुए। गाजा में पहले से ही ईरान के रणनीतिक प्रयास ध्वस्त हो चुके हैं। एक ईरानी जनरल ने हाल ही में स्वीकार किया कि ईरान इजरायल के खिलाफ न तो जवाबी कार्रवाई कर सकता है और न ही किसी नए ऑपरेशन को अंजाम देने की स्थिति में है। यह स्वीकारोक्ति जनता

के गुस्से को और भड़का रही है। ईरान की यह स्थिति उसकी महत्वाकांक्षी परंतु अप्रभावी विदेश नीति का परिणाम है, जिसने देश को आर्थिक और सामाजिक संकट में डाल दिया है। जनता की बढ़ती नाराजगी और सरकार पर बढ़ते दबाव ने देश के भविष्य को अनिश्चितता में डाल दिया है।

देश में संसाधनों की भारी कमी: वैज्ञानिक बेनी सबती का कहना है कि इस आर्थिक बबार्दी ने ईरानी जनता का आक्रोश बढ़ा दिया है। देश में संसाधनों की भारी कमी है। राजधानी तेहरान में रोजाना छह घंटे तक बिजली कटौती होती है, और देश भर में महंगाई चरम पर है। पानी की कमी, बेरोजगारी, और बढ़ते प्रदूषण ने हालात को और खराब कर दिया है। बेरोजगारी दर 23 प्रतिशत से बढ़कर 35 प्रतिशत हो चुकी है। देश की बिगड़ती स्थिति के लिए जनता सरकार को जिम्मेदार ठहरा रही है। सबती के अनुसार, ईरान में जनता का गुस्सा सरकार के खिलाफ बगावत के स्तर तक पहुंच चुका है। आर्थिक संकट और विदेशी नीति की विफलता के बीच जनता अब अमेरिका के नए राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से उम्मीद कर रही है कि उनके आने से ईरान की स्थिति में कुछ सुधार हो सकता है।

अरबों डॉलर सीरिया, लेबनान और गाजा जैसे क्षेत्रों में खर्च करने के बावजूद ईरान को कोई ठोस लाभ नहीं मिला। इसके चलते ईरान के सर्वोच्च नेता अयातुल्लाह अली खामनेई को घरेलू स्तर पर तीखी आलोचना का सामना करना पड़ रहा है। जेरूशलम पोस्ट और इंस्टीट्यूट फॉर नेशनल सिक्योरिटी स्टडीज की रिपोर्ट के अनुसार, ईरान ने 2000 से लेकर अब तक सीरिया और लेबनान में लगभग 50 बिलियन डॉलर (43 खरब रुपये से अधिक) खर्च किए।

मुद्रक तथा प्रकाशक रंजीत राय द्वारा स्वामी आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड, प्लॉट नं. सी-16 एवं 17, रोड नं. 9, पाटलिपुत्रा इंडस्ट्रीयल एरिया, पटना-800013 के पक्ष में आर.डी. प्रिंटर एंड पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड प्रेस से मुद्रित एवं सी-20, एस.के. पुरी, नियर बसावन पार्क, पटना, बिहार-800013 से प्रकाशित संपादक- देवन प्रसाद

(नोट: प्रकाशित सभी लेखों आदि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं और किसी भी कानूनी वाद-विवाद का निपटारा पटना न्यायालय में ही किया जाएगा।) RNI. No. BIHHIN/2013/49676, Email: news@pratahkiran.com, patna@pratahkiran.com, 9212228045, 8130691216, 9971557129